अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और क़ुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

भाग एक

महान प्रमाण

पुस्तक का हृदय: आकाशों में, धरती में, मनुष्य के शरीर में और इतिहास के अभिलेख में बिखरी निशानियाँ, एक ही भाग में इकट्ठी और **सबसे प्रबल प्रमाण से लेकर सबसे हलके तक क्रम में रखी हुई**। जो आप सबसे पहले पढ़ेंगे वही वह है जिससे बच निकलने का कोई रास्ता नहीं; और ज्यों-ज्यों आप भाग में आगे बढ़ेंगे, प्रमाण का भार कुछ हलका होता जाएगा।

75 प्रमाण

भ्रूणविज्ञान

1 सात चरण — और क्रम में रत्ती भर का अन्तर नहीं

> फिर हमने उस बूँद को अलक़ा बनाया, फिर अलक़ा को मुज़ग़ा बनाया, फिर मुज़ग़ा से हड्डियाँ बनाईं, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया।
>
> **सूरह अल-मोमिनून — आयत 14**

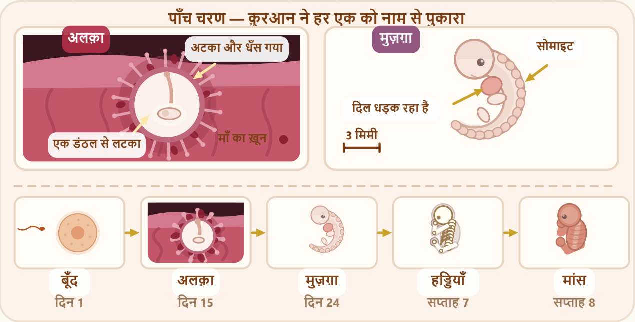

कार्नेगी चरणों और असली भ्रूण की तस्वीरों से बनाया गया — वही अनुपात, वही पैमाना। चरण नाम से और क्रम से, ठीक वैसे ही जैसे आज की चिकित्सा पाठ्यपुस्तकें देती हैं

सीधी-सादी बात में

पाँच चरण, जिन्हें क़ुरआन ने चौदह सदी पहले एक-एक कर नाम से पुकारा: पानी की एक बूँद, फिर **अलक़ा** — एक चीज़ जो गर्भाशय की दीवार में धँस जाती है और फिर उसमें डाली पर लगे फल की तरह लटकी रहती है — फिर **मुज़ग़ा**, एक छोटा-सा टुकड़ा जिस पर गड्ढे पड़े हों **मानो दाँतों ने उसे चबाया हो**, फिर हड्डियाँ जो रखी जाती हैं, फिर मांस जो हड्डियों पर कपड़े की तरह चढ़ता है। ऊपर का चित्र **स्वयं भ्रूणों की तस्वीरों से उतारा गया है** — अपनी आँखों से देखिए, फिर लौटकर आयत दोबारा पढ़िए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

गर्भाशय के भीतर क्या होता है, इसका किसी को पता न था। प्रचलित मत — अरस्तू का, और उसके बाद सबका — यह था कि भ्रूण **जमे हुए माहवारी के ख़ून** से बनता है। एक दूसरा मत जालीनूस (गैलन) का था: हड्डी और मांस **एक ही समय, साथ-साथ** बनते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अलक़ा — लगभग पहले दो सप्ताह: तीन प्रमाणित बातें एक साथ घटती हैं: भ्रूण-पुटिका **गर्भाशय की दीवार में अटकती और उसमें धँसती** है, यहाँ तक कि ऊतक में पूरी तरह गड़ जाती है; फिर वह **अपनी थैली के भीतर एक जोड़ने वाले डंठल से लटकी** रहती है — यही आप ऊपर के चित्र में देख रहे हैं; और उसके चारों ओर **ख़ाली जगहें खुल जाती हैं जो माँ के ख़ून से भर जाती हैं**, तो वह ख़ून से घिर जाती है।

मुज़ग़ा — लगभग चौथा सप्ताह: भ्रूण की पीठ पर **सोमाइट** कहलाने वाले खंड उभरते हैं, एक के बाद एक जुड़ते जाते हैं जब तक चालीस जोड़ों के क़रीब न पहुँच जाएँ, और उनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं, जिससे उसकी सतह गड्ढों भरी दिखती है — और वह उस समय केवल तीन मिलीमीटर का होता है, बिना आवर्धन के दिखाई ही नहीं देता।

फिर हड्डियाँ, फिर मांस: कंकाल पहले उपास्थि के नमूनों के रूप में रखा जाता है, और उसके बाद माँसपेशियाँ उस पर लिपटती हैं और अपना आकार उसी से लेती हैं — यानी जो पहले से खड़ा है उसी पर कपड़ा पहनाना, ठीक वैसे ही जैसे उसने कहा।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इन दो शब्दों पर ठहरिए। इन्हें यूँ ही हलके से मत गुज़र जाने दीजिए। **केवल दो शब्द** — "अलक़ा" और "मुज़ग़ा" — ने वह वर्णन कर दिया जिस पर उसके बाद चौदह सदियों तक किसी मनुष्य की आँख नहीं पड़ी, और जो सूक्ष्मदर्शी और कैमरे के बिना देखा ही नहीं जा सकता था।

पहला: "अलक़ा"। मुझसे मत लीजिए — शब्दकोशों से लीजिए। अल-जौहरी, जिनका देहान्त **एक हज़ार वर्ष** पहले हुआ, "अस-सिहाह" में लिखते हैं: "**और अलक़ा पानी का वह कीड़ा है जो ख़ून चूसता है**।" ठीक यही शब्द "लिसानुल-अरब" में भी खड़े हैं। और शब्द की जड़ स्वयं **अटकने और चिपकने** के, तथा **लटकने और झूलने** के अर्थ पर घूमती है।

अब निगाह उठाकर इस पृष्ठ के सिरे पर बने चित्र को देखिए। आपको क्या दिखता है? आपको वह चीज़ दिखती है जो गर्भाशय की दीवार में **अटक** गई है और इतनी धँस गई है कि उसके मांस में दब चुकी है; फिर अपनी थैली के भीतर एक डंठल से **लटकी** हुई है, जैसे फल डाली से लटकता है; और **माँ का ख़ून हर ओर से उसे घेरे** हुए है। एक ही नाम, और तीनों निशाने पर। **यह किसने बताया उन्हें?**

दूसरा: "मुज़ग़ा"। यह **चबाने** से निकला है। ख़ालिद बिन जंबा का कथन "लिसानुल-अरब" में है: "**मांस का मुज़ग़ा वह टुकड़ा है जितना आदमी अपने मुँह में रखता है**" — यानी एक कौर, चबाने के लिए। फिर चौदह सदी बाद सूक्ष्मदर्शी आता है और चौथे सप्ताह के भ्रूण की तस्वीर लेता है, और मानक विश्वविद्यालयी पाठ्यपुस्तक "द डेवलपिंग ह्यूमन" कहती है कि ये खंड उसकी पीठ पर **बाहर से मनकों जैसे उभारों के रूप में दिखाई देते हैं**, और उनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं। चित्र देखिए: मानो उसे दो जबड़ों के बीच दबा दिया गया हो! और याद रखिए वह **तीन मिलीमीटर** लम्बा है — कोई आँख उसे देख नहीं सकती, और उस आवर्धन के बिना उसका आकार जाना ही नहीं जा सकता जो उस समय मौजूद नहीं था।

और तीसरा: पहले हड्डियाँ, फिर मांस। कौन-सा मनुष्य किसी नरम लोथड़े को देखकर यह कहेगा कि हड्डी पहले बनती है?! बुद्धि तो इसका उलटा कहती है। पर विज्ञान कहता है: कंकाल पहले रखा जाता है, और माँसपेशियाँ फिर उस पर लिपटकर अपना आकार उसी से लेती हैं। और यही तो उसका कथन है: **"फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया"** — और कपड़ा सदा उसी पर पहनाया जाता है जो पहले से वहाँ खड़ा हो!

एक ही आयत में चार क्रमिक शब्द। **चार चोटें, एक के बाद एक।** इनमें से कोई एक भी ग़लत होती तो अकेले वही पूरे पाठ को गिरा देने के लिए काफ़ी थी — और इनमें से एक भी ग़लत न निकली। रेगिस्तान का एक निरक्षर व्यक्ति, जो न पढ़ सकता था न लिख सकता था, उन चरणों के नाम गिनाता है जिन्हें कोई आँख देख नहीं सकती... और हर एक को उसके नाम से ठीक निशाने पर मारता है। **तो यह उन्हें किसने सिखाया?**

गहरा समुद्र

2 अँधेरे, एक के ऊपर एक

या फिर जैसे किसी गहरे समुद्र में अँधेरे हों, जिसे एक लहर ने ढाँप रखा हो, उसके ऊपर एक और लहर हो, उसके ऊपर बादल हो — अँधेरे, एक के ऊपर एक।

सूरह अन-नूर — आयत 40

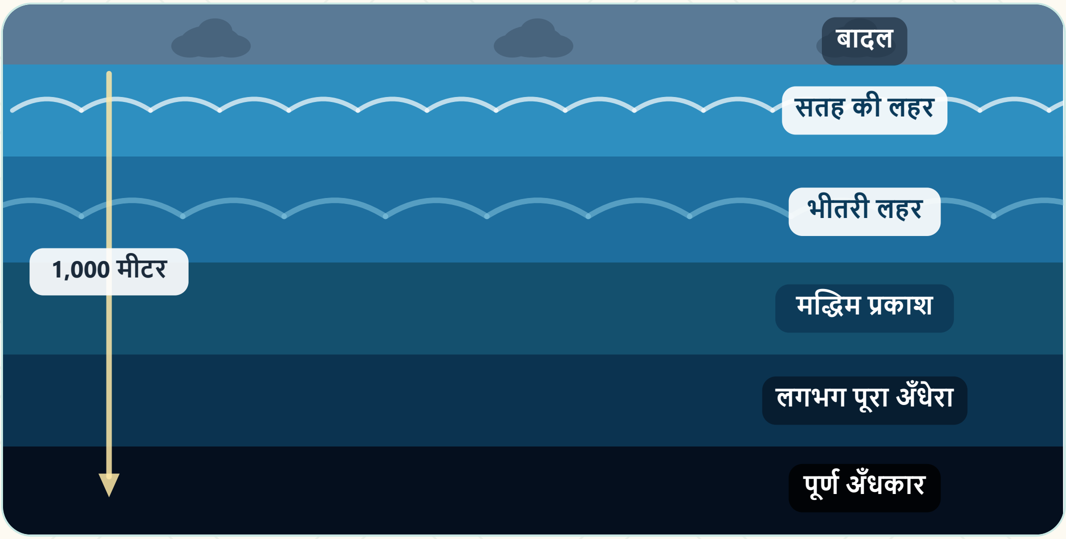

प्रकाश परत दर परत निगला जाता है, यहाँ तक कि एक हज़ार मीटर के नीचे वह बिलकुल लुप्त हो जाता है

सीधी-सादी बात में

समुद्र की गहराइयों में अँधेरे पर अँधेरा है: पहले बादल रोकता है, फिर लहर रोकती है, फिर पानी रंगों को एक-एक करके निगल जाता है, यहाँ तक कि ज़रा-सा भी प्रकाश बाक़ी नहीं रहता।

उस समय लोग क्या मानते थे?

कोई मनुष्य साँस रोककर कुछ मीटर से अधिक गहरा नहीं उतरा था। समुद्र की गहराइयाँ बिलकुल अनजान थीं। किसी को न यह पता था कि वहाँ नीचे का अँधेरा **क्रमबद्ध परतों** में आता है, और न यह कि दिखाई देने वाली लहर के नीचे एक और लहर है जो दिखाई ही नहीं देती।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पानी में प्रकाश चरणों में सोख लिया जाता है: लाल लगभग पन्द्रह मीटर पर ग़ायब होता है, फिर नारंगी, फिर पीला, फिर हरा, और केवल हलका नीला बचता है जब तक वह भी लगभग दो सौ मीटर पर मिट न जाए। एक हज़ार मीटर से नीचे **पूर्ण अँधकार है, एक भी फ़ोटॉन नहीं**। विज्ञान ने **आन्तरिक तरंगें** भी खोजीं, जो भिन्न घनत्व वाली जल-परतों की सीमाओं पर चलती हैं — यानी लहरों के नीचे की लहरें।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत तीन परदों को ऊपर से नीचे सही क्रम में सजाती है: बादल, फिर लहर, फिर **उसके नीचे एक और लहर**। समुद्र की सतह के नीचे दूसरी लहर का होना एक ऐसा तथ्य है जो बीसवीं सदी तक ज्ञात ही नहीं था। फिर वह इस व्यापक वर्णन पर बन्द होती है: "अँधेरे, एक के ऊपर एक" — यानी **परतदार, एक पर एक चढ़ा हुआ अँधेरा**, कोई एक अकेला अँधेरा नहीं। और यही पानी में प्रकाश के सोखे जाने का ठीक-ठीक भौतिक वर्णन है।

मौसम विज्ञान

3 वर्षा बनने के तीन चरण

> क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह बादलों को हाँकता है, फिर उन्हें आपस में जोड़ता है, फिर उन्हें तह-पर-तह ढेर बना देता है, फिर तुम देखते हो कि वर्षा उसके बीच से निकल रही है?
>
> **सूरह अन-नूर — आयत 43**

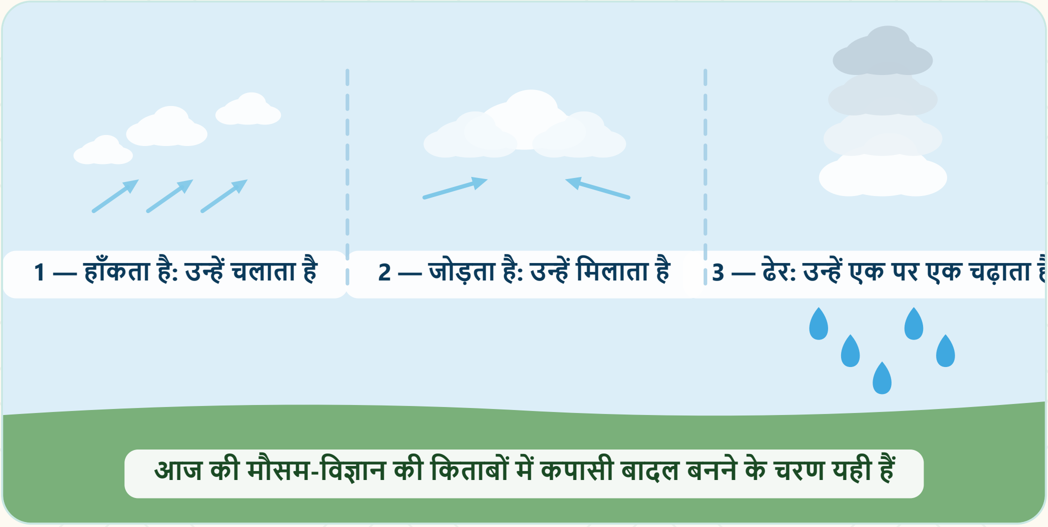

हाँकना, फिर जोड़ना, फिर ऊपर की ओर ढेर लगाना — और तब वर्षा गिरती है

सीधी-सादी बात में

वर्षा यूँ ही नहीं गिर जाती। उसके तीन क़दम हैं, क्रम से: हवा बादल के छोटे टुकड़ों को **हाँकती** है, फिर उन्हें एक-दूसरे से **जोड़ती** है, फिर उन्हें एक-दूसरे के ऊपर पहाड़ की तरह **ढेर** कर देती है — और तभी वर्षा होती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा एक अकेली घटना समझी जाती थी: बादल, फिर पानी। किसी को न यह पता था कि बादलों के बनने के **क्रमबद्ध चरण** होते हैं, और न यह कि बरसने वाला बादल न बरसने वाले से अपनी बनावट में अलग होता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मौसम विज्ञान **कपासी-वर्षा मेघ (क्यूम्युलोनिम्बस)** के बनने के बारे में ठीक यही पढ़ाता है: वायु-धाराएँ छोटी बादल-कोशिकाओं को आपस में हाँक लाती हैं, फिर कोशिकाएँ मिलकर एक हो जाती हैं, फिर वह पिंड परतों में ऊपर की ओर बढ़ता है और पन्द्रह किलोमीटर तक पहुँच सकता है। **केवल इसी चरण पर** बूँदें इतनी बड़ी होती हैं कि गिर सकें।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन क्रमिक क्रियाएँ, और उन्हें जोड़ने वाला वह अव्यय जो अन्तराल के साथ क्रम बताता है: "हाँकता है" (धीरे-धीरे चलाता है) → "जोड़ता है" (टुकड़ों को मिलाता है) → "ढेर बना देता है" (ऊपर की ओर तह पर तह चढ़ाता है)। यह ऐसा क्रम है जिसे **न उलटा जा सकता है न छोटा किया जा सकता है**, और यह ठीक वैज्ञानिक क्रम है। फिर आती है अन्तिम बारीकी: वर्षा **"उसके बीच से"** निकलती है — यानी पिंड के भीतर के छिद्रों और सिलवटों से, उसके नीचे से नहीं। और रडार की तस्वीरें यही दिखाती हैं।

शरीर रचना विज्ञान

4 तीन सौ साठ जोड़ — चीर-फाड़ से पहले गिने हुए

> आदम की सन्तान में से हर मनुष्य तीन सौ साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है।
>
> **मुस्लिम की रिवायत — सहीह**

हर वह जगह जहाँ दो हड्डियाँ मिलती हैं… गिनी हुई और नाम रखी हुई

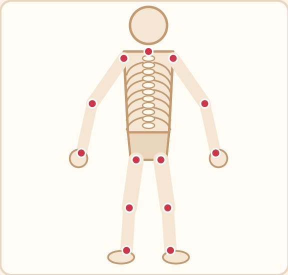

147	रीढ़
24	वक्ष-पिंजर
86	ऊपरी अंग
92	निचले अंग
11	श्रोणि
360 जोड़	

एक सादा संख्या जिसमें व्याख्या की कोई गुंजाइश नहीं — पहली क्रमबद्ध चीर-फाड़ से नौ सदी पहले कही गई

सीधी-सादी बात में

आपके शरीर में **तीन सौ साठ जोड़** हैं — न एक अधिक, न एक कम। नबी ﷺ ने यह चौदह सदी पहले कहा, और इनमें से हर एक के साथ **हर दिन दिया जाने वाला एक सदक़ा** जोड़ दिया। आधुनिक शरीर रचना विज्ञान उन्हें गिनता है और ठीक वैसा ही पाता है जैसा उन्होंने कहा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में न कोई चीर-फाड़ थी, न चिकित्सा का कोई विद्यालय, न कोई छुरी जिससे शरीर खोला जाता। अधिकतर प्राचीन सभ्यताओं में मानव-शव का चीर-फाड़ वर्जित था — यहाँ तक कि **जालीनूस**, जिसने पन्द्रह सौ वर्ष तक चिकित्सा पर राज किया, उसने अपनी शरीर रचना बन्दरों और सूअरों पर खड़ी की, और ऐसी ग़लतियों में पड़ा जो सदियों तक पढ़ाई जाती रहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शरीर के जोड़ एक-एक करके गिने जा चुके हैं — हर वह जगह जहाँ दो हड्डियाँ मिलती हैं, चाहे वह हिले या न हिले — और वे इस प्रकार निकलते हैं: **रीढ़, 147**; **वक्ष-पिंजर, 24**; **ऊपरी अंग, 86**; **निचले अंग, 92**; और **श्रोणि, 11**। कुल: **तीन सौ साठ**।

और स्वयं हदीस के शब्द तय कर देते हैं कि कौन-सी गिनती अभिप्रेत है, क्योंकि पूरी रिवायत में उन्हें **सुलामा** कहा गया है — अरबी में यह शब्द शरीर के हर जोड़ को समेटता है, छोटे और बड़े, हिलने वाले और जमे हुए। तो यह संख्या पाठ पर थोपी गई कोई आधुनिक परिपाटी नहीं है — **बल्कि पाठ ने ही तय किया कि क्या गिनना है**। और मानव इतिहास का पहला सटीक शरीर-रचना मानचित्र 1543 तक नहीं आया, **वेसालियस** के हाथों।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि यह किस प्रकार का कथन है। यह न कोई ऐसा वर्णन है जिसमें व्याख्या की गुंजाइश हो, न कोई उपमा जो अर्थ को साफ़ करने के लिए लाई गई हो — यह एक **संख्या** है। और संख्या या तो निशाने पर बैठती है या गिर जाती है; तीसरी कोई सूरत नहीं।

यदि कहने वाला सुरक्षा चाहता तो कह देता "बहुत से जोड़", या "सैकड़ों जोड़", और उस पर कोई पकड़ न होती। पर उसने कहा: **तीन सौ साठ**। एक निश्चित, गिनी हुई संख्या — उस शरीर के बारे में जो कभी खोला ही नहीं गया था, उस युग में जिसमें न छुरी थी न सूक्ष्मदर्शी।

और सबसे विचित्र बात यह है कि संख्या अपने आप में कहने के लिए नहीं आई। वह एक आदेश के सिलसिले में आई: उन जोड़ों में से हर एक पर **हर एक दिन एक सदक़ा** है — कोई ज़िक्र का शब्द, या रास्ते से किसी कष्टदायक चीज़ को हटाना, या कोई भली बात। तो यह आँकड़ा **हुक्म में भार उठाने वाला है, वाक्य की सजावट नहीं**; यदि वह ग़लत होता तो उस पर खड़ा हुक्म भी उसी के साथ गिर जाता। और कोई व्यक्ति जो धर्म गढ़ रहा हो, वह एक दैनिक इबादत को ऐसी शारीरिक संख्या पर नहीं टाँगता जिसे सदियाँ बाद में झुठला सकती हैं।

कोई कह सकता है: सम्भव है यह चीनी चिकित्सा से आया हो, वहाँ भी मिलती-जुलती संख्या है। यही पहली बात है जिसे टालने के बजाय जाँचना चाहिए — और जाँचने से तर्क तीन कारणों से और मज़बूत होता है:

संख्या स्थिर नहीं है: «ह्वांगदी नेइजिंग» में 365 है, 360 नहीं; और उसके भिन्न अध्यायों में 365, 360 और 354 — तीनों आते हैं। **और जो गिना गया वह भी वही नहीं है:** चीनी «जिए» ऊर्जा-मार्गों पर सुई चुभाने के स्थान हैं, दो हड्डियों के जोड़ नहीं; और स्वयं मूल पाठ कहता है कि वे **वर्ष के दिनों की संख्या के अनुरूप** ठहराए गए — यह ब्रह्माण्डीय संगति है, शरीर की गिनती नहीं; यहाँ तक कि चीनी चिकित्सा के शोधकर्ता स्वयं कहते हैं कि इस संख्या से «पूर्णता» अभिप्रेत है, कोई वास्तविक गणना नहीं। **और रास्ता बन्द था:** चीनी चिकित्सा के इस्लामी जगत् में पहुँचने का सबसे पुराना प्रलेखित प्रमाण रशीदुद्दीन हमदानी की «तंसूक़नामा» है, जो 1313 ई. में पूरी हुई — **हदीस के सात सदी बाद**।

और निर्णायक बात यह रह जाती है: हदीस ने जो गिना जाना है उसे **«सुलामा»** कहा, और यह अरबी शब्द स्वयं ही तय करता है कि क्या गिनना है — यदि यह उधार लिया गया होता तो शब्द भी साथ आता।

एक निरक्षर व्यक्ति जिसने कभी कोई शरीर नहीं खोला, जिसने ज़बह किए हुए जानवर के सिवा कभी नंगी हड्डी नहीं देखी, अपनी क़ौम के हाथ में एक शारीरिक आँकड़ा थमाता है और उस पर एक दैनिक इबादत खड़ी कर देता है… और फिर नौ सदी बाद छुरी आती है, गिनती है, और उसे ठीक वैसा ही पाती है जैसा उसने कहा था। **तो यह उसके लिए किसने गिने?**

5

भ्रूण-विज्ञान

पुच्छास्थि — इसी से मनुष्य बनाया गया

> आदम की सन्तान का सब कुछ मिट्टी खा जाती है, सिवाय पुच्छास्थि के; इसी से वह बनाया गया और इसी से फिर जोड़ा जाएगा।
>
> **अल-बुख़ारी और मुस्लिम ने रिवायत किया — सर्वसम्मत**

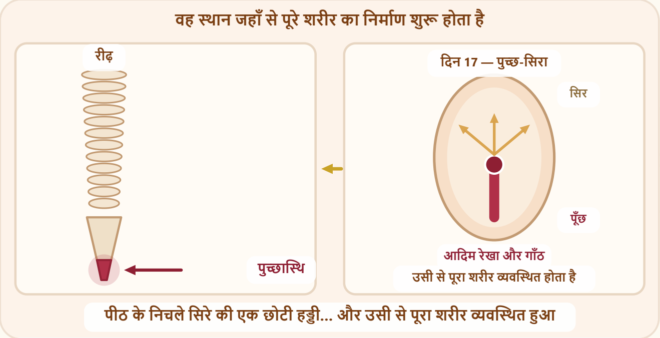

आदिम रेखा भ्रूण के पुच्छ-सिरे पर उभरती है, और उसी से शरीर के सारे अक्ष और तीनों जनन-स्तर बनते हैं

सीधी-सादी बात में

पुच्छास्थि वह **छोटी-सी हड्डी है जो रीढ़ के बिलकुल निचले सिरे पर होती है**। नबी ﷺ ने कहा कि मनुष्य **इसी से बनाया गया**। और आज का भ्रूण-विज्ञान कहता है: पूरे शरीर का निर्माण **भ्रूण के पुच्छ-सिरे पर उभरने वाली एक रेखा** से शुरू होता है, और उसके सिरे पर एक गाँठ होती है जिसे **«संगठक»** कहते हैं — उसी से तीनों जनन-स्तर और शरीर के सारे अक्ष व्यवस्थित होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस समय भ्रूण की पहली अवस्था के बारे में कुछ भी ज्ञात न था; वह दो मिलीमीटर से भी छोटा है और किसी आँख की पकड़ में नहीं आता। रही पुच्छास्थि, तो उसे **बिना किसी काम का बचा-खुचा अंश** समझा जाता था — एक सिकुड़ी हुई पूँछ; यहाँ तक कि उन्नीसवीं सदी के वैज्ञानिकों ने उसे «**अवशेषी अंगों**» की सूची में गिना, जिनका कोई लाभ नहीं। ठीक इसी स्थान को **रचना का मूल** ठहराना स्वयं सहज बुद्धि के विरुद्ध है: बुद्धि सिर से या हृदय से शुरू करती है, पीठ के सबसे निचले सिरे से नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सत्रहवें दिन भ्रूणीय चक्रिका पर एक रेखा उभरती है जिसे **आदिम रेखा** कहते हैं, और उसका स्थान भ्रूण का **पुच्छ-सिरा** है। उसके सिरे पर **आदिम गाँठ** है, जिसे भ्रूण-विज्ञान में **«संगठक»** कहा जाता है: यह दोनों ओर की सममिति स्थापित करती है, गैस्ट्रुलेशन का स्थान निश्चित करती है, तीनों जनन-स्तरों को आरम्भ करती है, और शरीर के अक्ष खींचती है — पूँछ से सिर, और बाएँ से दाहिना।

श्पेमान और मांगोल्ड ने 1924 में सिद्ध किया कि केवल इस गाँठ को दूसरे भ्रूण में प्रत्यारोपित करने से उसमें **एक पूरा दूसरा भ्रूण** बन जाता है — और इसी पर श्पेमान को 1935 में नोबेल मिला।

फिर रेखा सिकुड़ती है और उसका शेष बीसवें दिन **पुच्छ-कलिका** बन जाता है। और एक ज्ञात नैदानिक सम्बन्ध आज भी बचा है: **त्रिकास्थि-अनुत्रिक टेराटोमा** को आदिम रेखा के अवशेषों से जोड़ा जाता है, और उसकी शल्यक्रिया में केवल गाँठ निकालना पर्याप्त नहीं माना जाता — **पुच्छास्थि भी उसके साथ निकाली जाती है**, क्योंकि उसे छोड़ देना ही गाँठ को लौटा लाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अकेले उस परसर्ग को देखिए। यह नहीं कहा गया «उसमें बनाया गया», और न «वह दूसरों से पहले बनाया गया», बल्कि **«इसी से बनाया गया»** — अर्थात् उस स्थान को वह **स्रोत** ठहराया गया जिससे निर्माण निकलता है। और संगठक का वर्णन ठीक यही है: वह पहला बनने वाला अंग नहीं, बल्कि वह स्थान है **जिससे शेष अंग व्यवस्थित होते हैं**।

फिर जो स्थान चुना गया उसे देखिए: पीठ का सबसे निचला सिरा। सातवीं शताब्दी के किसी अवलोकन में ऐसा कुछ नहीं जो उसे रचना का मूल कहने की ओर ले जाए; सब कुछ ध्यान को उससे हटाता है। और उसे कोई देख भी नहीं सकता था: सत्रहवें दिन का भ्रूण नंगी आँख की पहुँच से कहीं छोटा है।

और यहाँ एक सीमा पर रुकना आवश्यक है। हदीस का दूसरा भाग — **«इसी से फिर जोड़ा जाएगा»** — पुनरुत्थान की सूचना है, और वह अदृश्य का विषय है जहाँ कोई प्रयोग नहीं पहुँचता; हम यहाँ उस पर कुछ भी नहीं खड़ा करते। और जो यह प्रचलित है कि विज्ञान ने «सिद्ध कर दिया कि पुच्छास्थि नष्ट नहीं होती», उसका हमें कोई प्रकाशित और समकक्ष-समीक्षित शोध ज्ञात नहीं — **और जिसका प्रमाण न हो उसे छोड़ देना तर्क के लिए उसे बढ़ाने से अधिक लाभकारी है**। सारा भार पहले भाग में है: शरीर के एक स्थान के बारे में एक छोटा-सा वाक्य, जाँचा जा सकने वाला, सूक्ष्मदर्शी से एक हज़ार वर्ष पहले कहा गया... और वह सही निकला। **तो उसे किसने बताया?**

निवारक चिकित्सा

6 संगरोध — चिकित्सा से एक हज़ार वर्ष पहले

> यदि तुम सुनो कि किसी भूमि में महामारी फैली है तो वहाँ मत जाओ; और यदि वह उस भूमि में फैल जाए जहाँ तुम हो, तो उससे भागकर वहाँ से मत निकलो।
>
> **बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत**

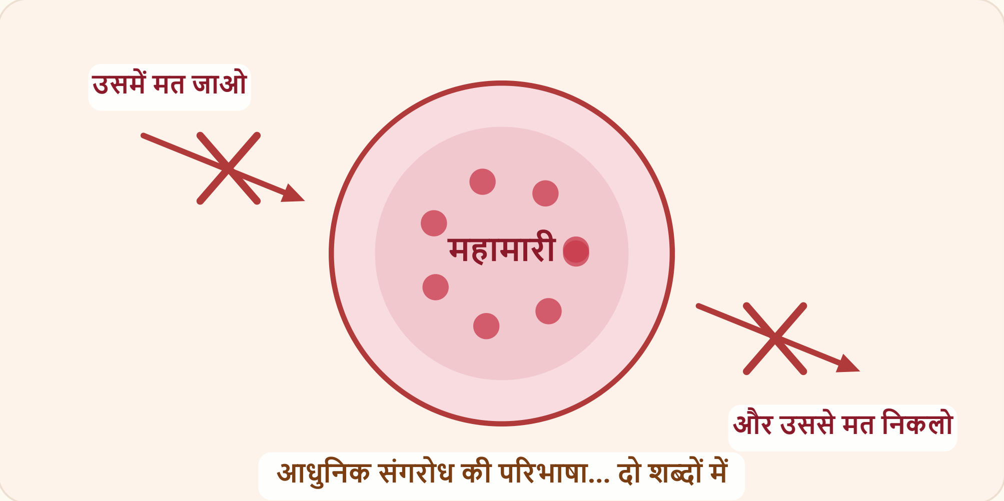

सातवीं सदी में गढ़ा गया एक वैश्विक जन-स्वास्थ्य सिद्धान्त

सीधी-सादी बात में

यदि किसी देश में महामारी फैले तो: बाहर हो तो **उसमें मत जाओ**, और भीतर हो तो **उससे बाहर मत निकलो**। यह ठीक-ठीक **संगरोध** की वही परिभाषा है जिसे समूचे संसार ने कोरोना महामारी में लागू किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

महामारियों को प्रकोप, या दुष्ट आत्माएँ, या बिगड़ी हुई हवा समझा जाता था। जब कोई महामारी पड़ती तो स्वाभाविक प्रतिक्रिया **सामूहिक पलायन** होती — और यही सबसे बुरा काम है, क्योंकि यह संक्रमण को हर जगह पहुँचा देता है। कीटाणुओं का पता ही न था, और न यह पता था कि रोग सम्पर्क से फैलता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कीटाणु सिद्धान्त उन्नीसवीं सदी तक स्थापित नहीं हुआ, पाश्चर और कोख़ के हाथों। यूरोप में पहला संगठित संगरोध 1377 में वेनिस में हुआ — इस कथन के सात सदी बाद। और यहाँ कहा गया सिद्धान्त **दोतरफ़ा संगरोध** है: न प्रवेश, न निकास — ठीक वही जो विश्व स्वास्थ्य संगठन के अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य नियम निर्धारित करते हैं, और जिसे पूरी दुनिया ने 2020 में लागू किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

कथन का दूसरा आधा भाग कहीं अधिक कठिन और कहीं अधिक सूक्ष्म है। महामारी-ग्रस्त भूमि में प्रवेश से रोकना तो अकेली सावधानी भी सुझा सकती है। पर **वहाँ से निकलने से रोकना** स्वयं जीवित रहने की प्रवृत्ति के विरुद्ध जाता है, और तभी अर्थ रखता है जब यह मालूम हो कि निकलने वाला व्यक्ति रोग को **बिना महसूस किए** साथ ले जा सकता है — यानी **मौन संक्रमण-वाहक** की धारणा। यह धारणा बीसवीं सदी तक समझी ही नहीं गई थी। उमर बिन ख़त्ताब ने अमवास की महामारी में इसे व्यवहार में लागू किया और सेना को शाम से लौटा दिया; जब उन पर आपत्ति की गई तो कहा: "हम अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की ही तक़दीर की ओर भाग रहे हैं।"

एक राजनीतिक भविष्यवाणी

7 रोमी हार गए — और वे जीतेंगे

❖ अलिफ़ लाम मीम। रोमी सबसे नीची भूमि में हार गए, और वे अपनी हार के बाद कुछ ही वर्षों में विजयी होंगे। ❖

सूरह अर-रूम — आयतें 1-4

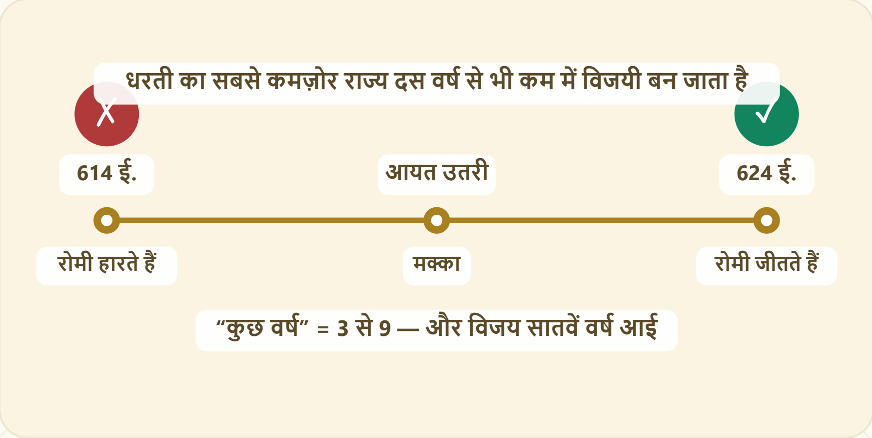

मक्का में उतरी एक ख़बर, उस युद्ध के बारे में जो हज़ारों मील दूर लड़ा जा रहा था

सीधी-सादी बात में

रोमी एक युद्ध इतनी बुरी तरह हारे कि लोगों ने मान लिया कि अब उनका अन्त हो गया। फिर एक आयत उतरी जिसने कहा: **रोमी कुछ ही वर्षों में जीतेंगे**। और यह सात वर्ष बाद हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

614 ईस्वी में फ़ारसियों ने रोमियों को कुचल दिया: शाम, मिस्र और यरूशलम छीन लिए, और पवित्र क्रूस उठा ले गए। रोमी राज्य पूर्ण पतन के कगार पर था — ख़ज़ाना ख़ाली, सेना चूर-चूर, भीतर विद्रोह। धरती पर कोई उसकी वापसी पर दाँव नहीं लगा रहा था। मक्का के मुशरिकों ने अबू बक्र से शर्त लगाई कि यह आयत झूठी है — और उस समय शर्त लगाना अभी वर्जित नहीं हुआ था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

622 में हिरक्ल ने जवाबी अभियान छेड़ा, और **दिसम्बर 627** में उसने मोसुल के पास नैनवा के युद्ध में फ़ारसी सेना को कुचल दिया, फिर ख़ुसरो को गिराया और क्रूस लौटाया। यह बीज़ान्तीनी, फ़ारसी और सुरयानी स्रोतों में, किसी भी इस्लामी स्रोत से स्वतंत्र रूप से दर्ज है। और यह बद्र में मुसलमानों की विजय के साथ जा मिला, जैसा अगली आयत ने कहा था: "और उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह न कोई हिकमत की बात है न कोई वर्णन — यह **एक निश्चित विषय और एक निश्चित समय-सीमा वाली भविष्यवाणी** है, जो उस पक्ष के लिए सबसे बुरे सम्भव क्षण पर जारी हुई जिसके हक़ में थी। अवधि के लिए जो अरबी शब्द आया है वह तीन से नौ वर्ष के बीच बँधा हुआ है — एक बन्द खिड़की, जिसे झुठलाया जा सकता था। यदि दस वर्ष बिना विजय के गुज़र जाते तो पूरा सन्देश अपने विरोधियों के सामने ढह जाता। और इससे भी अधिक बारीक: **"सबसे नीची भूमि में"** — युद्ध मृत सागर के क्षेत्र में हुआ, जो समुद्र तल से 430 मीटर नीचे, **इस ग्रह की सूखी ज़मीन का सबसे निचला बिन्दु** है — एक भौगोलिक तथ्य जिसे उन्नीसवीं सदी तक नापा ही नहीं गया था।

तंत्रिका विज्ञान

8

एक झूठी, पापी पेशानी

> हरगिज़ नहीं! यदि वह बाज़ न आया तो हम अवश्य उसे पेशानी से पकड़कर घसीटेंगे — एक झूठी, पापी पेशानी से।
>
> **सूरह अल-अलक़ — आयतें 15-16**

क्रियात्मक प्रतिबिम्बन दिखाता है कि झूठ बोलने के क्षण पर अग्र-ललाट प्रांतस्था सक्रिय होती है

सीधी-सादी बात में

"पेशानी" सिर का अगला हिस्सा है। क़ुरआन उसे "झूठी और पापी" कहता है — यानी **झूठ और अपराध ठीक इसी जगह से निकलते हैं**। और तंत्रिका विज्ञान ने यही सिद्ध किया है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सिर के किसी विशेष हिस्से और झूठ जैसे किसी नैतिक कार्य के बीच कोई सम्बन्ध ज्ञात न था। दार्शनिक तो बुनियादी बातों पर भी बँटे हुए थे: अरस्तू ने सोच का केन्द्र **हृदय** में रखा, मस्तिष्क में नहीं। मस्तिष्क के क्षेत्रों को कार्यों से जोड़ने का काम उन्नीसवीं सदी से पहले शुरू ही नहीं हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अग्र-ललाट प्रांतस्था — जो ठीक माथे के पीछे है — निर्णय लेने, योजना बनाने और व्यवहार रोकने का केन्द्र है। क्रियात्मक एम॰आर॰आई॰ अध्ययन दिखाते हैं कि **जान-बूझकर बोला गया झूठ विशेष रूप से इसी क्षेत्र को सक्रिय करता है**, क्योंकि उसके लिए सच को दबाना और उसकी जगह कोई विकल्प गढ़ना पड़ता है। इस क्षेत्र को क्षति पहुँचे तो व्यक्ति की अपने आचरण पर शासन करने की क्षमता नष्ट हो जाती है — जैसा 1848 के प्रसिद्ध फ़िनियस गेज के मामले में हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निस्बत की बारीकी पर ध्यान दीजिए। आयत यह नहीं कहती "किसी झूठे और पापी की पेशानी" — यानी उसके मालिक की। वह **स्वयं पेशानी** को झूठी और पापी कहती है, और इस तरह कर्म को व्यक्ति के बजाय अंग से निकलता हुआ दिखाती है। यह कार्य का शारीरिक स्थान-निर्धारण है। और इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात: जिस व्यक्ति को यहाँ सम्बोधित किया गया उसे उसी चीज़ में धमकाया गया जिसे वह सबसे अधिक सम्मानित समझता था — और न उसका दिल चुना गया न उसकी ज़बान, बल्कि उसके सिर का अगला हिस्सा: मस्तिष्क में निर्णय और झूठ का ठिकाना।

9

कीट विज्ञान

काम करने वाली मधुमक्खियाँ सब मादा हैं

❖ और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को प्रेरणा दी: तू पहाड़ों में अपने लिए घर बना ... फिर हर प्रकार के फलों में से खा और अपने रब के बनाए हुए सुगम रास्तों पर चल। ❖

सूरह अन-नहल — आयतें 68-69

हर वह मधुमक्खी जिसे आप रस इकट्ठा करते और मोम बनाते देखते हैं, मादा है

सीधी-सादी बात में

इन आयतों में अल्लाह मधुमक्खी को जो भी आदेश देता है वह सब **स्त्रीलिंग रूप** में है: “बना”, “खा”, “चल”। और विज्ञान कहता है: जो मधुमक्खियाँ बनाती हैं, इकट्ठा करती हैं और शहद बनाती हैं वे **पूरी की पूरी मादा** हैं, उनमें एक भी नर नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पूरे प्राचीन संसार में यही आम धारणा थी कि छत्ते का मुखिया एक **नर राजा** होता है। अरस्तू ने यह स्पष्ट रूप से कहा और उसे राजा कहकर पुकारा, और यूरोप वाले सदियों तक उसके पीछे चलते हुए उसे “राजा मधुमक्खी” कहते रहे। यह 1668 तक सिद्ध नहीं हुआ था कि छत्ते का मुखिया मादा है — यह डच वैज्ञानिक यान स्वामरडम ने सिद्ध किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मधुमक्खियों की एक बस्ती में तीन वर्ग होते हैं: एक **मादा रानी**, हज़ारों **मादा श्रमिक** — और वही मोम बनाती हैं, रस इकट्ठा करती हैं, शहद बनाती हैं, पहरा देती हैं और सफ़ाई करती हैं — और कुछ सौ **नर**, जिनका एकमात्र काम रानी से सम्भोग करना है, जिसके बाद वे मर जाते हैं या निकाल बाहर किए जाते हैं। नर न कभी चारे के लिए निकलता है, न कुछ बनाता है, और शहद बनाने में उसका रत्ती भर भी हाथ नहीं होता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन लगातार क्रियाओं में स्त्रीलिंग रूप का पूरी तरह पालन — और वह भी उस भाषा में जो दोनों लिंग मौजूद होने पर पुल्लिंग की ओर लौटती है — कोई व्याकरणिक संयोग नहीं है। और निर्धारण इससे भी अधिक बारीक हो जाता है: ये तीनों क्रियाएँ ठीक **मादा श्रमिक** के ही काम हैं — घर बनाना, फलों पर चरना, और आने-जाने के रास्ते तय करना। यदि पूरी प्रजाति अभिप्रेत होती तो पुल्लिंग बहुवचन आता। और यह उसके विरुद्ध है जो उस समय धरती के सबसे विद्वान लोग मानते थे।

10

इन्द्रियाँ

सुनना, देखने से पहले — हर एक बार

> और उसने तुम्हें कान दिए और आँखें दीं और दिल दिए, ताकि तुम कृतज्ञ बनो।
>
> सूरह अन-नहल — आयत 78

कान काम कर रहा है

सप्ताह 24

आँख काम कर रही है

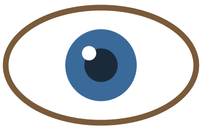

सप्ताह 28

सुनना देखने से चार सप्ताह पहले पूरा हो जाता है

पूरे क़ुरआन में, मनुष्य की रचना के सन्दर्भ में देखना कभी एक बार भी सुनने से पहले नहीं आया

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन सुनने का उल्लेख **सदा** देखने से पहले करता है, हर एक जगह, बिना किसी अपवाद के। और विज्ञान कहता है: भ्रूण का कान उसकी आँखों के काम करने से महीनों पहले काम करता और सुनता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आँख वही इन्द्रिय है जिसे हर मनुष्य सहज रूप से पहले रखता है: "मैंने अपनी आँखों से देखा" "मैंने सुना" से ऊपर है, और चश्मदीद गवाही सुनी-सुनाई बात से ऊपर मानी जाती है। हर भाषा में स्वाभाविक क्रम देखने से शुरू होता है। और यह तो पता ही न था कि भ्रूण कुछ सुनता भी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कर्णावर्त (कॉक्लिया) की बनावट लगभग बीसवें सप्ताह में पूरी होती है, और भ्रूण **चौबीसवें सप्ताह** से ध्वनि पर प्रमाणित प्रतिक्रिया दिखाता है। इसके विपरीत दृष्टिपटल और दृष्टि-पथ **अट्ठाईसवें सप्ताह** से पहले काम करने लायक़ नहीं होते। नवजात शिशु जन्म के क्षण से अपनी माँ की आवाज़ पहचान लेता है, जबकि महीनों तक साफ़ देख नहीं पाता।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार किसी एक जगह में नहीं, बल्कि **पूर्ण निरन्तरता** में है। यदि यह क्रम संयोग होता तो तेरह अलग-अलग स्थलों में कम से कम एक बार तो बदलता। फिर भी वह बिना किसी अपवाद के क़ायम रहता है, हालाँकि वह भाषा की आम प्रवृत्ति के विरुद्ध जाता है। और बारीकी यहीं नहीं रुकती: "सुनना" **सदा एकवचन में** आता है और "देखना" **सदा बहुवचन में** — क्योंकि सुनना एक ही शक्ति है जो हर दिशा से एक ही प्रकार का आगत ग्रहण करती है, जबकि दो आँखें दो भिन्न चित्र बनाती हैं जिन्हें मस्तिष्क में जोड़ा जाता है।

ऊतक विज्ञान

11 पीड़ा त्वचा में बसती है

> जब भी उनकी खालें जल चुकी होंगी, हम उन्हें दूसरी खालों से बदल देंगे, ताकि वे यातना का स्वाद चखते रहें।
>
> **सूरह अन-निसा — आयत 56**

सतह के पास घनी मुक्त तंत्रिका-सिरे

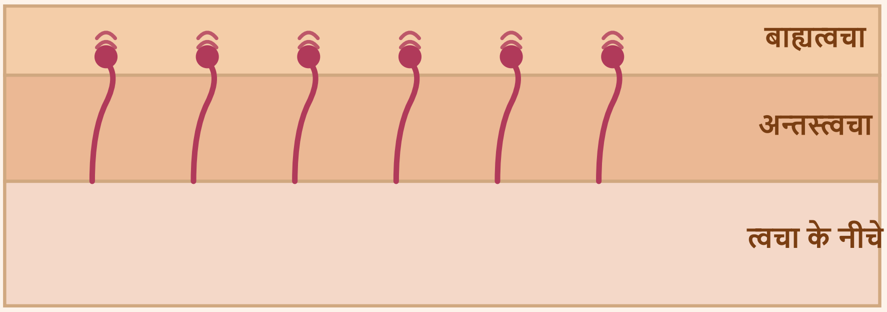

पीड़ा-ग्राही सब त्वचा में हैं — वह जल जाए तो अनुभूति चली जाती है

गहरी तीसरी श्रेणी की जलन में दर्द नहीं होता — क्योंकि पीड़ा-ग्राही जल चुके होते हैं

सीधी-सादी बात में

पीड़ा की अनुभूति पूरे शरीर में फैली हुई नहीं है — वह विशेष रूप से **त्वचा** में है। इसीलिए जब त्वचा गहराई तक जल जाती है तो उस जगह अनुभूति बन्द हो जाती है। आयत त्वचा को बदल देती है ताकि अनुभूति बनी रहे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पीड़ा को पूरे शरीर की, या दिल की, या आत्मा की एक आम अनुभूति समझा जाता था। यह पता न था कि उसके **विशेष तंत्रिका-ग्राही** होते हैं, और न यह कि उन ग्राहियों का कोई ख़ास स्थान है। पीड़ा-ग्राहियों का वैज्ञानिक वर्णन 1906 तक नहीं हुआ था — चार्ल्स शेरिंगटन के हाथों।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पीड़ा-ग्राही (नोसिसेप्टर) मुक्त तंत्रिका-सिरे हैं जो **त्वचा की परतों** में केन्द्रित होते हैं। तीसरी श्रेणी की जलन में, जहाँ त्वचा अपनी पूरी मोटाई में नष्ट हो जाती है, **रोगी जली हुई जगह में पीड़ा की अनुभूति पूरी तरह खो देता है** — और यह एक मान्य नैदानिक संकेत है जिससे चिकित्सक जलन की गहराई पहचानते हैं। अनुभूति लौटाने के लिए त्वचा का प्रत्यारोपण करना पड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

कारण स्वयं आयत में दिया गया है: **"ताकि वे यातना का स्वाद चखते रहें"**। त्वचा का बदला जाना दंड में कोई बढ़ोतरी नहीं है — वह **अनुभूति के जारी रहने की शर्त** है। और इसके लिए दो बातें एक साथ जाननी पड़ती हैं: कि पीड़ा की अनुभूति त्वचा में स्थित है, और कि जब त्वचा पूरी तरह जल जाए तो **अनुभूति रुक जाती है**। आयत केवल पीड़ा का वर्णन नहीं करती; वह उस पर एक तार्किक परिणाम खड़ा करती है जो तभी टिकता है जब यह चिकित्सकीय तथ्य सही हो।

शरीर क्रिया विज्ञान

12 गोबर और ख़ून के बीच से निकला शुद्ध दूध

> और निस्सन्देह तुम्हारे लिए चरने वाले पशुओं में एक शिक्षा है। हम तुम्हें उसमें से पिलाते हैं जो उनके पेटों में है — गोबर और ख़ून के बीच से — शुद्ध दूध, पीने वालों के लिए सुपाच्य।
>
> **सूरह अन-नहल — आयत 66**

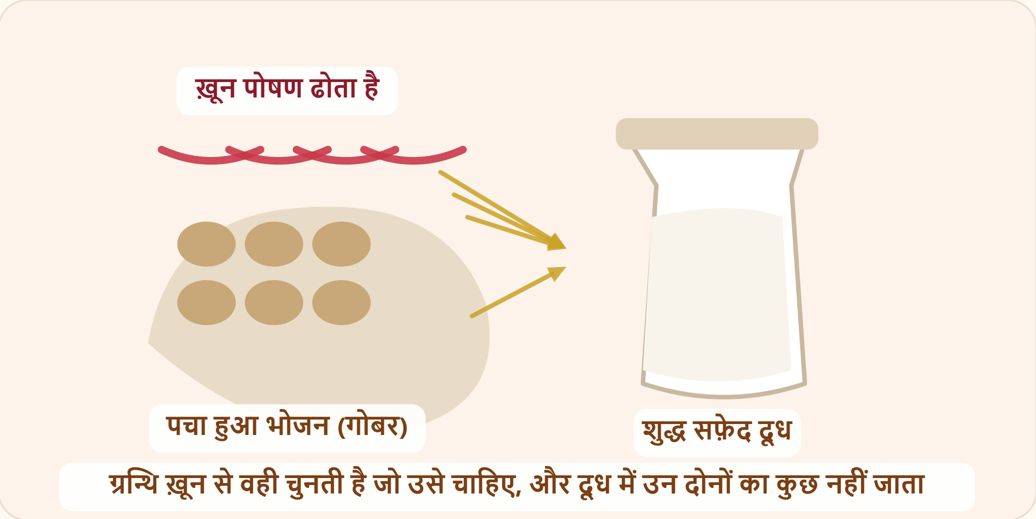

दूध थन में उन सामग्रियों से बनाया जाता है जिन्हें ख़ून आँत से लाकर देता है

सीधी-सादी बात में

वह शुद्ध सफ़ेद दूध जो आप पीते हैं, गाय के भीतर ठीक उस बिन्दु पर बनता है जो आँत में पचे हुए भोजन और नसों में दौड़ते ख़ून के **बीच** है। और फिर भी वह **शुद्ध** निकलता है, उन दोनों में से किसी का रंग लिए बिना।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दूध बनने की क्रियाविधि बिलकुल अज्ञात थी। यही मान लिया जाता था कि दूध थन में उसी तरह इकट्ठा होता है जैसे मशक में पानी। रहा उसे पचे हुए भोजन और ख़ून दोनों से जोड़ना, और उसे **उन दोनों के बीच** रखना — इसका किसी को कोई ज्ञान ही न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भोजन आँत में पचता है, फिर उसके अवयव ख़ून में सोख लिए जाते हैं। ख़ून उन्हें थन की दुग्ध-ग्रन्थि तक ले जाता है, जहाँ उपकला कोशिकाएँ ख़ून से वे शर्कराएँ, अमीनो अम्ल, वसा और लवण लेती हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता है, और फिर **नए सिरे से दूध बनाकर** उसे स्रावित करती हैं। इसलिए दूध न छना हुआ ख़ून है न घुला हुआ भोजन, बल्कि एक निर्मित पदार्थ है जिसके बनने का स्थान पाचन-तंत्र और रक्त-परिसंचरण के बीच पड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **"के बीच से"** इस वाक्यांश में बैठा है। आयत यह नहीं कहती "गोबर और ख़ून से", जिससे दूध उन्हीं से निकाला हुआ और उन्हीं में मिला हुआ ठहरता; और न यह कहती है "गोबर और ख़ून के बाद"। वह कहती है "उन दोनों के बीच से" — यानी बनने का स्थान **क्रम में उन दोनों के बीच पड़ता है**: पचने के बाद और ख़ून के उन्हें ले चलने के बाद, और दूध के निकलने से पहले। फिर वह उत्पाद को **"शुद्ध"** कहती है — यानी जिससे वह आया उसका कोई निशान तक उसमें नहीं। यह एक ऐसे शरीर-क्रियात्मक मार्ग का वर्णन है जो 1628 में रक्त-परिसंचरण की खोज तक समझा ही नहीं गया था।

13

निवारक चिकित्सा

हाथ धोइए — इससे पहले कि आप जानें क्यों

जब तुममें से कोई नींद से जागे तो अपना हाथ बर्तन में तब तक न डाले जब तक उसे तीन बार धो न ले, क्योंकि उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी" — अदृश्य पर टिका एक कारण

1	2	3	4
पाँच बार वुज़ू	**हाथ धोना**	**मिस्वाक**	**मुँह धोना**
हर दिन	जागने पर	हर नमाज़ पर	और नाक तथा चेहरा

हाथ धोना चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण एकल निवारक उपाय है
विश्व स्वास्थ्य संगठन

पवित्रता की एक दैनिक व्यवस्था, जो हर मुसलमान पर दिन में पाँच बार लागू है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने जागने पर, भोजन छूने से पहले हाथ धोने का आदेश दिया, और एक विलक्षण कारण बताया: **"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी"** — यानी एक सम्भावित हानि है जो **आँख से दिखाई नहीं देती**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

कीटाणु किसी भी रूप में ज्ञात न थे। सफ़ाई **रूप और गंध** की बात थी: यदि हाथ साफ़ दिखे तो वह साफ़ है। छूने से फैलने वाली किसी छिपी गंदगी की कोई धारणा ही न थी। यूरोप में तो चिकित्सक उन्नीसवीं सदी तक मुर्दों का चीर-फाड़ करने के बाद बिना हाथ धोए प्रसव कराने चले जाते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हाथ धोना आज विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्वीकृति से **पूरी चिकित्सा का सबसे महत्वपूर्ण एकल निवारक उपाय** है, और अकेले यही हर वर्ष करोड़ों संक्रमण रोकता है। इसकी खोज 1847 में हंगरी के चिकित्सक **ज़ेमेलवाइस** ने की, जिन्होंने देखा कि चिकित्सकों के हाथ धुलवाने से नई माताओं की मृत्यु लगभग 18 प्रतिशत से घटकर लगभग 2 रह गई — **और उनके सहकर्मियों ने उनका उपहास किया, उन्हें पद से निकाल दिया गया, और वे एक पागलख़ाने में मरे**। उधर मुसलमान दिन में पाँच बार अपने हाथ, चेहरा, मुँह, नाक, बाँहें और पैर धोता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

महत्व **बताए गए कारण** में है, आदेश में नहीं। सफ़ाई के आदेश को रुचि या रिवाज कहकर टाला जा सकता था। पर ये शब्द — **"उसे नहीं मालूम कि उसके हाथ ने रात कहाँ गुज़ारी"** — उसे किसी **अज्ञात और अदृश्य** चीज़ से उचित ठहराते हैं, यानी ख़तरा तब भी क़ायम है जब हाथ साफ़ दिखाई दे। और यही तो छिपी गंदगी की उस धारणा का मूल है जिस पर समूची निवारक चिकित्सा खड़ी है। इसमें बाक़ी व्यवस्था भी जोड़ लीजिए: हर नमाज़ पर मिस्वाक, वुज़ू में मुँह और नाक की सफ़ाई, बर्तन ढँकने का आदेश, पेय में साँस लेने की मनाही, ठहरे हुए पानी में पेशाब करने की मनाही, और ग़ुस्ल की अनिवार्यता। कीटाणु सिद्धान्त से बारह सदी पहले गढ़ी गई एक समन्वित स्वच्छता व्यवस्था।

एक खुली चुनौती

14 अबू लहब के हाथ टूट जाएँ — नौ वर्ष की चुनौती

> अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएँ और वह ख़ुद भी नष्ट हो। न उसका माल उसके काम आया और न जो उसने कमाया। वह भड़कती लपटों वाली आग में जलेगा।
>
> **सूरह अल-मसद — आयतें 1-3**

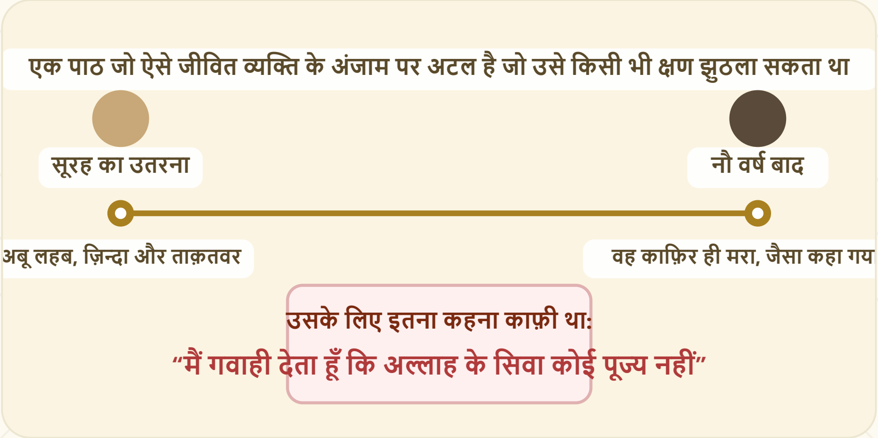

सबसे ख़तरनाक पाठ जो लिखा जा सकता था: एक ऐसे व्यक्ति पर अन्तिम फ़ैसला जो अभी मरा ही नहीं

सीधी-सादी बात में

एक सूरह उतरी जिसने कहा कि स्वयं नबी ﷺ के चाचा — अबू लहब — **आग में जाएँगे**। यानी वे कभी मुसलमान नहीं होंगे। वे उसके बाद नौ वर्ष जीवित रहे, और उनके लिए इतना काफ़ी था कि कलिमा-ए-शहादत ज़बान से कह देते, चाहे झूठ ही सही, और पूरा क़ुरआन गिर जाता — और उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अबू लहब इस सन्देश के सबसे कट्टर दुश्मनों में थे और उसे नुक़सान पहुँचाने की सबसे अधिक क्षमता रखते थे, और वे स्वयं नबी ﷺ के चाचा तथा क़ुरैश के सरदारों में से थे। आने वाले दिनों में कोई व्यक्ति क्या बन जाएगा, यह कोई नहीं जान सकता था — कितने ही कड़वे दुश्मन लम्बी शत्रुता के बाद मुसलमान हुए, जैसे उमर बिन ख़त्ताब, ख़ालिद बिन वलीद और इकरिमा बिन अबी जहल।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अबू लहब बद्र के युद्ध के कुछ ही दिन बाद मरे — सूरह के उतरने के लगभग नौ वर्ष बाद — **तब भी काफ़िर ही**, एक ऐसी बीमारी से जिससे उनके अपने घर वाले भी दूर भागे। यह सीरत और इतिहास की सभी किताबों में सर्वसम्मत है, और इस्लाम के विरोधियों ने भी इस पर विवाद नहीं किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह किसी दूर की ऐसी बात की भविष्यवाणी नहीं जो किसी के प्रभाव से बाहर हो — यह **एक जीवित व्यक्ति के चुनाव के बारे में है जिसने इसे अपने कानों से सुना**, और जो इस सन्देश को मिटा देने का सबसे अधिक इच्छुक था। उसके पास नौ वर्ष थे जिनमें वह एक वाक्य कह देता — दिखावे के तौर पर ही सही — और पाठ ढह जाता और उसी दिन सन्देश समाप्त हो जाता। **उस चुनौती को नौ वर्ष खुला छोड़ देना, और फिर उसका ठीक वैसे ही बन्द होना जैसा कहा गया था — यह ऐसा जोखिम है जो कोई मनुष्य नहीं उठाता।** इसमें यह भी जोड़िए कि सूरह ने वही फ़ैसला उसकी पत्नी पर भी सुनाया, और वह भी काफ़िर ही मरी। दो में से दो, एक साथ निशाने पर — और झुठलाने के नौ वर्ष के अवसरों के बाद।

मिस्रविद्या

15 यूसुफ़ के समय "बादशाह", और मूसा के समय "फ़िरऔन"

> ❖ और बादशाह ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, मैं उसे अपने लिए ख़ास कर लूँगा ... और फ़िरऔन ने कहा: मुझे छोड़ो, मैं मूसा को क़त्ल कर दूँ। ❖
>
> **सूरह यूसुफ़ 54 — और सूरह ग़ाफ़िर 26**

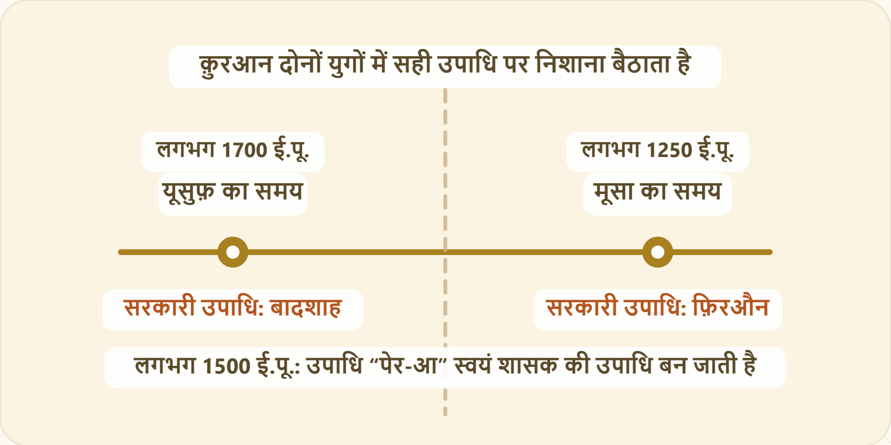

राजसी उपाधि का यह बदलना एक ऐसा तथ्य है जो चित्रलिपि के पढ़े जाने तक अज्ञात था

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन यूसुफ़ के समय के मिस्री शासक को **"बादशाह"** कहता है, और मूसा के समय के शासक को **"फ़िरऔन"** — और दोनों को कभी नहीं गड़बड़ाता। मिस्रविद्या कहती है कि यह ठीक-ठीक सही है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में मिस्र के शासकों की उपाधियों का, या यह कि वे कब बदलीं, कोई ज्ञान न था। पूरे क्षेत्र में चलन यही था कि हर मिस्री शासक को बिना भेद किए "फ़िरऔन" कहा जाए। बल्कि **ख़ुद तौरात यूसुफ़ के शासक को बार-बार "फ़िरऔन" कहती है** — उत्पत्ति की पुस्तक में।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शब्द "फ़िरऔन" मिस्री **पेर-आ** से आया है, जिसका अर्थ है "महान घर" — यानी स्वयं महल, न कि शासक का व्यक्तित्व। पुराने और मध्य साम्राज्य भर में यह ऐसा ही रहा। **स्वयं शासक के लिए** उपाधि के रूप में इसका प्रयोग नए साम्राज्य से पहले नहीं हुआ — मोटे तौर पर ईसा से पन्द्रह सदी पूर्व थुतमोस तृतीय के शासनकाल से, और उसके बाद यह आम हो गया। यूसुफ़ का युग उससे पहले पड़ता है और मूसा का उसके बाद। आधुनिक मिस्रविद्या के सन्दर्भों में यह तय है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निरन्तरता ही प्रमाण है। यदि यह संयोग होता तो लगभग तीस स्थलों में कम से कम एक बार तो दोनों उपाधियाँ गड्डमड्ड हो जातीं। फिर भी क़ुरआन यह भेद पूरी तरह बनाए रखता है। इससे भी प्रबल बात: यह **उस बाइबिली पाठ का खंडन करता है जो उस समय अहले-किताब में प्रचलित था** — और वही एकमात्र स्रोत है जिससे नक़ल का आरोप लगाया जाता है। यदि पहुँचाने वाला मनुष्य होता तो वह ग़लती भी साथ ले आता। और यह सुधार सही है, यह एक हज़ार वर्ष से भी अधिक बाद जाना गया — जब चित्रलिपि पढ़ी गई।

भ्रूणविज्ञान

16 अलक़ा: एक लटकी हुई चीज़ जो ख़ून चूसती है

उसने मनुष्य को अलक़ा से पैदा किया।

सूरह अल-अलक़ — आयत 2

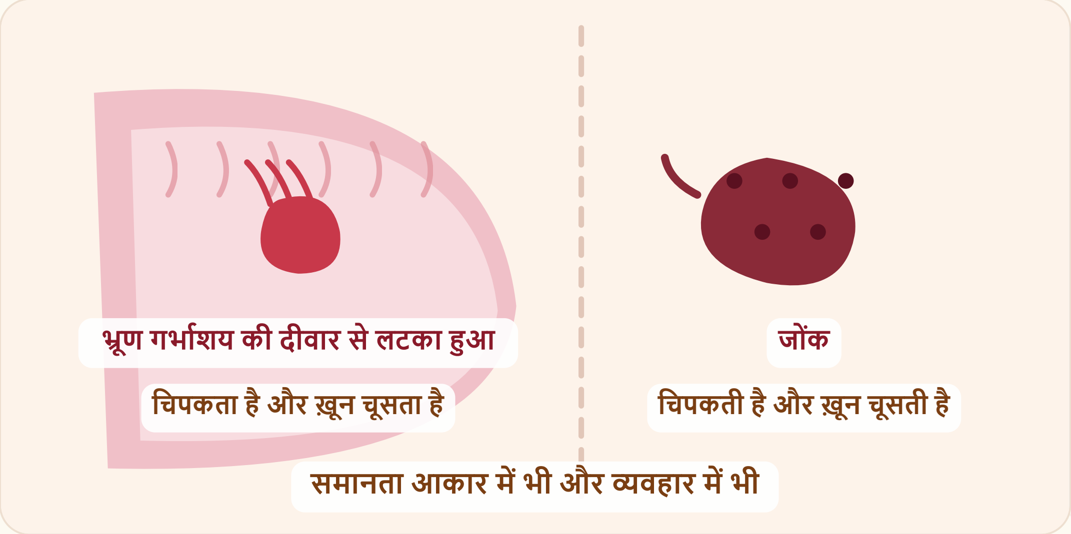

तीसरे सप्ताह का भ्रूण: उसका आकार और उसका काम, दोनों जोंक के आकार और काम हैं

सीधी-सादी बात में

यहाँ आया अरबी शब्द एक साथ तीन अर्थ रखता है: कोई **लटकी हुई** चीज़, ख़ून चूसने वाली **जोंक**, और **जमा हुआ ख़ून**। और इस चरण पर भ्रूण तीनों एक साथ है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

किसी ने तीसरे सप्ताह का भ्रूण देखा ही न था। वह दो मिलीमीटर से भी कम का होता है और सूक्ष्मदर्शी के बिना दिखाई नहीं देता। यह पता न था कि भ्रूण **गर्भाशय की दीवार से चिपककर उसी से पोषण लेता है**; प्रचलित धारणा यही थी कि वह किसी तरल में तैरता है और उसी से खाता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

छठे दिन ब्लास्टोसिस्ट गर्भाशय की झिल्ली में धँस जाता है और **उससे लटका हुआ** हो जाता है। फिर उसकी कोशिकाएँ माँ की रक्त-वाहिकाओं को खोल देती हैं, तो ख़ून उसके चारों ओर की जगहों में भर जाता है — यानी वह **शाब्दिक अर्थों में ख़ून चूसता है**। और तीसरे सप्ताह के भ्रूण की सूक्ष्मदर्शी तस्वीरें ऐसा आकार दिखाती हैं जो जोंक से बहुत मिलता-जुलता है — उसके मुड़ाव और पार्श्व खंडन तक।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द में तीन अर्थों का इकट्ठा हो जाना ही चमत्कार है। यदि केवल लटकना अभिप्रेत होता तो कोई दूसरा शब्द काफ़ी था; यदि केवल ख़ून अभिप्रेत होता तो ख़ून का शब्द चल जाता। पर यह एक शब्द एक साथ बता देता है: **स्थान** (दीवार से लटका हुआ), **पोषण** (ख़ून चूसना), **आकार** (जोंक जैसा), और **चारों ओर की चीज़** (जमे हुए ख़ून में लिपटा हुआ)। एक शब्द में चार सूक्ष्मदर्शी तथ्य — और वह भी एक निरक्षर व्यक्ति पर उतारा गया, सूक्ष्मदर्शी से एक हज़ार वर्ष पहले।

प्लेट विवर्तनिकी

17 पहाड़ चल रहे हैं और आप उन्हें जमा हुआ समझ रहे हैं

❖ और तुम पहाड़ों को देखते हो, उन्हें जमा हुआ समझते हो, हालाँकि वे बादलों के चलने की तरह चल रहे हैं। ❖

सूरह अन-नम्ल — आयत 88

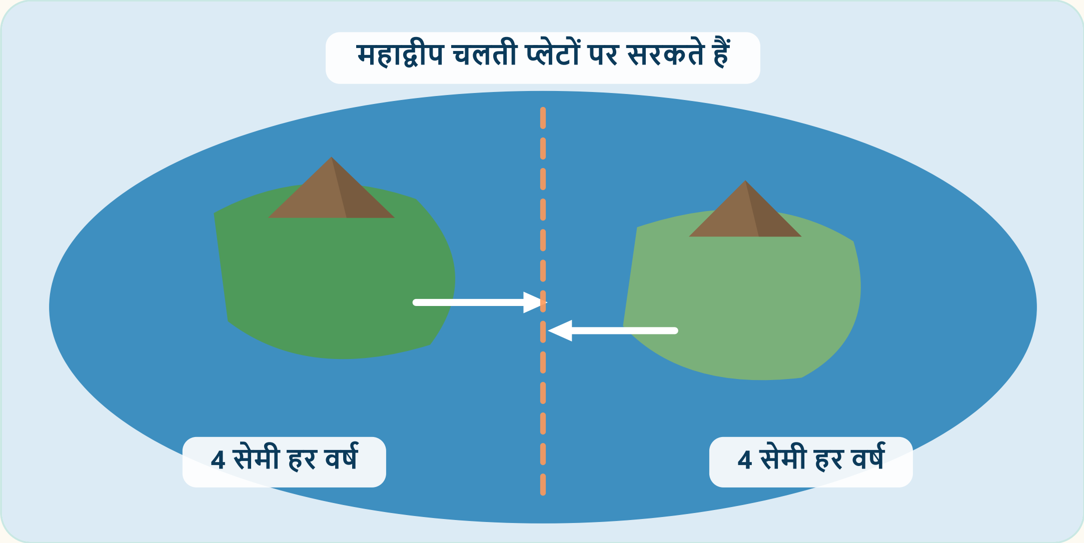

पूरे महाद्वीप चल रहे हैं, बहुत धीरे, और उन पर जो कुछ है वह सब उनके साथ चल रहा है

सीधी-सादी बात में

पहाड़ आपको ऐसे दिखते हैं मानो खड़े हों। सच्चाई यह है कि वे **चल रहे** हैं — इतने धीरे कि आपकी आँख पकड़ नहीं पाती, ठीक वैसे ही जैसे आप एक क्षण देखकर बादल को हिलता हुआ नहीं देख पाते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती के हर मनुष्य के लिए पहाड़ पूर्ण स्थिरता का ही प्रतीक थे। "पहाड़ जैसा अटल" हर भाषा की कहावत है। किसी ने यह दावा नहीं किया कि उनके नीचे की ज़मीन स्वयं खिसक रही है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्लेट विवर्तनिकी, जो 1960 के दशक से स्थापित है: धरती की पपड़ी विशाल प्लेटों में बँटी है जो तैरती और खिसकती हैं, और महाद्वीपों तथा पहाड़ों को अपने साथ कुछ सेंटीमीटर प्रति वर्ष की गति से ले चलती हैं। आज यह गति उपग्रह से नापी जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उपमा स्वयं ही प्रमाण है। "उन्हें जमा हुआ समझते हो" साफ़ कहता है कि उनका ठहराव **एक दृष्टि-भ्रम** है। फिर "बादलों के चलने की तरह चलना" — और बादल **क्षैतिज रूप से, धीरे, और एक पिंड की तरह** चलते हैं; वे न गिरते हैं न उछलते हैं। तो आयत एक वास्तविक गति का वर्णन करती है और यह भी बता देती है कि वह दिखाई क्यों नहीं देती। और इससे भी बारीक: पहाड़ अकेले नहीं चलते, वे **अपने चारों ओर की हर चीज़ के साथ** चलते हैं — बिलकुल बादलों की तरह।

18

खगोल विज्ञान

ब्रह्मांड हर क्षण बढ़ रहा है

> और आकाश को हमने अपनी शक्ति से बनाया, और निस्सन्देह हम उसे निरन्तर फैलाते जा रहे हैं।
>
> **सूरह अज़-ज़ारियात — आयत 47**

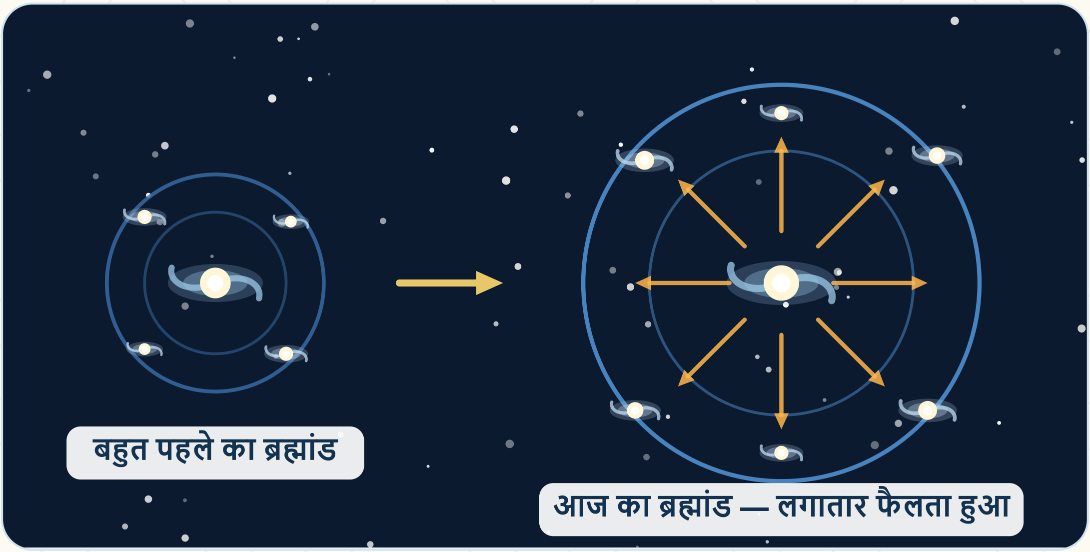

आकाशगंगाएँ एक-दूसरे से दूर होती जा रही हैं, जैसे फूलते गुब्बारे पर बने बिन्दु

सीधी-सादी बात में

कल्पना कीजिए एक गुब्बारा हो जिस पर बिन्दु बने हों, और फिर आप उसे फुलाएँ। हर बिन्दु अपने पड़ोसी से दूर हटता जाता है। ब्रह्मांड ठीक यही करता है: आकाश अपने जीवन के **हर सेकंड बढ़ता और चौड़ा होता** जाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग — और बड़े-बड़े दार्शनिक तथा वैज्ञानिक भी — यही मानते थे कि ब्रह्मांड **स्थिर और अटल** है, एक ही नाप का, जो न बढ़ता है न घटता। यह धारणा बीसवीं सदी तक क़ायम रही; स्वयं आइंस्टीन ने अपने समीकरणों में एक बनावटी स्थिरांक जोड़ा ताकि ब्रह्मांड को ठहरा हुआ रखा जा सके।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1929 में एडविन हबल ने देखा कि दूर की आकाशगंगाओं का प्रकाश **लाल की ओर खिसका** हुआ है, यानी वे हमसे भाग रही हैं — और जितनी दूर हैं उतनी ही तेज़ भाग रही हैं। ब्रह्मांड फैल रहा है। 1998 में पता चला कि यह फैलाव **तेज़ होता जा रहा** है, और इसके खोजकर्ताओं को 2011 में नोबेल पुरस्कार मिला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो शब्द आया है वह कर्तृवाचक कृदन्त है, जो किसी **जारी और अटूट** क्रिया को बताता है, भूतकाल को नहीं। यानी फैलाव अभी हो रहा है। अरब के रेगिस्तान का एक निरक्षर व्यक्ति, जिसके पास न दूरबीन थी न वर्णक्रममापी, ऐसा वाक्य कहता है जो समूची मानवता की सर्वसम्मति के विरुद्ध है — और फिर इतिहास की सबसे बड़ी खगोलीय खोज आकर अक्षर दर अक्षर उसकी पुष्टि करती है। यह न संयोग से समझाया जा सकता है, न चतुराई से।

ब्रह्मांड विज्ञान

19 वे एक ही चीज़ थे — फिर अलग कर दिए गए

> क्या इनकार करने वालों ने नहीं देखा कि आकाश और धरती आपस में जुड़े हुए एक पिंड थे, फिर हमने उन्हें अलग किया?
>
> **सूरह अल-अंबिया — आयत 30**

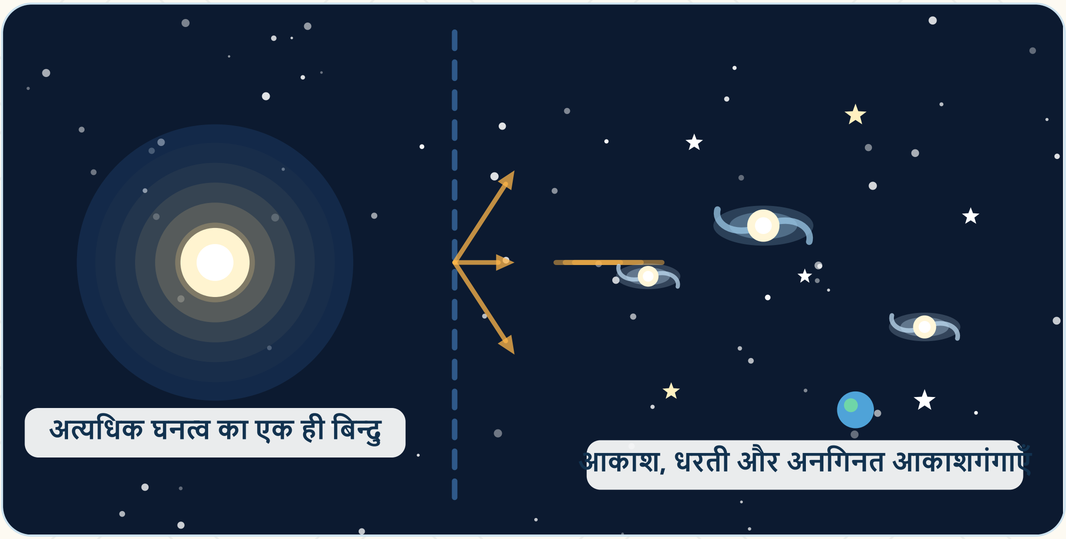

एक जुड़े हुए पिंड से लेकर आकाशगंगाओं से भरे फैलते हुए ब्रह्मांड तक

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन कहता है: आकाश और धरती पहले एक ही चीज़ बनकर **आपस में चिपके** हुए थे, और अल्लाह ने उन्हें फाड़कर अलग किया। ठीक वैसे ही जैसे एक छोटा-सा बीज खुलता है और उसमें से पूरा पेड़ निकल आता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

"ब्रह्मांड की कोई शुरुआत" — ऐसी कोई धारणा थी ही नहीं। मान्यता यह थी कि ब्रह्मांड **अनादि है, उसकी कोई शुरुआत नहीं**। और जिन्होंने कोई आरम्भ कल्पना किया उन्होंने लड़ते हुए देवताओं की कहानियाँ गढ़ीं, न कि किसी एक पिंड का भौतिक विभाजन।

आज विज्ञान क्या कहता है?

महाविस्फोट सिद्धान्त, जो आज दुनिया भर का मानक प्रतिरूप है: समूचा ब्रह्मांड **अत्यधिक घनत्व और ताप के एक ही बिन्दु** से शुरू हुआ, फिर वह फटा और फैला। यह तीन प्रमाणों पर खड़ा है: आकाशगंगाओं का दूर भागना; 1965 में खोजी गई **ब्रह्मांडीय सूक्ष्मतरंग पृष्ठभूमि**, जो उसी आरम्भ की बची हुई ऊष्मा है; और ब्रह्मांड में हाइड्रोजन तथा हीलियम का अनुपात।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

पहली अवस्था के लिए आया अरबी शब्द उस चीज़ को कहते हैं जो जुड़कर बन्द हो गई हो, और क्रिया का शब्द उसे फाड़कर खोलने का है। यह एक ऐसा सटीक वर्णन है जिसमें किसी दूसरी व्याख्या की गुंजाइश नहीं। और इससे अधिक महत्वपूर्ण: आयत इसे इनकार करने वालों के सामने **चुनौती के रूप में** रखती है — "क्या उन्होंने नहीं देखा" — और यह इस बात पर दाँव है कि एक दिन यह देख लिया जाएगा। और तेरह सदी बाद देख लिया गया; उसके दो खोजकर्ताओं को इस पर 1978 में नोबेल पुरस्कार मिला।

भूविज्ञान

20 पहाड़ धरती में गाड़ी हुई खूँटियाँ हैं

> क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया, और पहाड़ों को खूँटियाँ?
>
> **सूरह अन-नबा — आयतें 6-7**

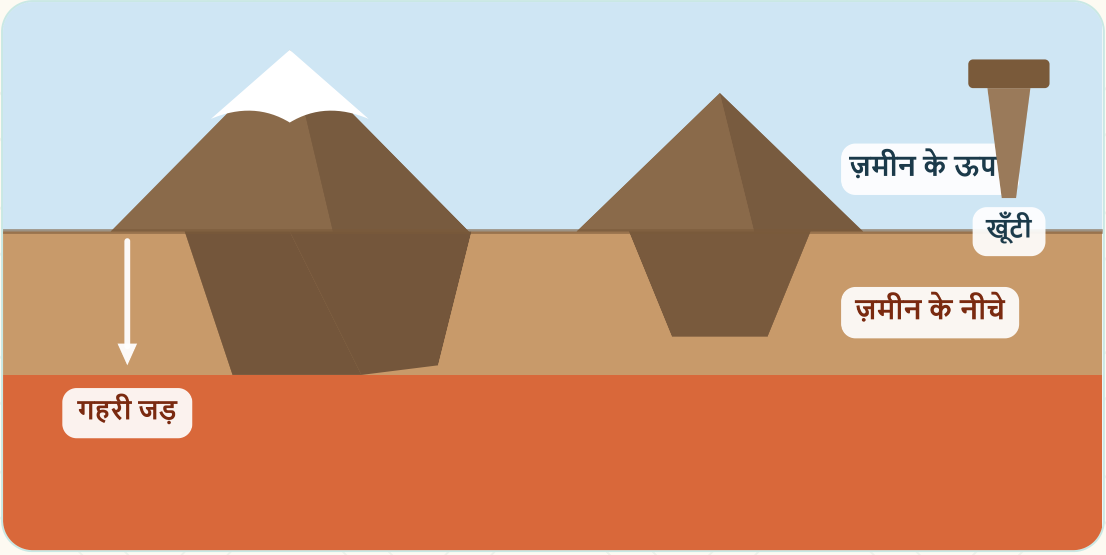

पहाड़ तम्बू की खूँटी जैसा है: दिखता थोड़ा है, और गड़ा हुआ हिस्सा कई गुना अधिक

सीधी-सादी बात में

जिस खूँटी से आप तम्बू गाड़ते हैं उसका थोड़ा हिस्सा दिखता है और बड़ा हिस्सा ज़मीन में गड़ा होता है। पहाड़ ठीक वैसे ही हैं: उनकी **ज़मीन के नीचे गहरी जड़ें** हैं, जो ऊपर दिखने वाले हिस्से से कई गुना हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के मन में पहाड़ चट्टान का एक ऐसा ढेला था जो धरती की सतह **पर** रखा हो, जैसे मेज़ पर पत्थर। किसी के पास यह जानने का कोई साधन न था कि उसके नीचे कोई विस्तार भी है, क्योंकि खुदाई उथले कुओं से आगे कभी गई ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भूविज्ञान इन्हें **पर्वत-जड़ें** कहता है: हर पहाड़ पपड़ी में इतनी गहराई तक धँसा होता है जो प्रायः उसकी दिखाई देने वाली ऊँचाई का लगभग पाँच गुना होती है। और यही जड़ें पपड़ी को स्थिर रखती हैं और उसका हिलना सीमित करती हैं — इसी सिद्धान्त को समस्थिति (आइसोस्टेसी) कहते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

शब्द “खूँटी” न आकार की उपमा है न नोकदार रूप की। अरबी में खूँटी वह चीज़ है जिसकी पहचान उसका काम है: **एक ऐसा पिंड जिसका अधिकांश गड़ा होता है ताकि जो उसके ऊपर है उसे थामे रखे**। तो आयत पहाड़ों को दो ऐसे गुण देती है जो ज्ञात न थे: सतह के नीचे का विस्तार, और थामे रखना। और जो इससे पहले आया उस पर ध्यान दीजिए — धरती को “बिछौना” कहा, यानी वह चीज़ जो हिल सकती है — तो खूँटियाँ उसे थामने के लिए आती हैं।

समुद्र विज्ञान

21 दो समुद्र जो मिलते हैं और आपस में घुलते नहीं

> उसने दो समुद्रों को छोड़ दिया कि वे मिलें; उन दोनों के बीच एक आड़ है जिसे वे लाँघते नहीं।
>
> **सूरह अर-रहमान — आयतें 19-20**

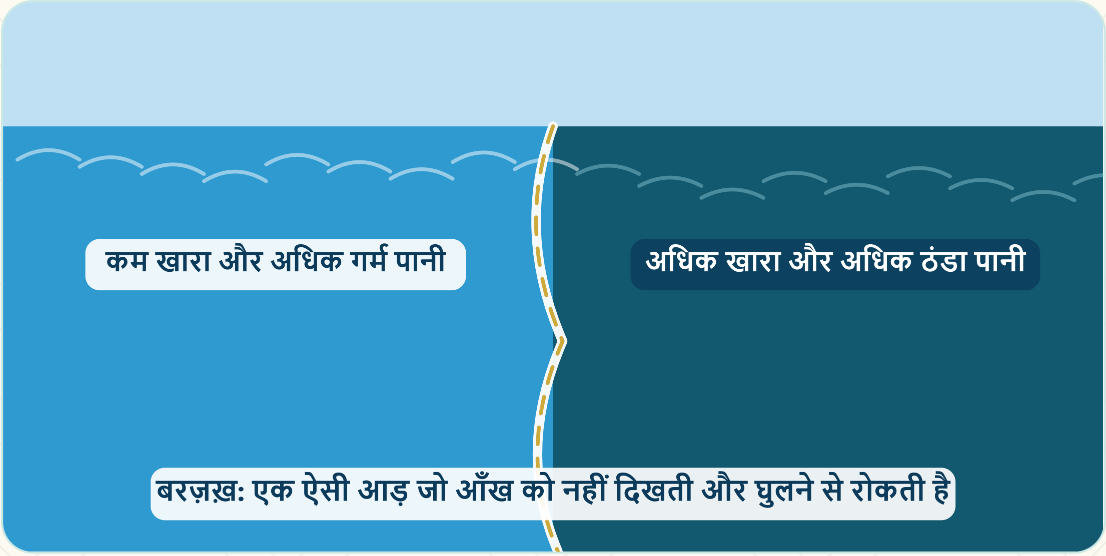

दो समुद्रों के बीच की विभाजक रेखा धरती की कई जगहों पर नंगी आँख से दिखाई देती है

सीधी-सादी बात में

जब दो अलग-अलग समुद्र मिलते हैं तो वे वैसे तुरन्त नहीं घुलते जैसा आप सोचेंगे। उनके बीच एक **आड़** बनी रहती है जो एक के पानी को दूसरे के पानी से रोके रखती है, तो हर समुद्र अपना रंग, अपना खारापन और अपना ताप थामे रहता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर मनुष्य के लिए यह स्वतःसिद्ध था कि पानी पानी से मिलते ही घुल जाता है — जैसे पानी के दो प्याले मिल जाते हैं। पानी और पानी के बीच किसी "दीवार" की कल्पना किसी ने की ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

समुद्र विज्ञान **वास्तविक जल-अवरोधों** का अस्तित्व सिद्ध करता है, जिन्हें फ़्रंट और हैलोक्लाइन कहा जाता है: खारेपन, घनत्व और ताप का अन्तर एक सँकरा संक्रमण-क्षेत्र बना देता है जिसका अपना पृष्ठ-तनाव होता है और जो तेज़ मिश्रण को रोकता है। यह जिब्राल्टर जलडमरूमध्य और उत्तमाशा अन्तरीप पर नंगी आँख से देखा जा सकता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत केवल न घुलने पर नहीं रुकती; वह कारण भी बताती है: एक **आड़** — अरबी में वह पर्दा जो दो चीज़ों के बीच खड़ा हो। फिर उसका प्रभाव बताती है: दोनों में से कोई दूसरे पर नहीं चढ़ता। यह एक ऐसी परिघटना का वर्णन है जो खारेपन और घनत्व के यंत्रों से नापे जाने तक, यानी बीसवीं सदी तक, खोजी ही नहीं गई थी। और एक दूसरी आयत में वर्णन और भी तीखा है: एक आड़ और **एक रोक देने वाला पर्दा**।

जल के प्रकार

22 मीठा और सुपाच्य — और खारा और कड़वा

> और वही है जिसने दो समुद्र छोड़े, यह मीठा और सुपाच्य और वह खारा और कड़वा, और उन दोनों के बीच एक आड़ और एक रोक देने वाला पर्दा रख दिया।
>
> **सूरह अल-फ़ुरक़ान — आयत 53**

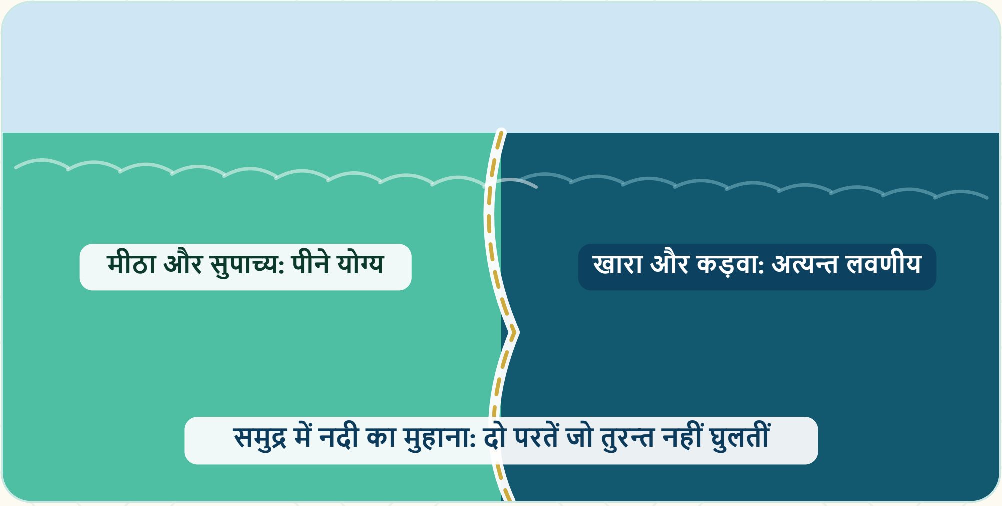

नदियों के मुहानों पर मीठा पानी खारे पानी के ऊपर तैरता है, और सीमा साफ़ दिखाई देती है

सीधी-सादी बात में

जब कोई मीठी नदी खारे समुद्र में गिरती है तो दोनों तुरन्त नहीं घुलते। उनके बीच एक **आड़** बनी रहती है जिसे उपग्रह साफ़ देख लेते हैं, और वह दसियों किलोमीटर तक फैली रहती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सबके लिए पानी तो पानी है, और वह सहज बुद्धि से पानी में घुल जाता है। यह पता न था कि भिन्न जलों के **भिन्न घनत्व और भिन्न पृष्ठ-तनाव** होते हैं जो उन्हें घुलने के बजाय परतों में बाँट देते हैं। रहा उनके बीच की चीज़ को "रोक देने वाला" पर्दा कहना — साधारण अवलोकन में उसका कोई समकक्ष ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

बड़ी नदियों के मुहानों पर — अमेज़न, मिसिसिपी, नील — मीठा पानी समुद्र के भीतर दसियों किलोमीटर तक जाता है और **अपना रंग तथा अपना घनत्व थामे रखता है**, और विभाजक रेखा अन्तरिक्ष से दिखाई देती है। कारण है घनत्व, खारेपन और ताप का अन्तर, जो एक सँकरी संक्रमण-परत बनाता है जिसे **हैलोक्लाइन** कहते हैं और जो मिश्रण को बहुत धीमा कर देती है। अन्तरिक्ष यात्रियों ने इस परिघटना की बार-बार तस्वीरें ली हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस आयत और सूरह अर-रहमान वाली आयत के बीच एक ऐसा बारीक अन्तर है जिसे केवल जानने वाला ही पकड़ेगा। वहाँ दोनों समुद्र खारे हैं, बस गुण भिन्न हैं, और विभाजक को एक ही शब्द से नाम दिया गया है: आड़। यहाँ — जहाँ मिलन **मीठे और खारे** के बीच है — एक दूसरा वर्णन जोड़ दिया गया है: **रोक देने वाला पर्दा**, यानी ज़ोर देकर कही गई, दुहराई गई रोक। और भौतिक कारण साफ़ है: मीठे और खारे पानी के बीच घनत्व का अन्तर दो खारे जलों के बीच के अन्तर से **कहीं अधिक** होता है, तो अलगाव भी अधिक तीखा और अधिक मज़बूत होता है। शब्दों का ज़ोर परिघटना के ज़ोर से ठीक-ठीक मेल खाता है।

ऊँचाई का शरीर-क्रिया विज्ञान

23 जितना ऊपर चढ़ेंगे, उतना सीना तंग होगा

> ❖ और जिसे वह गुमराह करना चाहता है, उसका सीना तंग और भिंचा हुआ कर देता है, मानो वह आकाश में चढ़ रहा हो। ❖
>
> **सूरह अल-अनआम — आयत 125**

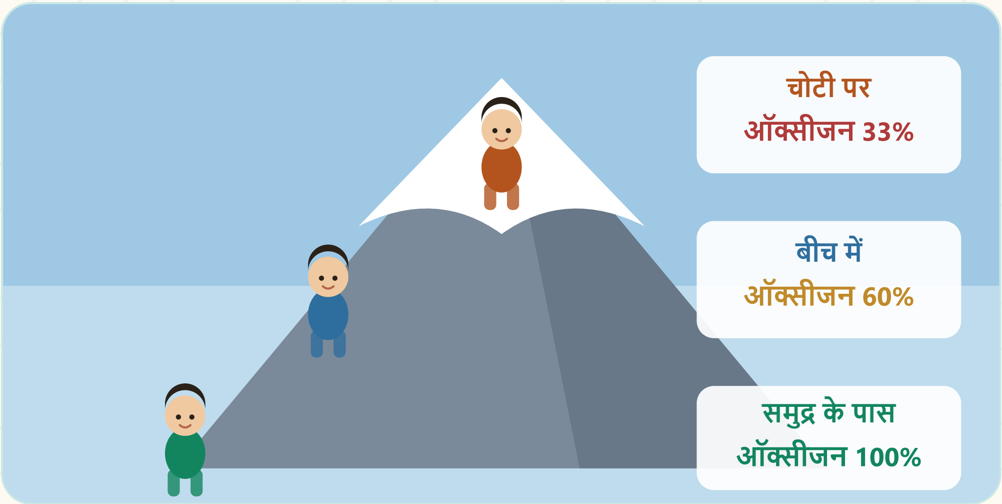

जितना ऊपर जाएँगे ऑक्सीजन उतनी कम होगी, तो साँस सँकरी होगी और घुटन बढ़ेगी

सीधी-सादी बात में

यदि आप किसी बहुत ऊँचे पहाड़ पर चढ़ें तो आपको लगेगा कि सीना भिंच रहा है और साँस लेना मेहनत का काम हो गया है। जितना ऊपर जाएँगे, सीना उतना तंग होता जाएगा। क़ुरआन इसे उस व्यक्ति के सीने की तंगी की **उपमा** बनाता है जो मुँह मोड़ लेता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस माहौल में कोई भी मनुष्य ज़्यादा से ज़्यादा किसी साधारण पहाड़ की चोटी तक पहुँचा था, और किसी ने ऊँचाई को साँस फूलने से **क्रमिक** रूप से नहीं जोड़ा था। बल्कि यह तो पता ही न था कि हवा का कोई भार या दबाव भी होता है; टॉरिचेली ने वायुमंडलीय दबाव 1643 तक नापा ही नहीं था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जितना ऊपर चढ़ेंगे, हवा का दबाव उतना कम होगा और ख़ून तक उतनी ही कम ऑक्सीजन पहुँचेगी। 3,500 मीटर पर वह समुद्र-तल के मान का लगभग 60 प्रतिशत रह जाती है, और एवरेस्ट की चोटी पर लगभग 33 प्रतिशत। परिणाम है साँस फूलना, सीने में जकड़न और सिर दर्द — जिसे **ऊँचाई की बीमारी** कहते हैं। इसी कारण विमानों में केबिन का दबाव बनाए रखने की व्यवस्था लगाई जाती है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही वाक्यांश में तीन बारीक बातें। पहली: चढ़ाई को सीने की तंगी से जोड़ना — यही अपने आप में। दूसरी: “भिंचा हुआ” वाला शब्द तंगी पर तंगी का अर्थ देता है — यानी तीव्रता में एक क्रम। तीसरी, और सबसे बारीक: “चढ़ने” के लिए जो अरबी क्रिया-रूप आया है वह तीव्रता वाला रूप है जो केवल ऊपर उठने का नहीं, बल्कि **ज़ोर लगाने और थोड़ा-थोड़ा करके जूझने** का अर्थ देता है। व्याकरणिक रूप स्वयं वही क्रम उठाए हुए है जिसका वर्णन आज शरीर-क्रिया विज्ञान करता है।

24 गर्भाधान कराने वाली हवाएँ — जो पौधों और बादलों को ब्याहती हैं

> और हमने गर्भाधान कराने वाली हवाएँ भेजीं, फिर आकाश से पानी उतारा और उसे तुम्हें पिलाया।
>
> **सूरह अल-हिज्र — आयत 22**

हवा पौधों को पराग से गर्भित करती है, और बादलों को आवेश तथा धूल से

सीधी-सादी बात में

हवा केवल चीज़ें हिलाती नहीं — वह **ब्याह कराती** है। वह पराग को एक फूल से दूसरे फूल तक ले जाती है ताकि वे फल दें, और धूल तथा बिजली का आवेश बादलों तक ले जाती है ताकि वे बरसें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हवा धकेलने और उठा ले जाने की शक्ति भर थी, इससे अधिक कुछ नहीं: वह जहाज़ चलाती और धूल उड़ाती। उसका **गर्भाधान** में कोई काम है, यह ज्ञात न था; यह तो 1694 तक सिद्ध ही नहीं हुआ था कि पौधों में भी नर और मादा होते हैं — यह जर्मन वैज्ञानिक कामेरारियुस ने सिद्ध किया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हवा से परागण हज़ारों पौध-प्रजातियों का प्रजनन-साधन है — गेहूँ, चावल, मक्का, खजूर और चीड़। और बादलों में: हवा धूल तथा नमक के वे **संघनन-नाभिक** लेकर आती है जिनके चारों ओर जल-वाष्प इकट्ठा होकर बूँदें बनती हैं, और वही बादल के ऊपरी तथा निचले भाग के बीच बिजली के आवेश अलग करती है, जिससे बिजली कड़कती है और वर्षा उतरती है। उन नाभिकों के बिना बादल बरसता ही नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो अरबी शब्द आया है वह उस क्रिया से बना कर्तृवाचक कृदन्त है जो भाषा में **गर्भाधान और जोड़ा मिलाने** के लिए ही रखी गई है — वही शब्द खजूर के हाथ से किए जाने वाले परागण के लिए प्रयुक्त होता था, जिसे अरब केवल खजूर के लिए जानते थे। उस काम को **स्वयं हवा** से जोड़ देना एक ऐसी भूमिका स्थापित करना है जो ज्ञात ही न थी। और इससे भी बारीक: आयत गर्भाधान और फिर वर्षा के उतरने को तुरन्त एक के बाद एक रखती है — यानी हवा बादल को भी गर्भित करती है ताकि वह वर्षा दे। और यह शब्द दर शब्द आधुनिक मौसम विज्ञान है।

मौसम विज्ञान

25 आकाश में पहाड़, और उनमें ओले

और वह आकाश से, उसमें मौजूद पहाड़ों से, ओले उतारता है, और जिसे चाहता है उससे मारता है।

सूरह अन-नूर — आयत 43

कपासी-वर्षा मेघ: एक विशाल पिंड जो ऊपर की ओर इस तरह उठता है मानो आकाश में कोई पहाड़ हो

सीधी-सादी बात में

ओले हर बादल से नहीं गिरते। वे केवल उन विशाल बादलों से गिरते हैं जो **आकाश में पहाड़ों की तरह उठते** हैं, और धरती के सबसे ऊँचे पहाड़ से कई गुना ऊँचाई तक पहुँचते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ज़मीन से बादल क्षैतिज रूप से फैली हुई एक चादर जैसा दिखता है, पहाड़ों जैसा नहीं। बादल की ऊँचाई जानने का कोई साधन न था, और न यह समझ थी कि बादल भिन्न आकारों और भिन्न ऊँचाइयों के होते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ओले विशेष रूप से **कपासी-वर्षा मेघ** में ही बनते हैं: आठ से पन्द्रह किलोमीटर ऊँचा एक खड़ा पिंड — एवरेस्ट से भी ऊँचा। उसके भीतर की ऊपर उठती धाराएँ एक जल-बूँद को बार-बार शिखर तक उठाती हैं, जहाँ वह परत दर परत जमती जाती है, यहाँ तक कि इतनी भारी हो जाए कि गिर पड़े। इसीलिए यदि आप किसी ओले को चीरें तो उसके भीतर पेड़ के तने के छल्लों जैसे छल्ले मिलते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह वाक्यांश चन्द शब्दों में तीन सूचनाएँ देता है: कि बादलों का एक **पर्वताकार, खड़ा रूप** होता है; कि ओले उनके **भीतर** हैं, उनके ऊपर नहीं; और कि वे **केवल इन्हीं से** गिरते हैं, दूसरे बादलों से नहीं। और यह विशिष्टता ही सबसे बारीक हिस्सा है, जिसे ज़मीन पर खड़ा कोई व्यक्ति जान ही नहीं सकता।

26

आनुवंशिकी

एक मिली-जुली बूँद

> निस्सन्देह हमने मनुष्य को एक मिली-जुली बूँद से पैदा किया, ताकि हम उसे परखें, और हमने उसे सुनने वाला और देखने वाला बनाया।
>
> **सूरह अल-इंसान — आयत 2**

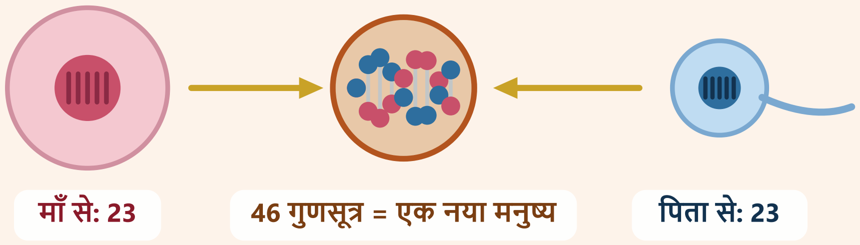

पहली कोशिका एक चीज़ नहीं, बल्कि दो माता-पिता से आए दो आधों का मिश्रण है

सीधी-सादी बात में

मनुष्य किसी एक तरल से शुरू नहीं होता — बल्कि दो पदार्थों के **मिश्रण** से: आधा पिता से और आधा माता से, जो मिलकर एक नई चीज़ बन जाते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आम धारणा यही थी कि सन्तान केवल पुरुष के तरल से बनती है, और माता तो बस **एक बर्तन और एक मिट्टी है जिसमें बीज उगता है**। यह अरस्तू का स्पष्ट कथन है, और सदियों तक चिकित्सा पर इसी का राज रहा। स्त्री का अंडाणु 1827 तक खोजा ही नहीं गया था — यह कार्ल अर्न्स्ट फ़ॉन बेयर ने खोजा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

निषेचन: 23 गुणसूत्र लिए एक शुक्राणु 23 गुणसूत्र लिए एक अंडाणु से मिलता है, और एक ऐसी अकेली कोशिका बनती है जिसमें 46 गुणसूत्र होते हैं और जो समूचे मनुष्य का मूल है। इसलिए पहली बूँद दो बराबर अवयवों का **सच्चा मिश्रण** है, कोई एक अकेला पदार्थ नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो अरबी शब्द आया है उसका अर्थ है ऐसे मिश्रण जो इतने घुल-मिल गए हों कि एक को दूसरे से अलग न किया जा सके। और वह एक **एकवचन** संज्ञा का विशेषण है — यानी वह एक बूँद स्वयं मिश्रण है। यह अरस्तू के उस सिद्धान्त का सुधार है जिसने दो हज़ार वर्ष तक दुनिया पर शासन किया। और दूसरी जगहों पर बारीकी और बढ़ती है: मनुष्य “उछलते हुए पानी” से बनाया गया, और क़ुरआन नर-मादा के भेद को बूँद से जोड़ता है, गर्भाशय से नहीं।

27

आनुवंशिकी

नर और मादा — फ़ैसला पिता का है

> और यह कि उसी ने दो जोड़े पैदा किए, नर और मादा, एक बूँद से जब वह टपकाई जाती है।
>
> **सूरह अन-नज्म — आयतें 45-46**

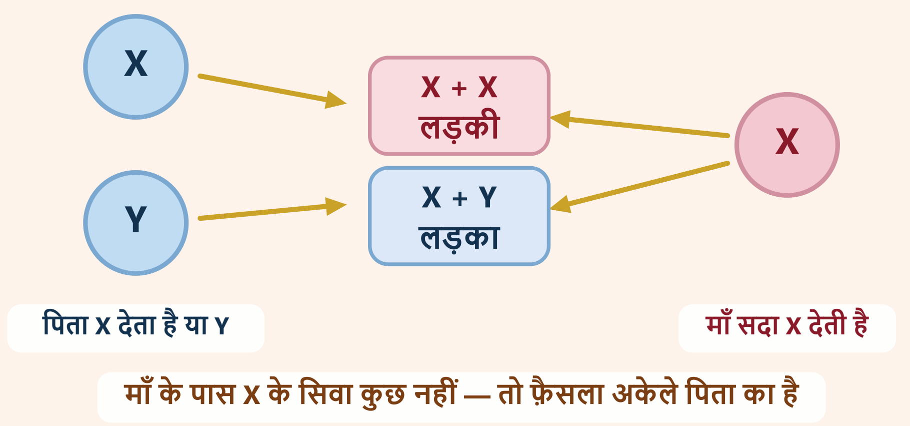

बच्चे का लिंग निषेचन के क्षण पर तय हो जाता है, उसी से जो शुक्राणु लिए हुए है

सीधी-सादी बात में

बच्चा लड़का है या लड़की? यह फ़ैसला कभी माँ की ओर से नहीं आता — यह **पिता** की ओर से आता है। माँ केवल एक ही प्रकार रखती है; पिता दोनों रखता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बेटियाँ जनने पर स्त्रियों को दोष दिया जाता था — और कुछ समाजों में आज भी दिया जाता है — और पत्नी को इसलिए तलाक़ दिया जा सकता था कि वह "बेटे नहीं जनती"। अरस्तू ने तो इस विचार पर पूरा सिद्धान्त खड़ा कर दिया कि लिंग का फ़ैसला गर्भाशय की गर्मी और ख़ून की पक्वता करती है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

लिंग-गुणसूत्र: स्त्री XX है, पुरुष XY। अंडाणु सदा X लिए होता है, बिना किसी अपवाद के; शुक्राणु X भी ले जा सकता है और Y भी। यदि अंडाणु X वाले शुक्राणु से मिले तो सन्तान मादा होगी; यदि Y वाले से मिले तो नर। **लिंग पूरी तरह पिता की ओर से तय होता है।** यह 1905 में नेटी स्टीवंस ने खोजा।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत दोनों जोड़ों — नर और मादा — की रचना को **उस बूँद से जब वह टपकाई जाती है** जोड़ती है, और जो क्रिया आई है वह विशेष रूप से पुरुष के तरल की है। स्रोत बिना किसी दुविधा के नाम ले लिया गया। यदि यह पाठ मानवीय होता, और ऐसी संस्कृति में लिखा गया होता जो सन्तान के लिंग के लिए स्त्री को दोष देती थी, तो सुरक्षित रास्ता चुप्पी या सहमति था। इसके बजाय उसने **प्रचलित धारणा का सीधा खंडन किया और मामला पिता के ज़िम्मे डाल दिया** — और विज्ञान तेरह सदी बाद आकर उसकी पुष्टि करता है।

भ्रूणविज्ञान एवं शरीर रचना

28 तीन अँधेरों में

> वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में बनाता है, एक रचना के बाद दूसरी रचना, तीन अँधेरों में।
>
> **सूरह अज़-ज़ुमर — आयत 6**

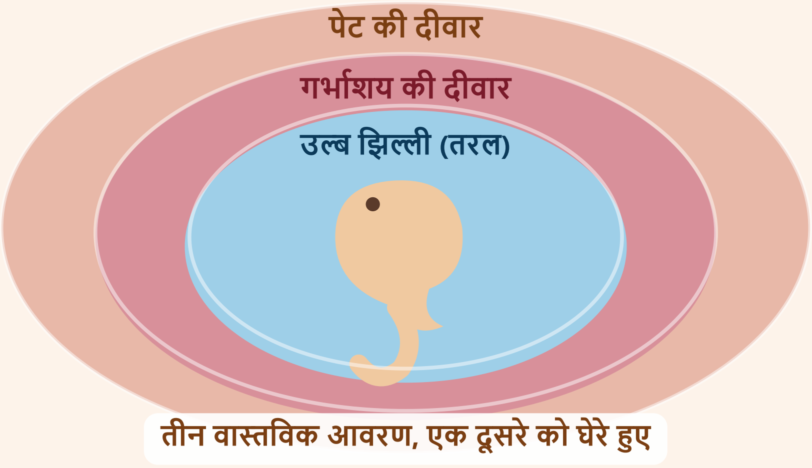

तीन परतदार परदे: पेट की दीवार, फिर गर्भाशय की दीवार, फिर भ्रूण की झिल्लियाँ

सीधी-सादी बात में

गर्भ का बच्चा एक अँधेरे कमरे में नहीं पड़ा होता — वह **तीन कमरों** में होता है, एक दूसरे के भीतर: माँ के पेट की दीवार, फिर गर्भाशय की दीवार, फिर वह तरल से भरी थैली जो उसे घेरे रहती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

गर्भवती स्त्रियों का कोई चीर-फाड़ न था और गर्भाशय की बनावट का कोई ज्ञान न था। सीधी धारणा यही थी कि बच्चा **एक अँधेरे** में है: अपनी माँ के भीतर। तीन निश्चित अँधेरे गिनाना एक सटीक दावा है, और उसके लिए परतों को एक-एक करके जानना पड़ता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

भ्रूण तीन क्रमिक परदों में बन्द है: **पेट की अगली दीवार**, फिर अपनी तीन माँसपेशी-परतों सहित **गर्भाशय की दीवार**, फिर **भ्रूण की झिल्लियाँ** (एम्नियन और कोरियन) और उनके बीच का तरल। इनमें से हर एक अपने आप में प्रकाश रोकता है, और वे बाहर से भीतर की ओर ठीक उसी क्रम में हैं जैसा कहा गया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

संख्या ही मामला तय कर देती है। क़ुरआन ने न "अँधेरे में" कहा, न ढीले-ढाले ढंग से "अँधेरों में", बल्कि निर्धारित किया: **तीन**। और संख्यात्मक दावा ग़लत हो तो तुरन्त झुठलाया जा सकता है। और वह एक दूसरे अत्यन्त सूक्ष्म वाक्यांश के साथ जुड़कर आया: "एक रचना के बाद दूसरी रचना" — यानी क्रमिक चरण, हर एक अपने से पहले वाले के बाद लाया गया। तो एक ही आयत **स्थान को उसकी परतों सहित** और **समय को उसके चरणों सहित**, दोनों का वर्णन कर देती है।

भ्रूणविज्ञान

29 चबाया हुआ लोथड़ा — जिस पर दाँतों के निशान हैं

> फिर एक मांस के लोथड़े से, जिसका कुछ हिस्सा बना हुआ है और कुछ नहीं बना, ताकि हम तुम पर स्पष्ट कर दें।
>
> **सूरह अल-हज्ज — आयत 5**

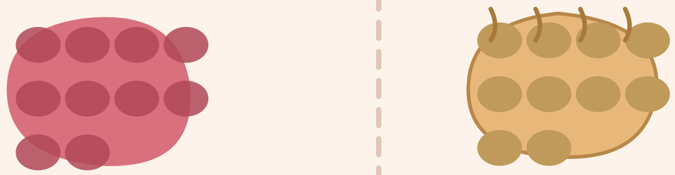

चौथे सप्ताह का भ्रूण: उभरे हुए सोमाइट, मानो किसी चबाई हुई चीज़ पर दाँतों के निशान

सीधी-सादी बात में

अरबी शब्द *मुज़ग़ा* का अर्थ है **वह कौर जिसे आपने अपने दाँतों से चबाया हो**। इस चरण पर भ्रूण एक छोटा-सा पिंड है जो उभारों और नालियों से ढका है, जैसे किसी चबाई हुई गोंद पर दाँतों के छोड़े निशान।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस चरण का कोई ज्ञान ही न था। इसे कल्पना करने की कोई भी कोशिश भ्रूण को या तो ख़ून बताती या कोई नन्हा मानव-रूप। उसे **दाँतों के निशान लिए हुए किसी चबाई हुई चीज़** के रूप में बताना एक ऐसा विचित्र वर्णन है जो बिना देखे किसी के मन में आ ही नहीं सकता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

चौथे सप्ताह में भ्रूण की पीठ पर खंडों की एक शृंखला उभरती है, जिन्हें **सोमाइट** कहते हैं, और जिनके बीच गहरी नालियाँ होती हैं, जिससे भ्रूण किसी चबाए हुए टुकड़े जैसा दिखने लगता है। भ्रूणविज्ञानी कीथ मूर ने इस चरण के भ्रूण के बग़ल में एक चबाई हुई गोंद की तस्वीर ली, और समानता चौंकाने वाली थी। इन खंडों में से कुछ अंगों में बदल जाते हैं; बाक़ी लुप्त हो जाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो वाक्यांश इसके बाद आता है वह सबसे अधिक सूक्ष्म है: "बना हुआ **और न बना हुआ**" — यानी उसी एक लोथड़े के भीतर एक हिस्सा वह है जो कोई रचना बनता है और एक हिस्सा वह जो नहीं बनता। और यह ठीक-ठीक भ्रूणवैज्ञानिक तथ्य है: कुछ कोशिकाएँ ऊतकों और अंगों में विभेदित होती हैं, और बाक़ी एक नियोजित मृत्यु से मर जाती हैं जो अनावश्यक को हटा देती है (आज इसे एपोप्टोसिस कहते हैं)। एक ही पिंड के भीतर के विभाजन का वर्णन करना — और वह भी ऐसे समय में जब भ्रूण देखा ही नहीं गया था — अनुमान से नहीं समझाया जा सकता।

जीवन का उद्गम

30 हर जीवित वस्तु — पानी से बनी

> और हमने हर जीवित वस्तु पानी से बनाई। तो क्या वे फिर भी ईमान नहीं लाएँगे?
>
> **सूरह अल-अंबिया — आयत 30**

धरती पर पानी के बिना कोई जीवन नहीं — एक भी अपवाद नहीं

आज तक ज्ञात हर जीवधारी को पानी चाहिए और उसके बिना उसका अस्तित्व सम्भव नहीं

सीधी-सादी बात में

हर जीवित वस्तु — मनुष्य, पशु, पौधा, यहाँ तक कि सबसे छोटा जीवाणु — **पानी से बनी** है, और पानी के बिना जी नहीं सकती। आपका अपना शरीर लगभग सत्तर प्रतिशत पानी है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

एक बंजर रेगिस्तान में, जहाँ पानी दुर्लभ था और अधिकांश ज़मीन रेत और पत्थर थी, आख़िरी बात जो किसी के मन में आती वह यही होती कि पानी **हर** जीवित वस्तु का मूल है। दार्शनिक चीज़ों के मूल पर झगड़ते रहे — आग, हवा, मिट्टी, पानी — और किसी के पास ऐसा प्रमाण न था जो मामला तय कर दे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जीवित कोशिका — समूचे जीवन की इकाई — द्रव्यमान के हिसाब से लगभग 70% पानी है, और हर जैव-रासायनिक अभिक्रिया उसी के भीतर होती है। आज तक एक भी ऐसा जीव ज्ञात नहीं जो पानी के बिना चल जाए। इसीलिए किसी दूसरे लोक पर जीवन ढूँढ़ते समय अन्तरिक्ष एजेंसियाँ सबसे पहले **पानी** ही ढूँढ़ती हैं — उनका घोषित सूत्र ही है: "पानी के पीछे चलो।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **"हर"** शब्द में है। आयत ने यह नहीं कहा कि पानी जीवन का एक कारण है, और न यह कि अधिकांश जीवित वस्तुएँ पानी से हैं — उसने पानी को बिना किसी अपवाद के हर जीवित वस्तु का मूल बना दिया। और यह **एक सार्वभौमिक नियम है, इसलिए झुठलाया जा सकने वाला**: कोई एक भी ऐसा जीव जिसे पानी की आवश्यकता न हो, इसे गिरा देता। विज्ञान चौदह सदियों से धरती के हर वातावरण में ढूँढ़ता रहा — बर्फ़ में, ज्वालामुखी छिद्रों में, गहरे समुद्र में, नाभिकीय संयंत्रों के भीतर — और एक भी अपवाद नहीं मिला।

जैव रसायन

31 हरे पेड़ के भीतर जमा की हुई आग

> वही जिसने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग बनाई, तो देखो, तुम उसी से आग सुलगाते हो।
>
> **सूरह या-सीन — आयत 80**

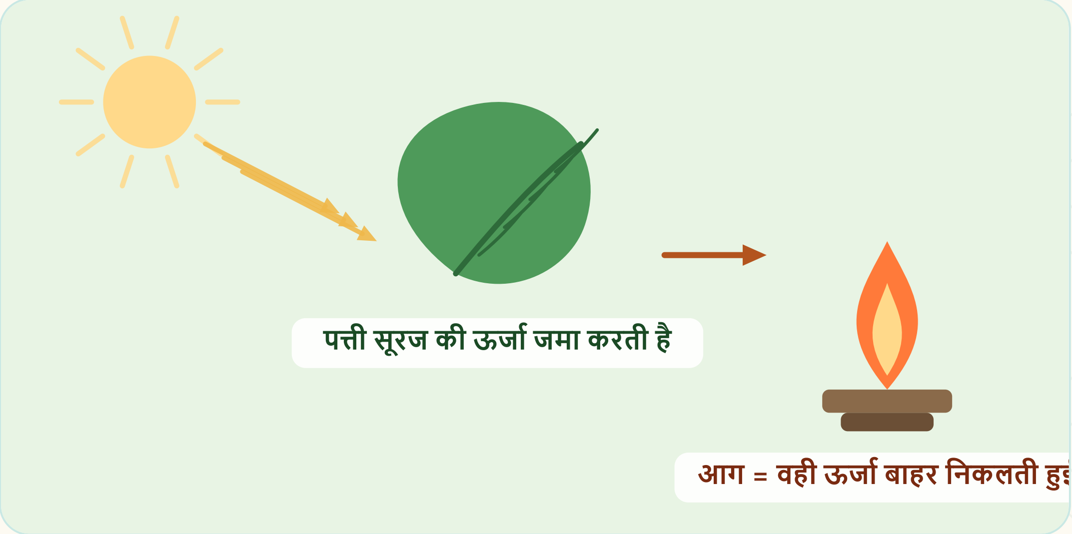

पेड़ सूरज की रोशनी को अपने भीतर जमा करता है, और आग उसे फिर छोड़ देती है

सीधी-सादी बात में

जो आग जलावन की लकड़ी में जलती है वह नई नहीं है — वह **स्वयं सूरज की वही रोशनी** है जिसे पेड़ ने तब जमा किया था जब वह हरा और ज़िन्दा था। जब आप लकड़ी जलाते हैं, तो आप एक पुराने, क़ैद सूरज को आज़ाद कर रहे होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हरा और गीला होना तो हर मन में आग का उलटा है: हरी टहनी नहीं जलती, सूखी जलती है। आग को ख़ास तौर पर **"हरे पेड़"** से जोड़ना रोज़मर्रा के अवलोकन का खंडन करता हुआ लगता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रकाश संश्लेषण: हरी पत्ती सूरज की रोशनी के फ़ोटॉन पकड़ती है और उन्हें शर्करा तथा सेलुलोज़ के अणुओं के बन्धों में जमा रासायनिक ऊर्जा में बदल देती है। और दहन ठीक इसकी उलटी प्रक्रिया है: वह उन बन्धों को तोड़कर ऊर्जा को प्रकाश और ताप के रूप में छोड़ देता है। हम जो भी ईंधन काम में लाते हैं — लकड़ी, कोयला, तेल, गैस — वह किसी हरे पौधे की जमा की हुई सौर ऊर्जा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

निर्धारण ही इसे चमत्कार बनाता है। आयत ने "पेड़ से आग" नहीं कहा, बल्कि "**हरे** पेड़ से" — और हरापन ठीक वही अवस्था है जिसमें प्रकाश संश्लेषण और संचय होता है। आग को उस चरण से जोड़ा गया जिसमें ऊर्जा **जमा की जाती** है, उस चरण से नहीं जिसमें वह जलाई जाती है। सूखी लकड़ी केवल उसी के बल पर जलती है जो उसने हरे रहते इकट्ठा किया था। यह किसी अवस्था और किसी परिणाम के बीच पूरी तरह सही कारण-सम्बन्ध है, और यह 1817 में क्लोरोफ़िल की खोज तक समझा ही नहीं गया था।

न्यायालयिक विज्ञान

32 उँगलियों के निशान — आपकी इकलौती पहचान

> क्या मनुष्य समझता है कि हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी न कर सकेंगे? क्यों नहीं — हम तो उसकी उँगलियों के पोरों तक को ठीक-ठीक बना देने में सक्षम हैं।
>
> **सूरह अल-क़ियामह — आयतें 3-4**

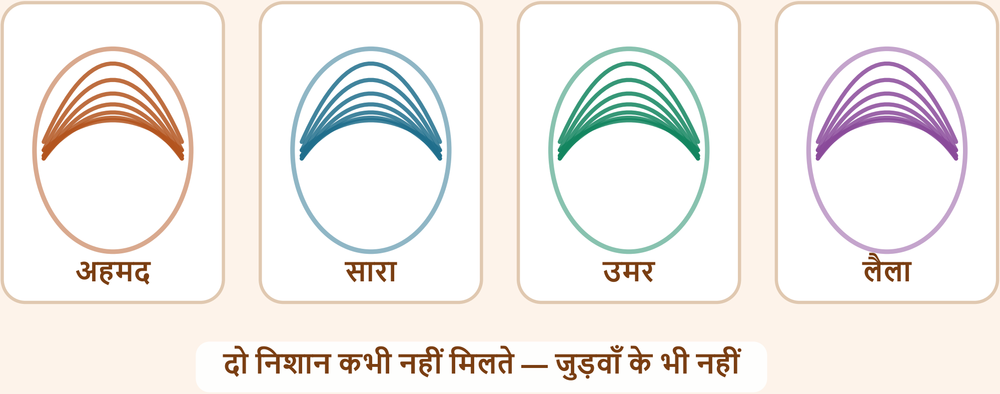

आठ अरब लोग... आठ अरब अलग-अलग उँगलियों के निशान

सीधी-सादी बात में

आपकी उँगलियों के पोरों पर बारीक लकीरें हैं। ये लकीरें **किसी दूसरे मनुष्य में कभी नहीं दोहराई जातीं** — उस जुड़वाँ में भी नहीं जो बाक़ी हर बात में आपसे मिलता हो।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उँगलियों के पोर त्वचा का एक साधारण टुकड़ा थे; न कोई उन्हें देखता था न उन्हें विशिष्ट समझता था। किसी के मन में यह आया ही नहीं कि उनमें वह चीज़ है जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करती है। उँगलियों के निशान 1892 तक आधिकारिक रूप से पहचान के लिए इस्तेमाल नहीं हुए — और तब अर्जेंटीना में।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उँगलियों के पोरों की उभरी लकीरें गर्भ के दसवें सप्ताह में बनती हैं, जीनों और गर्भाशय के भीतर उल्बीय तरल के दबावों के एक जटिल पारस्परिक खेल से — और वे **बिलकुल अनन्य** निकलती हैं। वे जीवन भर अटल रहती हैं — न बदलती हैं न मिटाई जा सकती हैं, और ऊपरी त्वचा जल भी जाए तो वैसी ही लौट आती हैं। पूरी दुनिया की पहचान-व्यवस्थाएँ इन्हीं पर टिकी हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सन्दर्भ ही कुंजी है। आयत मुर्दों के जी उठने और हड्डियों के इकट्ठे किए जाने की बात कर रही है। जो इसे असम्भव समझता है उसे जवाब में यह अपेक्षित था: हाँ, हम उसकी हड्डियाँ इकट्ठी कर सकते हैं। पर जवाब कहीं अधिक सूक्ष्म चीज़ के साथ आया: "क्यों नहीं — हम तो उसकी **उँगलियों के पोरों** तक को ठीक-ठीक बना देने में सक्षम हैं।" शरीर के सारे अंगों में से **उँगलियों के पोरों** को चुन लेना — और वह भी ठीक उस जगह जहाँ बात किसी चीज़ को **हूबहू वैसा ही** लौटा देने की सामर्थ्य की हो रही है — अनन्यता और पहचान के ठिकाने की ओर इशारा है। और यह उसके बाद बारह सदी तक अज्ञात रहा।

उड़ान का विज्ञान

33 पंख फैलाए हुए, और उन्हें समेटते हुए

> क्या उन्होंने अपने ऊपर पक्षियों को नहीं देखा, पंख फैलाए हुए और उन्हें समेटते हुए? उन्हें कोई नहीं थामे हुए सिवाय अत्यन्त कृपाशील के।
>
> **सूरह अल-मुल्क — आयत 19**

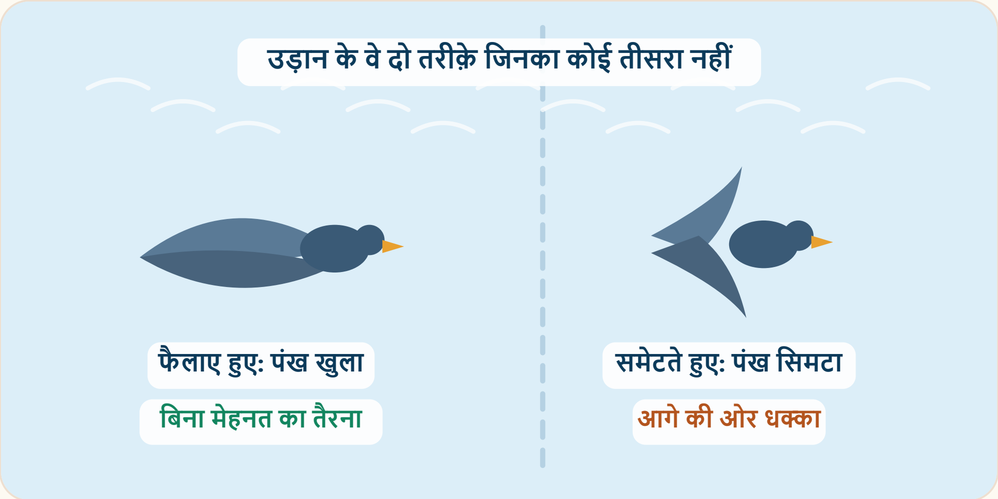

फैले पंख पर तैरना और समेटे हुए पंख से फड़फड़ाना: धरती की सारी उड़ान इन्हीं दो में से एक है

सीधी-सादी बात में

पक्षी केवल दो तरह से उड़ते हैं: या तो वे **अपने पंख फैला** लेते हैं और उन्हें हिलाए बिना हवा में तैरते हैं, या उन्हें **समेटकर** फड़फड़ाते हैं ताकि ख़ुद को आगे धकेलें। क़ुरआन ने दोनों के नाम ले लिए और तीसरा कुछ नहीं जोड़ा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उड़ान देखने की चीज़ थी, विश्लेषण की नहीं। न किसी ने उड़ान के दो प्रकारों में भेद किया, न यह जाना कि कौन-सा उत्थापन देता है और कौन-सा आगे का धक्का। सदियों तक मनुष्य पंख फड़फड़ाने की नक़ल करके उड़ने की कोशिश करता रहा, और असफल रहा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

वायुगतिकी पक्षियों की उड़ान को दो प्रकारों में बाँटती है, तीसरा कोई नहीं: स्थिर, फैले पंख पर **तैरना और मँडराना**, जो ऊपर उठती धाराओं का लाभ उठाता है, और **फड़फड़ाती उड़ान**, जिसमें पंख समेटकर और फैलाकर आगे का धक्का पैदा किया जाता है। अब तक बना हर विमान पहले ही सिद्धान्त पर टिका है — स्थिर, फैला हुआ पंख। मनुष्य उड़ने में तभी सफल हुआ जब उसने फड़फड़ाहट की नक़ल छोड़कर फैलाव अपनाया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उड़ान को दो प्रकारों तक सीमित कर देना पहली बारीकी है। दूसरी **व्याकरण** में है: "फैलाए हुए" कर्तृवाचक कृदन्त के रूप में आया है, जो एक ठहरी हुई, निरन्तर अवस्था बताता है, जबकि "समेटते हैं" वर्तमान काल की क्रिया के रूप में आया है, जो दोहराव और रुकावट बताता है। और भौतिक अन्तर ठीक यही है: फैलाना एक बनी रहने वाली अवस्था है, समेटना एक दोहराई जाने वाली गति। और तीसरी बारीकी: "फैलाए हुए" को "समेटते हैं" से पहले रखा गया — क्योंकि फैला हुआ पंख ही वह बुनियाद है जो उत्थापन पैदा करती है, और फड़फड़ाहट उस पर एक अतिरिक्त चीज़ है।

घाव चिकित्सा

34 गुफ़ा वालों को करवट दिलाना — और शय्या-व्रण से बचाव

> और तुम उन्हें जागा हुआ समझते, हालाँकि वे सोए हुए थे। और हम उन्हें दाईं ओर और बाईं ओर करवट दिलाते रहते थे।
>
> **सूरह अल-कहफ़ — आयत 18**

आज दुनिया के हर अस्पताल की शय्या-देखभाल की वही निर्धारित विधि

सीधी-सादी बात में

गुफ़ा वाले बहुत लम्बे समय तक सोए, और अल्लाह **उन्हें दाएँ-बाएँ करवट दिलाता रहा**। आज की चिकित्सा कहती है: जो रोगी बिना हिले पड़ा रहे उसे **घाव पड़ जाते हैं और मांस गलने लगता है** — और इसका एकमात्र उपाय करवट बदलना है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों की निगाह में नींद शुद्ध विश्राम थी, चाहे जितनी लम्बी हो, हानिरहित। यह पता न था कि **शरीर को एक ही मुद्रा में थामे रखना** ऊतकों को नष्ट कर देता है। इसलिए लम्बी नींद की कहानी में करवट दिलाने का ज़िक्र एक ऐसा विवरण लगता था जिसका कोई प्रयोजन नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शय्या-व्रण (दाब-व्रण): ये तब उठते हैं जब शरीर का भार किसी एक जगह पर दबाव डालता है और वहाँ का रक्त-प्रवाह काट देता है, तो कोशिकाएँ मरती हैं और त्वचा में घाव पड़ता है, फिर माँसपेशी में, फिर हड्डी तक। पूर्ण निश्चलता के **दो घंटों** के भीतर क्षति शुरू हो जाती है। यह लम्बे समय बिस्तर पर रहने की सबसे ख़तरनाक जटिलताओं में है और जान ले सकती है। और दुनिया की हर नर्सिंग-विधि में स्वीकृत बचाव यही है: **रोगी को हर दो घंटे में करवट दिलाइए, दाएँ और बाएँ**।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि आयत करवट का ज़िक्र न यूँ ही करती है, न कहानी की सजावट के तौर पर। वह इस सिलसिले में आता है कि **उनके शरीर उस लम्बी अवधि में सुरक्षित कैसे रहे** — और इसके लिए यह जानना पड़ता है कि निश्चल शरीर सड़ता है, और यह कि **करवट ही उपाय है**। और शब्द तो और भी सूक्ष्म हैं: "दाईं ओर और बाईं ओर" — और यह ठीक वही करवट की मुद्रा है जिसकी चिकित्सा सिफ़ारिश करती है (30 डिग्री का झुकाव), क्योंकि यह त्रिकास्थि और एड़ियों पर से दबाव हटा देती है, जो सबसे ख़तरनाक जगहें हैं। फिर उसी आयत में एक और विवरण: "**और उनका कुत्ता द्वार पर अपनी अगली टाँगें फैलाए हुए था**" — और अगली टाँगें फैलाना विश्राम की मुद्रा है, पहरे की नहीं, और कुत्ता यही करता है जब उसका लेटना लम्बा हो जाए।

35 लोहा — उतारा गया, यहाँ बनाया नहीं गया

> और हमने लोहा उतारा, जिसमें बड़ी शक्ति है और लोगों के लिए फ़ायदे हैं।
>
> **सूरह अल-हदीद — आयत 25**

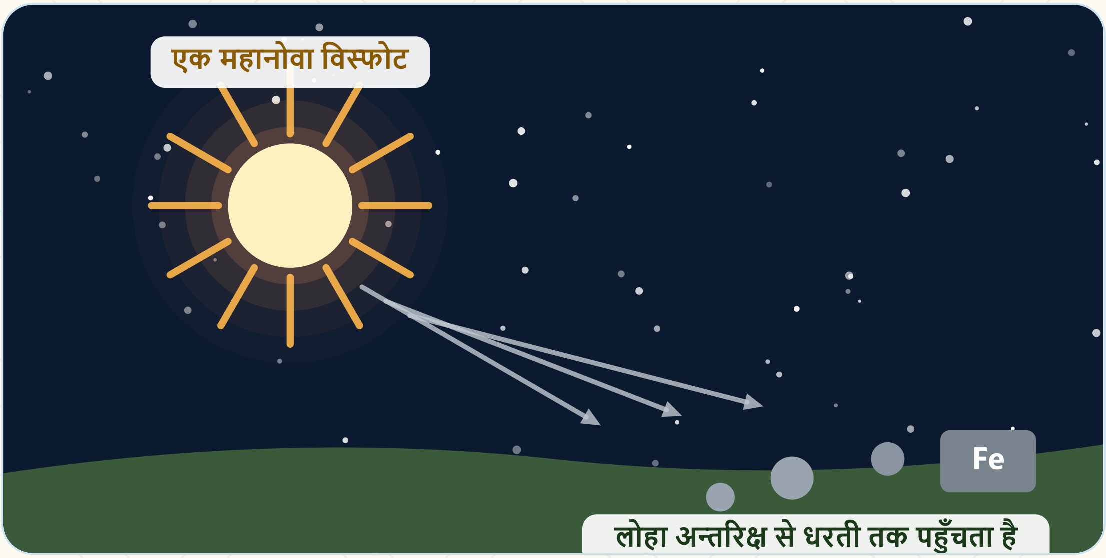

धरती का — और आपके ख़ून का — लोहे का हर परमाणु किसी तारे के भीतर जन्मा था

सीधी-सादी बात में

धरती का सारा लोहा, यहाँ तक कि आपके ख़ून का लोहा भी, यहाँ नहीं बना। वह **अन्तरिक्ष में विशाल तारों के विस्फोट** से आया, और फिर धरती पर गिरा। और क़ुरआन ने "हमने लोहा पैदा किया" नहीं कहा; उसने कहा: **"हमने उतारा"**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों की निगाह में धातुएँ ज़मीन से खोदकर निकाली जाती थीं: वे धरती की थीं और उसी की जाति की थीं। किसी विशेष धातु के **इस ग्रह के बाहर से आने** की कोई कल्पना ही न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

तारों के भीतर का नाभिकीय संलयन लोहे तक के तत्व बनाता है — और वहीं रुक जाता है, क्योंकि लोहा बनाने में **ऊर्जा ख़र्च होती है, निकलती नहीं**। इसलिए कोई साधारण तारा इससे भारी कुछ बना ही नहीं सकता। केवल महानोवा विस्फोट ही लोहे को अन्तरिक्ष में फेंकते हैं। हमारा ग्रह और उसका सारा लोहा उसी तारकीय धूल से इकट्ठा हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआन ने "उतारने" की क्रिया ख़ास तौर पर लोहे के साथ इस्तेमाल की, और वह भी ऐसे प्रसंग में जो रसूलों के भेजे जाने और किताबों के उतारे जाने की बात कर रहा है — यानी उस चीज़ के सन्दर्भ में जो **ऊपर से** आती है। और भौतिक सच्चाई शाब्दिक रूप से यही है। इसमें यह भी जोड़िए कि लोहे की परमाणु संख्या 26 है और द्रव्यमान संख्या 56, कि सूरह अल-हदीद क़ुरआन की 57वीं सूरह है, और कि मानक गिनती में यह 25वीं आयत है। पर सबसे प्रबल प्रमाण एक ही शब्द रहता है: "हमने उतारा।"

36

बाल चिकित्सा

दूध पिलाने के दो पूरे वर्ष

> माताएँ अपने बच्चों को दो पूरे वर्ष दूध पिलाएँ, उसके लिए जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे।
>
> **सूरह अल-बक़रह — आयत 233**

कुरआन — 1,400 वर्ष पहले	विश्व स्वास्थ्य संगठन
24 महीने	**24 महीने**
"दो पूरे वर्ष"	**"दो वर्ष या अधिक"**
उसके लिए जो पूरा करना चाहे	अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सिफ़ारिश

वही संख्या... चौदह सदियों के फ़ासले से

विश्व स्वास्थ्य संगठन की सिफ़ारिश अवधि और सिद्धान्त, दोनों में आयत से मेल खाती है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने स्तनपान की पूरी अवधि **दो पूरे वर्ष** तय की। और विश्व स्वास्थ्य संगठन आज ठीक इतनी ही अवधि की सिफ़ारिश करता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दूध पिलाने की अवधि रिवाज और हालात के अनुसार क़ौमों में बहुत अलग-अलग थी — कुछ महीनों से लेकर कई वर्षों तक, बिना किसी वैज्ञानिक आधार के। बच्चे के विकास और रोग-प्रतिरोध के लिए आदर्श अवधि जानने का कोई साधन ही न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ़ **छह महीने तक केवल माँ का दूध**, फिर ऊपरी आहार के साथ-साथ **दो वर्ष या उससे आगे तक** जारी रखने की सिफ़ारिश करते हैं। यह सिद्ध हो चुका है कि माँ का दूध ऐसे प्रतिरक्षी लिए होता है जो बच्चे की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बनाते हैं, कि वह शिशु-मृत्यु, संक्रमण और मधुमेह घटाता है, और बेहतर बौद्धिक विकास से जुड़ा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी केवल संख्या में नहीं, बल्कि **उसके साथ लगी शर्त** में है: "उसके लिए जो दूध पिलाने की अवधि पूरी करना चाहे"। आयत ने दो वर्ष को कोई कठोर अनिवार्यता नहीं बनाया; उसने उन्हें **पूर्णता की सिफ़ारिश की गई ऊपरी सीमा** बनाया — और यह आधुनिक चिकित्सकीय सिफ़ारिश का ठीक-ठीक वही शब्द-विन्यास है ("दो वर्ष या अधिक", न कि "दो वर्ष अनिवार्य")। फिर उसने और लचीलापन जोड़ा: माता-पिता दोनों की आपसी रज़ामन्दी और परामर्श से जल्दी दूध छुड़ाना जायज़ है, और किसी दूसरी स्त्री से दूध पिलवाना भी जायज़ है। यह संख्या में और सिफ़ारिश की आत्मा में, दोनों में चिकित्सा से मेल खाती है।

प्रसूति विज्ञान

37 खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ

> और खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ; वह तुम पर पकी हुई ताज़ा खजूरें गिराएगा। तो खाओ और पिओ और आँखें ठंडी रखो।
>
> **सूरह मरयम — आयतें 25-26**

आज अन्तिम सप्ताहों में और प्रसव के बाद गर्भवती स्त्रियों के लिए खजूर की सिफ़ारिश की जाती है

सीधी-सादी बात में

एक स्त्री खजूर के पेड़ के नीचे अकेली बच्चे को जन्म देती है, और उससे कहा जाता है: **ताज़ा खजूरें खाओ**। आज की चिकित्सा कहती है कि प्रसव के समय और उसके बाद स्त्री जो कुछ खा सकती है उसमें खजूर सबसे अच्छी चीज़ों में है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ताज़ा खजूर एक जाना-पहचाना और बहुत पसन्द किया जाने वाला भोजन था, पर प्रसव में उसका कोई विशेष चिकित्सकीय प्रभाव ज्ञात न था। प्रसव के बाद स्त्री के लिए आम सलाह विश्राम, गर्मी और शोरबा थी। ठीक उस निर्णायक क्षण पर किसी एक ख़ास फल को चुन लेना एक चौंकाने वाला निर्धारण है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

समकक्ष-समीक्षित पत्रिकाओं में छपे नैदानिक अध्ययन दिखा चुके हैं कि गर्भ के अन्तिम सप्ताहों में खजूर खाना **प्रसव-पीड़ा की अवधि घटाता है और प्रसव-प्रेरण की आवश्यकता कम करता है**। खजूर में तेज़ी से सोख ली जाने वाली फ़्रक्टोज़ और ग्लूकोज़ भरपूर हैं — ठीक वही जो एक माँ को अपनी शक्ति ख़र्च हो जाने के बाद चाहिए — तथा पोटैशियम, लोहा और मैग्नीशियम भी; और उसमें ऐसे यौगिक होते हैं जो **ऑक्सीटोसिन** की तरह काम करते हैं, गर्भाशय को सिकुड़ने में मदद देते हैं और रक्तस्राव घटाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ तीन बातों पर ध्यान दीजिए। पहली, फल निर्धारित है — ख़ास तौर पर खजूर और कुछ नहीं, इस अवस्था के लिए सबसे उपयुक्त सम्भव भोजन। दूसरी, अवस्था निर्धारित है — "**पकी हुई ताज़ा खजूरें**", नरम और ताज़ी, सूखी नहीं, जो जल्दी सोख ली जाती हैं और पचने में आसान हैं। तीसरी, और सबसे विलक्षण: **तने को हिलाने** का आदेश — अपनी सबसे अधिक कमज़ोरी के क्षण में एक स्त्री को हिलने और ज़ोर लगाने का हुक्म दिया जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा प्रसव-पीड़ा के दौरान हिलने-डुलने की सिफ़ारिश ठीक इसीलिए करती है कि वह प्रसव को तेज़ करता है। भोजन, गति और शान्त दिल ("आँखें ठंडी रखो") — एक पूरी की पूरी विधि।

पोषण विज्ञान

38 बहाया हुआ ख़ून और सूअर का मांस क्यों वर्जित हुए

कह दो: जो कुछ मेरी ओर वह्य किया गया है उसमें मैं किसी खाने वाले पर कुछ वर्जित नहीं पाता, सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो, या बहाया हुआ ख़ून, या सूअर का मांस — क्योंकि वह अपवित्र है।

सूरह अल-अनआम — आयत 145

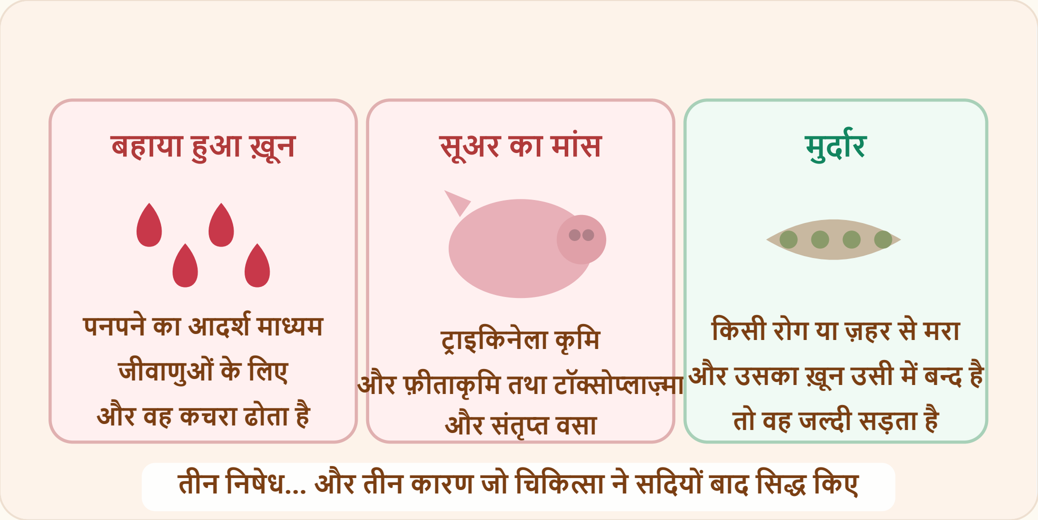

निषेध, उसके कारण के ज्ञान से चौदह सदी पहले आ गया

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने तीन चीज़ें वर्जित कीं: बहता हुआ ख़ून, सूअर का मांस, और वह पशु जो अपने आप मर गया हो। और आज विज्ञान दिखाता है कि इनमें से हर एक **रोग का ज्ञात वाहक** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भोजन रिवाज, स्वाद और उपलब्धता से चुना जाता था। परजीवियों का, जीवाणुओं का, या पशुओं से मनुष्यों तक पहुँचने वाले रोगों का कोई ज्ञान न था। धरती की अधिकतर सभ्यताओं में सूअर का मांस बिना किसी हिचक के खाया जाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ख़ून जीवाणुओं के पनपने का आदर्श माध्यम है, और वह उपापचयी कचरा, हार्मोन तथा विष गुर्दों की ओर ले जाता है। **सूअर** ट्राइकिनेला कृमि का प्रमुख वाहक है, जो माँसपेशी में पुटी बना लेता है और हलके पकाने में बच जाता है; तथा सूअर के फ़ीताकृमि का, जिसके लार्वा मस्तिष्क तक पहुँच सकते हैं; और टॉक्सोप्लाज़्मा का — इसके अलावा उसमें संतृप्त वसा भी अधिक है। **मुर्दार** किसी रोग या ज़हर से मरा हो सकता है, और उसका ख़ून उसके ऊतकों में ही बन्द रह जाता है, इसलिए वह जल्दी सड़ता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सूक्ष्म शर्त है "**बहाया हुआ**"। निषेध हर ख़ून पर नहीं पड़ा, बल्कि उस बहते ख़ून पर पड़ा जो ज़बह के समय बहाया जाता है। जो ऊतकों में पिरोया रह जाता है — मायोग्लोबिन — वह छूट गया, और वैसे भी उसे निकालने का कोई उपाय है ही नहीं। निषेध **ऐसी वैज्ञानिक बारीकी से तौला गया है जो न कम पड़ती है न हद से बढ़ती है**। यही बात ज़बह की विधि पर भी लागू है: उसमें गले की नसों को काटना ज़रूरी है ताकि सारा ख़ून निकल जाए — और मांस-सुरक्षा के मानक आज ठीक यही सिफ़ारिश करते हैं ताकि जीवाणु-भार घटे। एक ऐसे विज्ञान से मेल खाता पूरा क़ानून, जो अभी पैदा ही नहीं हुआ था।

कीट विज्ञान

39 वह चींटी जिसने बोलकर चेतावनी दी

> यहाँ तक कि जब वे चींटियों की घाटी में आ पहुँचे, तो एक चींटी ने कहा: ऐ चींटियो, अपने घरों में घुस जाओ, कहीं सुलैमान और उसकी सेनाएँ तुम्हें कुचल न डालें।
>
> **सूरह अन-नम्ल — आयत 18**

एक चींटी अपनी बस्ती को चेताती है, और पूरी बस्ती अपने बिलों में सिमट जाती है

सीधी-सादी बात में

एक छोटी चींटी ने आती हुई सेना देखी और बाक़ी चींटियों को चेताया कि अपने घरों में चली जाएँ। और विज्ञान कहता है: चींटियाँ सचमुच **ख़तरे के संकेत भेजती** हैं, और पूरी बस्ती एक साथ प्रतिक्रिया करती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुरानी धारणा में पशु एक गूँगा जीव था जिसकी न कोई भाषा थी न कोई संगठन। यह कि एक अकेली चींटी ऐसा वाक्य कह दे जिसमें **एक पुकार, एक आदेश, एक चेतावनी, एक कारण और आक्रमणकारी के लिए एक उज़्र** हो ("और वे जानते नहीं") — सुनने वाले को यह किसी तथ्यात्मक ख़बर से अधिक कोई प्रतीकात्मक कहानी लगती।

आज विज्ञान क्या कहता है?

चींटियाँ धरती के सबसे अधिक संगठित सामाजिक जीवों में हैं, और वे तीन प्रमाणित तरीक़ों से सम्पर्क करती हैं: **रासायनिक फ़ेरोमोन** — हर सन्देश का अपना पदार्थ है, जिसमें ख़तरे का फ़ेरोमोन भी है, जो इतनी तेज़ी से फैलता है कि बस्ती सेकंडों में प्रतिक्रिया करती है; **थपथपाहट और कम्पन**; और **ध्वनि** — यह खोजा गया कि चींटियों के पास एक रगड़-अंग होता है जो निश्चित अर्थ वाली ध्वनियाँ निकालता है, जिन्हें प्रयोगशाला में रिकॉर्ड करके विश्लेषित किया गया है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

छोटे-छोटे विवरण ही प्रमाण हैं। पहला: क्रिया "**कहा**" स्त्रीलिंग में आई है — और जो श्रमिक चींटियाँ बाहर निकलती हैं, पहरा देती हैं और चेतावनी देती हैं वे **सब मादा** हैं, जबकि नरों का सम्भोग के सिवा कोई काम नहीं और वे उसके बाद मर जाते हैं। दूसरा: "**अपने घरों**" में घुसने का आदेश — और चींटी का बिल सचमुच एक घर है, जो कक्षों, सुरंगों और भंडारों में बँटा होता है। तीसरा: "कहीं वे तुम्हें कुचल न डालें" — अरबी क्रिया का अर्थ तोड़ना है, और चींटी का शरीर एक कठोर बाह्यकंकाल है जो **पिचकता नहीं, टूटता है**। एक ही आयत में तीन बारीकियाँ।

खगोल विज्ञान एवं पंचांग

40 तीन सौ वर्ष, और नौ और

> और वे अपनी गुफ़ा में तीन सौ वर्ष रहे, और नौ और बढ़ गए।
>
> **सूरह अल-कहफ़ — आयत 25**

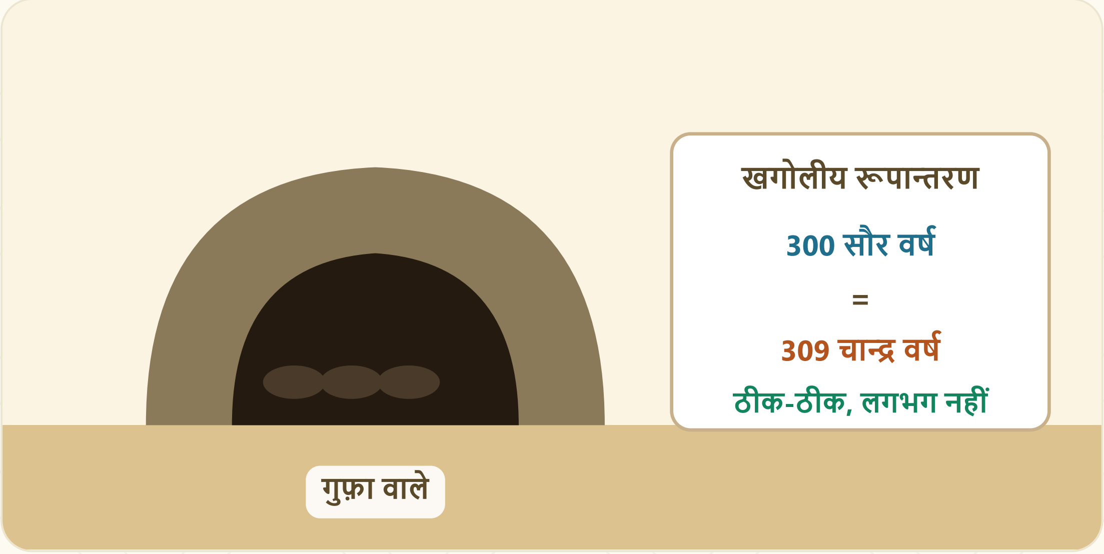

दो पंचांगों का अन्तर तीन शताब्दियों में ठीक नौ वर्ष बैठता है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने कहा वे **तीन सौ वर्ष** रहे, फिर जोड़ा: **"और नौ और बढ़ गए"**। कारण सुन्दर है: तीन सौ सौर वर्ष ठीक तीन सौ नौ चान्द्र वर्षों के बराबर होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग हर क्षेत्र में एक ही पंचांग इस्तेमाल करते थे और पंचांगों के बीच रूपान्तरण नहीं करते थे। किसी गोल संख्या के बाद "नौ" जोड़ना एक विचित्र, निरर्थक बढ़ोतरी लगती थी — कुछ पाठकों ने तो इसे संख्या के बारे में झिझक ही समझ लिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सौर वर्ष 365.2422 दिन का है और चान्द्र वर्ष 354.367 दिन का। तो तीन सौ सौर वर्ष = 109,572.6 दिन। इसे चान्द्र वर्ष की लम्बाई से भाग दीजिए तो **309.2** चान्द्र वर्ष निकलते हैं। अन्तर ठीक नौ वर्ष है। गुफ़ा वाले रोमी माहौल में रहते थे जो सौर पंचांग इस्तेमाल करता था, जबकि क़ुरआन ऐसी क़ौम को सम्बोधित करता है जो चान्द्र पंचांग इस्तेमाल करती है — तो उसने आँकड़ा एक ही साथ दोनों पंचांगों में दे दिया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यदि संख्या मनमानी होती तो "तीन सौ वर्ष" कहकर रुक जाती, या "तीन सौ और कुछ" कहती। पर बढ़ोतरी **ठीक नौ के रूप में निर्धारित** होकर आई — और यही खगोलीय रूपान्तरण का ठीक-ठीक परिणाम है। और शब्दों पर ध्यान दीजिए: "तीन सौ वर्ष **और नौ और बढ़ गए**" — क्रिया बताती है कि ये नौ कोई और अवधि नहीं जो उन्होंने गुज़ारी, बल्कि **गिनती में बढ़ोतरी है, समय में नहीं**: अवधि एक ही है और संख्या पंचांग के साथ बदल जाती है। यही अकेला पठन है जो गणित और भाषा, दोनों में एक साथ टिकता है।

पुरातत्व

41 समूद, जिन्होंने पहाड़ों को तराशकर घर बनाए

> और तुम पहाड़ों को तराशकर, कुशलता से, घर बनाते हो। ... और वे पहाड़ों को तराशकर घर बनाते थे, निश्चिन्त होकर।
>
> **सूरह अश-शुअरा 149 — और सूरह अल-हिज्र 82**

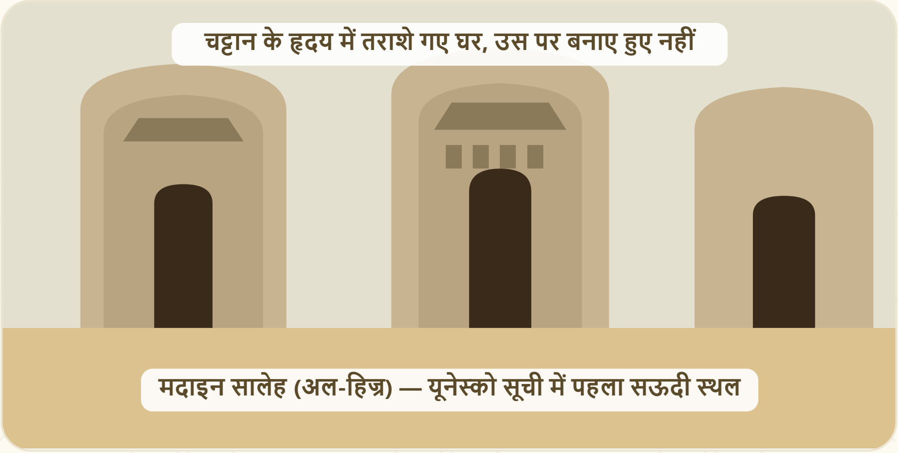

चट्टान के ऊपरी सिरे से नीचे की ओर काटे गए विशाल मुखपट — जिनमें एक भी ग़लती की गुंजाइश नहीं

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने कहा कि समूद की क़ौम ने **अपने घर पहाड़ों के भीतर तराशे** — पत्थर से बनाए नहीं, बल्कि पहाड़ को ही खोखला करके घर बना लिया। वे घर आज भी खड़े हैं और आगन्तुक उन्हें देखते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब में जो निर्माण ज्ञात था वह मिट्टी, पत्थर और खजूर की टहनियों का था। किसी पूरी सभ्यता का अपने घर पहाड़ों के शरीर में तराश लेना सुनने वालों के लिए एक अजनबी विचार था। और क़ुरआन ने एक ऐसी विशेष क़ौम का नाम लिया जिसका ज़िक्र न तौरात में है न यूनानी किताबों में, और उसे एक विशेष निर्माण-तकनीक से जोड़ दिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उत्तरी सऊदी अरब के अल-उला में **मदाइन सालेह (अल-हिज्र)**: बलुआ पत्थर में तराशे गए 130 से अधिक मुखपट, जिनमें कुछ बीस मीटर से भी ऊँचे हैं, और जिनमें स्तम्भ, शीर्ष, कार्निस तथा समूदी और नबती शिलालेख हैं। 2008 में यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्ज होने वाला पहला सऊदी स्थल बना। स्थल का नाम क़ुरआन में आया है: "और निस्सन्देह **अल-हिज्र वालों** ने रसूलों को झुठलाया।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

जो क्रिया आई है वही मामला तय कर देती है: "**वे तराशते हैं**", न कि "वे बनाते हैं"। अरबी में तराशना किसी ठोस पिंड में से पदार्थ निकालना है — जो बनाने का ठीक उलटा है। फिर निर्धारण: "**पहाड़ों में से**" — पहाड़ स्वयं ही घर की सामग्री है। यह एक ऐसी तकनीक का सटीक वर्णन है जिसकी सुनने वालों के आस-पास कोई मिसाल ही न थी। और उसने अर्थ से भरा एक मनोवैज्ञानिक विवरण भी जोड़ा: "**निश्चिन्त होकर**" — ये घर न गिरते हैं, न जलते हैं, और न कोई दुश्मन इन्हें ढा सकता है, क्योंकि वे स्वयं चट्टान हैं। और इसी से आयत की बात तीखी हो जाती है: सबसे बड़ी अभियान्त्रिक सुरक्षा भी उनके किसी काम न आई।

पुरातात्विक शिलालेख

42 खाई वाले, जिन्होंने ईमान वालों के लिए आग खोदी

> मारे गए खाई वाले — ईंधन से भरी आग वाले — जब वे उसके पास बैठे हुए थे, और वे ईमान वालों के साथ जो कुछ कर रहे थे उसके गवाह थे।
>
> **सूरह अल-बुरूज — आयतें 4-7**

एक ऐतिहासिक नरसंहार, जो यमनी शिलालेखों और समकालीन सुरयानी पत्रों में दर्ज है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने एक ऐसी क़ौम का ज़िक्र किया जिसने **एक लम्बी खाई** खोदी, उसमें आग जलाई, ईमान वालों को उसमें फेंका और बैठकर देखती रही। यह एक वास्तविक ऐतिहासिक घटना है जो पत्थर के शिलालेखों में दर्ज है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह घटना अरबों की किताबों में किसी भरोसेमन्द विस्तार के साथ दर्ज न थी, और मक्का में इसका कोई लिखित स्रोत उपलब्ध न था। यह किसी दूसरी क़ौम की, किसी पहले के समय की और किसी दूर की धरती की कहानी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इतिहास लगभग 523 ईस्वी के **नजरान** के नरसंहार की पुष्टि करता है, जब हिमयरी बादशाह **ज़ू नुवास** ने नजरान के ईसाइयों को सताया और जिन्होंने अपना धर्म छोड़ने से इनकार किया उन्हें जला दिया। यह घटना **हिस्न ग़ुराब के शिलालेख** और बिअर हिमा के हिमयरी शिलालेखों में, घटना के समकालीन **बेथ-अर्शम के शमऊन के सुरयानी पत्र** में, तथा बीज़ान्तीनी और इथियोपियाई स्रोतों में दर्ज है। अल-उला और बिअर हिमा में मिले शिलालेख उस अभियान और मारे गए लोगों की संख्याएँ दर्ज करते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

छोटे-छोटे विवरणों की बारीकी ही फ़ैसला करती है। अरबी शब्द "**उख़्दूद**" का अर्थ है ज़मीन में एक लम्बी, सीधी दरार — कोई गोल गड्ढा नहीं। और यह खोदी गई खाइयों के वर्णन से मेल खाता है। "**ईंधन से भरी**" बताता है कि आग को नया ईंधन दिया जा रहा था, वह कोई संयोगवश लगी आग न थी। "**उसके पास बैठे हुए**" और "**गवाह**": अपराधी बैठकर देख रहे थे — और यह विवरण शमऊन के उस पत्र से मेल खाता है जो दर्ज करता है कि बादशाह स्वयं वध-स्थल पर उपस्थित था। और ध्यान दीजिए कि क़ुरआन ने न बादशाह का नाम लिया न क़ौम का — क्योंकि उद्देश्य शिक्षा है, इतिहास-लेखन नहीं।

पुरातत्व

43 सबा और बाँध का टूटना

> फिर उन्होंने मुँह मोड़ लिया, तो हमने उन पर बाँध की बाढ़ भेज दी, और उनके दोनों बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें कड़वे फल और झाऊ थे।
>
> **सूरह सबा — आयत 16**

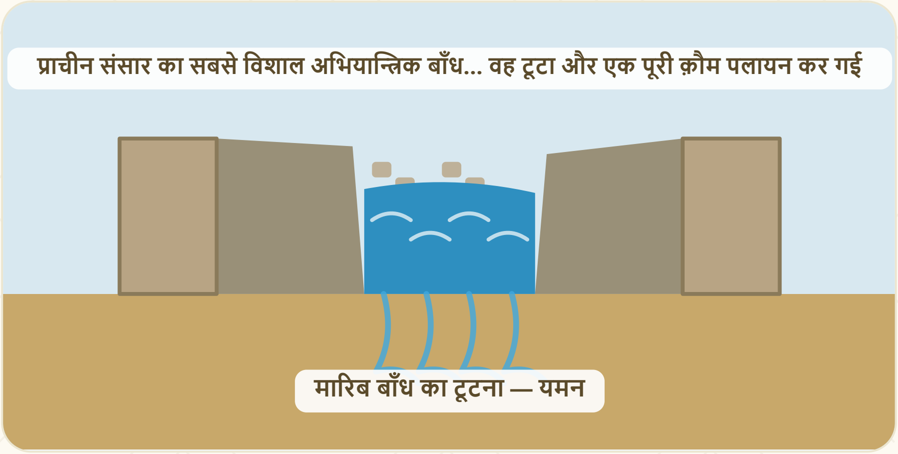

उस विशाल बाँध के अवशेष मारिब में आज तक खड़े हैं

सीधी-सादी बात में

यमन में **सबा** नाम का एक सम्पन्न राज्य था, जो एक बड़े बाँध के सहारे जीता था जो उसके बाग़ों को सींचता था। बाँध टूट गया, बाढ़ सब कुछ बहा ले गई, और बाग़ ऐसे कड़वे पेड़ों में बदल गए जो खाए नहीं जा सकते।

उस समय लोग क्या मानते थे?

सबा अरबों की स्मृति में कविता और कहावत के एक नाम के रूप में जीवित था — "सबा वालों की तरह बिखर गए"। पर न कोई खोदे गए अवशेष थे न पढ़े जा सकने वाले शिलालेख। पश्चिमी इतिहासकार तो इस राज्य के अस्तित्व पर ही सन्देह करते थे और उसे आधी किंवदन्ती गिनते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मारिब का बाँध आज एक खड़ा हुआ स्मारक है: ईसा से लगभग आठवीं सदी पूर्व बना, लगभग 600 मीटर लम्बा, और लगभग दस हज़ार हेक्टेयर सींचता था। उसके टूटने की घटनाएँ स्थल पर मिले **सबाई मुसनद शिलालेखों** में दर्ज हैं — जिनमें अबरहा का प्रसिद्ध शिलालेख भी है जो 548 ईस्वी में बाँध की मरम्मत का वर्णन करता है। लगभग 570-580 ईस्वी के अन्तिम टूटने ने **पूरी-पूरी यमनी क़बीलों के उत्तर की ओर पलायन** का कारण बना — और यह पलायन अरब वंशावली तथा इतिहास में भली-भाँति ज्ञात है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत टूटने पर नहीं रुकी; उसने बाद में उस भूमि का जो हाल हुआ उसका वनस्पतिशास्त्रीय बारीकी से वर्णन किया: "दो ऐसे बाग़ जिनमें **कड़वे फल, झाऊ और थोड़े-से बेर के पेड़**"। पहला कड़वी काँटेदार झाड़ी है, दूसरा झाऊ की एक क़िस्म, तीसरा बेर — और ये ठीक-ठीक **शुष्क, लवणीय वातावरण के पौधे** हैं जो सिंचाई रुक जाने और मिट्टी के खारी हो जाने पर खेती की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। फिर उसने कहा "और **थोड़े-से** बेर के पेड़" — यानी ठीक उसी जगह कमी बताई जहाँ बतानी चाहिए थी, क्योंकि तीनों में बेर सबसे उपयोगी है और सबसे दुर्लभ भी।

पुरातत्व

44 फ़िरऔन का शरीर — एक निशानी बनाकर सुरक्षित रखा गया

> तो आज हम तुझे तेरे शरीर सहित बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक निशानी बने।
>
> **सूरह यूनुस — आयत 92**

फ़िरऔन का शरीर आज शीशे के पीछे रखा है, जहाँ लोग उसे अपनी आँखों से देखते हैं

सीधी-सादी बात में

जब फ़िरऔन समुद्र में डूबा, तो अल्लाह ने कहा कि वह **उसके शरीर** को सुरक्षित रखेगा ताकि बाद में आने वाले उसे देखें और नसीहत लें। वह शरीर आज एक संग्रहालय में मौजूद है जहाँ दुनिया भर से लोग आते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जो आदमी समुद्र में डूबता है उसका शरीर नहीं बचता: मछलियाँ उसे खा जाती हैं, या वह सड़ जाता है, या रेत में खो जाता है। जब यह आयत उतरी तो एक भी अरब को शाही ममीकरण या फ़राऊनों की क़ब्रों के बारे में कुछ पता न था। बल्कि चित्रलिपि भाषा ही पूरी तरह भुला दी गई थी, और वह 1822 तक पढ़ी ही नहीं गई थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1881 में दैर अल-बहरी में शाही ममियों का भंडार मिला, फिर 1898 में अमेनहोतेप द्वितीय की क़ब्र, जिससे नए साम्राज्य के फ़राऊनों के शरीर सामने आए। **मेरनेप्ताह** का शरीर — जो निर्गमन के फ़िरऔन के लिए सबसे प्रसिद्ध दावेदार है — क़ाहिरा के संग्रहालय में सुरक्षित है। एक्स-रे जाँच से ऐसे निष्कर्ष सामने आए जो किसी हिंसक मृत्यु तथा खोपड़ी और गर्दन की चोटों से मेल खाते हैं, और जाँचने वालों ने त्वचा पर नमक के जमाव भी दर्ज किए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत ने केवल “हम तुझे बचा लेंगे” नहीं कहा; उसने निर्धारित किया: “**तेरे शरीर सहित**” — केवल शरीर, आत्मा के बिना। और यह किसी व्यक्ति के बचाव और उसके शव के बचे रहने के बीच एक सूक्ष्म भेद है। फिर उसने कारण भी बताया: “**ताकि तू अपने बाद आने वालों के लिए एक निशानी बने**” — यानी शरीर का बचा रहना ही उद्देश्य है; उसे देखे जाने के लिए तैयार किया जा रहा है। और यह ऐसे रेगिस्तान में उतरा जिसके लोग न ममियों को जानते थे न क़ब्रों को — उन क़ब्रों के खोले जाने और उनके निवासियों के शीशे के कक्षों में रखे जाने से बारह सौ वर्ष पहले।

पाठ की सुरक्षा

45 वे पांडुलिपियाँ जिन्हें कार्बन ने प्रमाणित किया

> निस्सन्देह हमने ही यह उपदेश उतारा, और निस्सन्देह हम ही उसकी रक्षा करने वाले हैं।
>
> सूरह अल-हिज्र — आयत 9

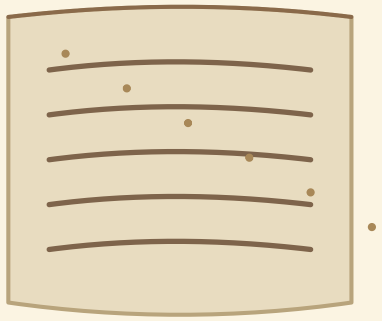

बर्मिंघम की पांडुलिपि

कार्बन-14 से तिथि-निर्धारण

568 – 645 ई.

95% सम्भावना के साथ

उसका पाठ आज के मुसहफ़ से मेल खाता है

बर्मिंघम विश्वविद्यालय — ब्रिटेन

नबी ﷺ के जीवनकाल का या उसके ठीक बाद का चर्मपत्र — और उसका पाठ आज ही का पाठ है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने वादा किया कि वह सुरक्षित और अपरिवर्तित रहेगा। आज हमारे पास **रेडियोकार्बन से तिथि निर्धारित पांडुलिपियाँ** हैं जो मोटे तौर पर नबी ﷺ के समय तक पहुँचती हैं — और उनका पाठ आपके हाथ की प्रति का ही पाठ है, अक्षर दर अक्षर।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर प्राचीन पुस्तक नक़ल और अनुवाद के दौरान जोड़, लोप और परिवर्तन की मार खाती है। सदियों तक हाथ से पहुँचाए गए किसी भी पाठ का यही स्वाभाविक भाग्य है। इसलिए पूर्ण सुरक्षा का दावा **ऐसा दावा था जिसे कोई भी भिन्न पांडुलिपि झुठला सकती थी**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

बर्मिंघम की पांडुलिपि: चर्मपत्र की कार्बन-14 जाँच 2015 में ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय में हुई और तिथि **568 से 645 ईस्वी** के बीच, 95% सम्भावना के साथ, निर्धारित हुई। फिर सनआ का निचला पाठ, ट्युबिंगन की पांडुलिपि, समरक़न्द की प्रति, और इस्तांबुल तथा क़ाहिरा की बड़ी प्रतियाँ। शोधकर्ताओं ने — मुसलमान और ग़ैर-मुसलमान दोनों ने — इन पांडुलिपियों की तुलना आज प्रचलित क़ुरआन से की, और पाठ में सहमति लगभग पूर्ण निकली, सिवाय अक्षरों के आकार से जुड़े वर्तनी-भेदों के, जो न उच्चारण बदलते हैं न अर्थ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सुरक्षा केवल पांडुलिपियों पर नहीं टिकी, बल्कि **एक ऐसी दोहरी व्यवस्था पर टिकी जो मानव इतिहास में अनोखी है**: अत्यन्त सावधान लेखन, और **सीने में याद रखना, जो तवातुर के साथ पहुँचाया जाता है**। हर पीढ़ी में दूर-दूर के देशों में लाखों लोग, किसी एक सत्ता के अधीन हुए बिना, पूरा पाठ कंठस्थ रखते हैं — तो उनका एक अक्षर बदलने पर सहमत हो जाना व्यवहारिक रूप से असम्भव है। और पाठ ने स्वयं **अपने सबसे कमज़ोर क्षण में यह गारंटी घोषित की** — मक्का में एक सताया हुआ समुदाय। किसी पाठ का चौदह सदी तक बिना दो भिन्न प्रतियों के खड़े रहना — धरती की किसी दूसरी किताब में इसकी कोई मिसाल नहीं।

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

46 तुम अवश्य मस्जिदे-हराम में निश्चिन्त होकर दाख़िल होगे

निस्सन्देह अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा स्वप्न दिखाया: तुम अवश्य मस्जिदे-हराम में दाख़िल होगे, यदि अल्लाह ने चाहा, निश्चिन्त होकर, अपने सिर मुँड़ाए और बाल कटाए हुए, बिना किसी डर के।

सूरह अल-फ़त्ह — आयत 27

निश्चिन्त प्रवेश का वादा… और वह भी ठीक उस क्षण पर जब उन्हें रोका गया था

सीधी-सादी बात में

मुसलमानों को मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया गया और वे टूटे हुए मन के साथ रास्ते से लौटा दिए गए। फिर एक आयत आई जिसने उनसे वादा किया कि वे **बैतुल्लाह में निश्चिन्त होकर दाख़िल होंगे**। दो वर्ष बाद वे विजेता बनकर मक्का में दाख़िल हुए, बिना डर और बिना लड़ाई के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हिजरत के छठे वर्ष हुदैबिया में मुसलमानों को बैतुल्लाह से लौटा दिया गया और क़ुरैश से ऐसी शर्तों पर सुलह हुई जिन्हें उनमें से बहुतों ने अन्यायपूर्ण समझा — यहाँ तक कि उमर ने कहा: "हम अपने दीन में यह ज़िल्लत क्यों क़बूल करें?" मक्का अपनी शक्ति के चरम पर था, और मुसलमान संख्या तथा साज़-सामान में कम। क्षितिज पर ऐसा कुछ न था जो किसी निकट विजय का संकेत देता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

हिजरत के आठवें वर्ष (630 ईस्वी) में नबी ﷺ दस हज़ार के सिर पर मक्का में दाख़िल हुए, **बिना किसी उल्लेखनीय लड़ाई के**, और आम माफ़ी की घोषणा की: "जाओ, तुम आज़ाद हो।" मुसलमानों ने निश्चिन्त होकर बैतुल्लाह का तवाफ़ किया, और अपने सिर मुँड़ाए तथा बाल कटाए। यह इस्लामी इतिहास की सबसे भली-भाँति दर्ज घटनाओं में है, और सभी स्रोत इस पर एकमत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत के छोटे-छोटे विवरण ही उसे आशा से उठाकर भविष्यवाणी बना देते हैं। उसने केवल "तुम मक्का जीतोगे" नहीं कहा, बल्कि **प्रवेश का ढंग** भी निर्धारित किया: "**निश्चिन्त होकर**" — न कि किसी क्रूर युद्ध के बाद विजेताओं की तरह; "**बिना किसी डर के**" — पूर्ण सुरक्षा पर ज़ोर; "**अपने सिर मुँड़ाए और बाल कटाए हुए**" — यानी वे पूरे अनुष्ठान इत्मीनान से पूरे करेंगे, और यह केवल नगर पर पूरे नियंत्रण से ही सम्भव है। एक ही वाक्य में चार विवरण, और उनमें से हर एक पूरा हुआ।

एक क़बूल हुई दुआ

47 एक ऐसी घाटी जिसमें कोई खेती नहीं — आज धरती की सबसे भीड़ भरी जगह

> ऐ हमारे रब, मैंने अपनी कुछ सन्तान को एक ऐसी घाटी में बसाया है जिसमें कोई खेती नहीं, तेरे आदरणीय घर के पास ... तो लोगों में से कुछ दिलों को उनकी ओर झुका दे, और उन्हें फलों से रोज़ी दे।
>
> **सूरह इब्राहीम — आयत 37**

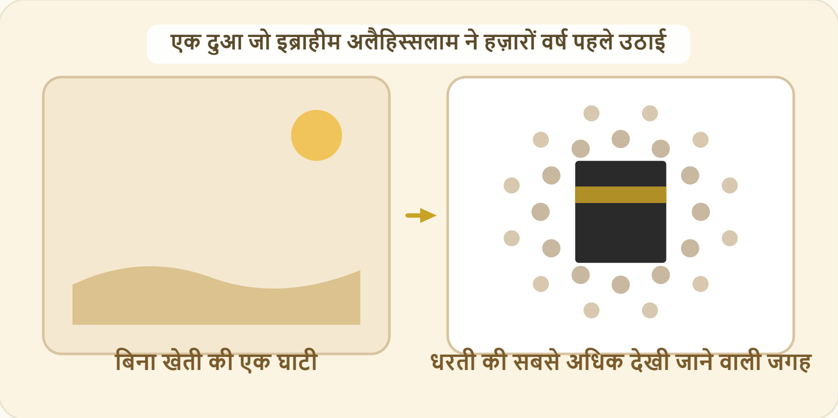

एक ऐसी भूमि जिसमें कुछ नहीं उगता... और जहाँ आपको सारी दुनिया के फल मिलते हैं

सीधी-सादी बात में

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी पत्नी और बच्चे को एक ऐसी घाटी में छोड़ते हुए दुआ की जिसमें **न पानी था न खेती**, कि अल्लाह लोगों के दिलों में उनके लिए लगाव डाल दे और उन्हें फल दे। वही घाटी आज **धरती के चेहरे पर सबसे अधिक देखी जाने वाली जगह** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वह घाटी बंजर पहाड़ों के बीच नंगा रेगिस्तान थी — न कोई नदी, न कोई सोता, और उस समय कोई व्यापारिक मार्ग भी नहीं। उसमें ऐसा कुछ न था जो किसी को अपनी ओर खींचे। और दुआ के शब्द भी विचित्र हैं: उन्होंने न खेती माँगी न ज़मीन के लिए पानी, बल्कि दो अलग चीज़ें माँगीं: **झुकने वाले दिल**, और **फलों की रोज़ी**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आज का मक्का: अकेले हज के मौसम में चन्द दिनों के भीतर बीस लाख से अधिक लोग आते हैं, और उससे भी कई गुना लोग साल भर उमरा करते हैं। और एक अरब अस्सी करोड़ से अधिक लोगों के चेहरे **हर दिन पाँच बार** उसी की ओर मुड़ते हैं। उसकी ज़मीन नहीं बदली: वह आज भी बिना खेती की घाटी है। फिर भी उसके बाज़ारों में आपको सारी धरती के फल मिलते हैं, जो साल भर हर महाद्वीप से आते हैं। और ज़मज़म का कुआँ चार हज़ार वर्षों से एक रेगिस्तान के हृदय में बह रहा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार **स्वयं दुआ की बनावट** में है। अपने परिवार को रेगिस्तान में छोड़ते हुए किसी आदमी के लिए स्वाभाविक बात यही होती कि वह ज़मीन के उपजाऊ हो जाने या वर्षा के बरसने की दुआ करे। पर उन्होंने यह दुआ की कि **लोगों के दिल उनकी ओर झुक जाएँ** — यानी रोज़ी लोगों के रास्ते आए, मिट्टी के रास्ते नहीं। और वे सूक्ष्म भी रहे: “**लोगों में से कुछ दिल**”, सारे लोग नहीं — क्योंकि यदि वे सबके लिए दुआ करते तो वह जगह उन्हें कभी समा ही नहीं सकती थी। फिर उन्होंने “आएँ” के बजाय “**झुक जाएँ**” कहा — और अरबी क्रिया का अर्थ है किसी चीज़ की ओर लगाव और खिंचाव से गिर पड़ना, न कि किसी मजबूर व्यक्ति का पहुँच जाना। और यह उस व्यक्ति का ठीक-ठीक वर्णन है जो काबा को पहली बार देखता है। इतनी बारीकी से गढ़ी गई एक दुआ, जो चार हज़ार वर्षों में अक्षर दर अक्षर पूरी हुई।

48

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

सुराक़ा की कलाइयों में किसरा के कंगन

> उन्होंने सुराक़ा बिन मालिक से कहा: तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम किसरा के दोनों कंगन पहनोगे?
>
> **बैहक़ी, इब्न अब्दुल-बर्र और अन्य की रिवायत**

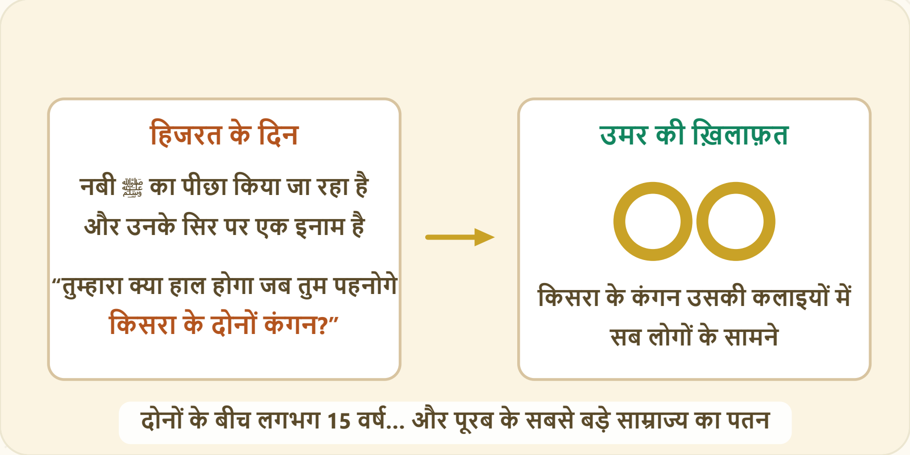

जो आदमी सौ ऊँटों के लिए उन्हें क़त्ल करने निकला था... उसी से फ़ारस के ख़ज़ाने का वादा किया गया

सीधी-सादी बात में

सुराक़ा हिजरत के दिन इनाम की आस में नबी ﷺ का पीछा करते हुए निकला। नबी ﷺ ने उससे कहा: **तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम फ़ारस के बादशाह के दोनों कंगन पहनोगे?** वर्षों बाद उसने सचमुच उन्हें पहना, उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफ़त में।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिस क्षण ये शब्द कहे गए वह **पूरी सीरत का सबसे बेबस क्षण** है: नबी ﷺ अपने ही नगर से निकलते हुए, पीछा किए जाते हुए, अपनी सवारी और अपने साथी के सिवा कुछ न रखते हुए, और उनके पकड़े जाने पर सौ ऊँटों का इनाम रखा हुआ। उस समय फ़ारस धरती के दो सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक था, और उसके बादशाह ने नबी ﷺ का पत्र तिरस्कार से फाड़ दिया था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उमर बिन ख़त्ताब की ख़िलाफ़त में सासानी साम्राज्य गिरा और मदाइन फ़तह हुआ, और किसरा के ख़ज़ाने मदीना लाए गए। उमर ने सुराक़ा बिन मालिक को बुलाया और उसे **किसरा के कंगन, उसका ताज और उसकी पेटी** पहनाई, और उससे कहा: "कहो: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने ये चीज़ें किसरा बिन हुरमुज़ से उतारीं और बनू मुदलिज के एक बद्दू सुराक़ा बिन मालिक को पहना दीं।" यह रिवायत हदीस और इतिहास की किताबों में कई सनदों से आई है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह भविष्यवाणी तीन ऐसी चीज़ें इकट्ठी करती है जो अनुमान से एक साथ नहीं आ सकतीं: **एक नामज़द व्यक्ति** (सुराक़ा), **एक विशेष वस्तु** (किसरा के कंगन, कोई भी माले-ग़नीमत नहीं), और **एक विशाल राजनीतिक घटना** (फ़ारस का पतन और उसके ख़ज़ाने का अरबों तक पहुँचना)। और यह ऐसे आदमी से कही गई जो उस क्षण **पीछा करता हुआ दुश्मन** था, कोई साथी नहीं जिसे शुभ समाचार दिया जा रहा हो। यदि उद्देश्य उसे अपनी ओर मिलाना होता तो कहीं छोटा वादा कहीं बेहतर काम करता। एक पीछा किया जाता हुआ व्यक्ति, जिसके पास उस दिन कुछ भी न था, अपने पीछा करने वाले से धरती के सबसे बड़े साम्राज्य के ख़ज़ानों का वादा करे — यह उसी का कथन है जो ऐसे स्रोत के बारे में निश्चिन्त है जो मानवीय नहीं।

49

धरती का आकार

वह रात को दिन पर लपेटता है

> उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ बनाया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है।
>
> **सूरह अज़-ज़ुमर — आयत 5**

रात और दिन इस गोले के गिर्द एक ऐसे चक्कर में लिपटते हैं जो कभी रुकता नहीं

सीधी-सादी बात में

यहाँ आई अरबी क्रिया गेंद के शब्द से बनी है, और पगड़ी के लपेटने से — यानी **किसी गोल चीज़ के चारों ओर किसी चीज़ को लपेटना**। रात धरती के गिर्द ऐसे लिपटती है जैसे पगड़ी सिर के गिर्द। और लपेटना किसी गोल पिंड पर ही होता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

हर जगह आम धारणा यही थी कि धरती एक चपटी सतह है, और रात दिन की **जगह ले लेती है** और उसे मिटा देती है। यहाँ तक कि जो यूनानी दार्शनिक उसे गोल मानते थे उन्होंने भी इसे रात और दिन के बीच की रेखा की किसी निरन्तर लिपटती गति से नहीं जोड़ा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती एक गोला है (ध्रुवों पर थोड़ी चपटी), और सूरज सदा उसका आधा भाग रोशन करता है। धरती का घूमना **रात और दिन के बीच की विभाजक रेखा** को उसकी सतह पर बिना रुके सरकाता रहता है — यानी रात शाब्दिक अर्थों में गोले के गिर्द लिपटती है, और मिटती नहीं बल्कि खिसकती है। आप इसे धरती के किसी भी जीवंत उपग्रह-चित्र में अपनी आँखों से देख सकते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

रात और दिन के आगे-पीछे आने का वर्णन करने के लिए "गेंद" की जड़ से बनी क्रिया चुनना किसी चपटी सतह पर अर्थ ही नहीं रखता। और इससे भी सूक्ष्म: आयत लपेटने को **दोतरफ़ा, दोनों दिशाओं में** बनाती है — "वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है" — और ऐसा वर्णन वही करेगा जो किसी गोल पिंड पर एक निरन्तर घूर्णन देख रहा हो। और दूसरी जगह: "और उसके बाद उसने **धरती को बिछाया**" — अरबी क्रिया का अर्थ है गोलाई के साथ फैलाना, और इसी जड़ से शुतुरमुर्ग के अंडे का शब्द निकला है।

जल चक्र

50 वह आकाश जो लौटाता है

क़सम है उस आकाश की जो लौटाता है।

सूरह अत-तारिक़ — आयत 11

पानी वाष्प बनकर ऊपर जाता है और वर्षा बनकर लौटता है — एक बन्द चक्र जिसमें कुछ खोता नहीं

सीधी-सादी बात में

आकाश समुद्र से पानी वाष्प के रूप में लेता है, फिर उसे वर्षा बनाकर हमें **लौटा** देता है। आज आप जो भी बूँद पीते हैं वह आपसे पहले किसी ने पी थी, और आपके बाद कोई पिएगा। पानी ख़त्म नहीं होता; वह लौटता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा को **नया** पानी समझा जाता था जिसे अल्लाह आकाश के भंडारों से उतारता है, न कि ऐसा पानी जो स्वयं धरती से लौट रहा हो। समुद्र की वाष्प और गिरती वर्षा के बीच का सम्बन्ध ज्ञात न था; यूरोप में जल चक्र का पूरा वर्णन सत्रहवीं सदी तक नहीं हुआ था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जल चक्र: जल-राशियों से वाष्पन → बादल में संघनन → वर्षण → बहाव → फिर वाष्पन। धरती पर पानी की मात्रा **अरबों वर्षों से अटल** है, और बिना बढ़े-घटे चक्कर काटती रहती है। और वायुमंडल केवल पानी ही नहीं, ऊष्मा और रेडियो तरंगें भी लौटाता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

एक ही शब्द — **"लौटाना"** — पूरा अर्थ उठाए हुए है। अरबी में इसका अर्थ है **किसी चीज़ का वहीं लौट आना जहाँ वह थी**, केवल गिरना नहीं। आकाश को इस विशेषण से पुकारना यह कहना है कि जो कुछ उससे उतरता है वह पहले उसी की ओर चढ़ा था। यह दो शब्दों में पूरे जल चक्र का सार है। और दूसरी जगह इसकी पुष्टि है: "और हमने आकाश से **एक निश्चित मात्रा में** पानी उतारा" — एक तय, नापी हुई मात्रा जो बदलती नहीं।

जल चक्र

51 एक नपा हुआ पानी — न बढ़ता है, न घटता है

> और हमने आकाश से एक निश्चित मात्रा में पानी उतारा, और उसे धरती में ठहरा दिया। और निस्सन्देह हम उसे ले जाने में भी सक्षम हैं।
>
> **सूरह अल-मोमिनून — आयत 18**

समूचे ग्रह पर पानी का एक अटल सन्तुलन

सीधी-सादी बात में

धरती पर पानी की मात्रा **अटल है: वह न बढ़ती है न घटती**। जो पानी किसी डायनासोर ने पिया था वही पानी आज आप पीते हैं। और आयत में "**एक निश्चित मात्रा में**" का अर्थ है: एक गिनी हुई, ठीक-ठीक मात्रा में।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा को नया पानी समझा जाता था जो आकाश के भंडारों से तब उतारा जाता है जब लोगों को ज़रूरत हो। **चक्कर काटती हुई एक बन्द, अटल मात्रा** का विचार किसी संस्कृति में था ही नहीं। सीधी धारणा तो यही बनती है कि समुद्र का पानी वाष्पन से खो जाता है और वर्षा एक ताज़ा बढ़ोतरी है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती पर पानी का आयतन लगभग **1.4 अरब घन किलोमीटर** आँका जाता है, और वह अरबों वर्षों से मोटे तौर पर अटल रहा है। वह वाष्प बनता है, संघनित होता है, गिरता है, बहता है और लौट आता है — एक ऐसे बन्द चक्र में जो न कुछ जोड़ता है न घटाता। वायुमंडल और चुम्बकीय क्षेत्र मिलकर जल-वाष्प को अन्तरिक्ष में भाग जाने से रोकते हैं — और मंगल पर ठीक यही नहीं हुआ, जिसका पानी वाष्प बनकर खो गया और पीछे एक मुर्दा रेगिस्तान छोड़ गया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"**एक निश्चित मात्रा में**" यह शर्त ही चमत्कार है, और जब तक मात्रा अटल न हो इसका कोई अर्थ ही नहीं। यदि पानी हर बार गिरते समय नए सिरे से बनाया जाता, तो उसे नापने का कोई मतलब न होता। और उससे भी सूक्ष्म वह है जो आगे आया: "**और उसे धरती में ठहरा दिया**" — ठहराने का अर्थ है बने रहना और जमा होना, ख़र्च हो जाना नहीं; पानी धरती में थामा गया है, उसके द्वारा चुका नहीं दिया गया। फिर अन्त की चेतावनी: "**और निस्सन्देह हम उसे ले जाने में भी सक्षम हैं**" — यह सन्तुलन एक ऐसी नेमत है जो वापस ली जा सकती है। और वैज्ञानिक आज ठीक यही मंगल पर देखते हैं, उस लोक पर जिसने अपना सारा पानी खो दिया।

52 और धरती को — उसने गोलाई के साथ बिछाया

> और उसके बाद उसने धरती को बिछाया। उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला।
>
> **सूरह अन-नाज़िआत — आयतें 30-31**

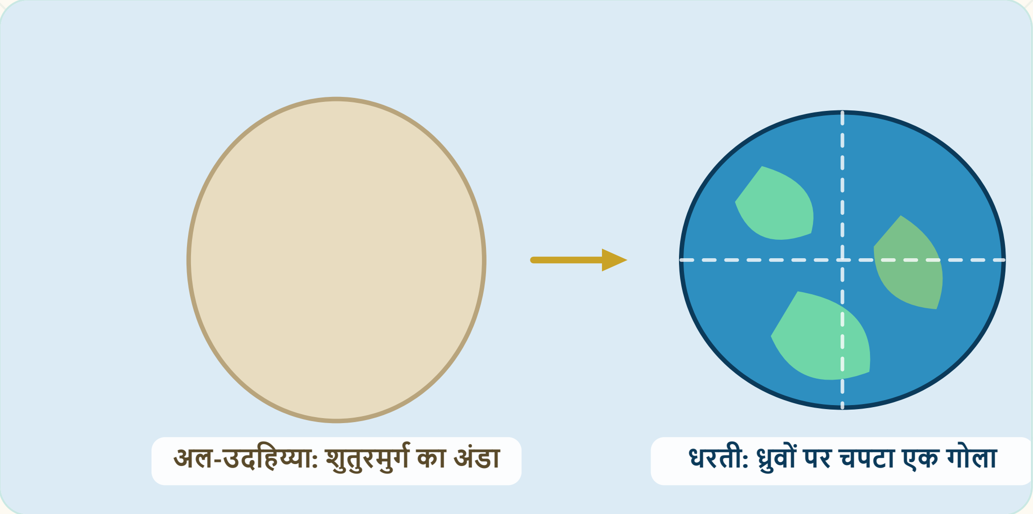

धरती कोई पूर्ण गोला नहीं, बल्कि थोड़ी चपटी है — शुतुरमुर्ग के अंडे जैसी

सीधी-सादी बात में

अरबी क्रिया *दहा* का अर्थ है किसी चीज़ को **गोलाई के साथ** बिछाना। इसी जड़ से उस गड्ढे का शब्द निकला है जिसमें शुतुरमुर्ग अंडा देता है, और स्वयं शुतुरमुर्ग के अंडे का भी। तो धरती आपके चलने के लिए बिछाई हुई है, और अपने असली रूप में गोल तथा चपटी है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आम लोगों के लिए धरती एक चपटी सतह थी और बस। और जो दार्शनिक उसे गोल मानते थे वे उसे **एक पूर्ण गोला** मानते थे। ध्रुवों पर चपटेपन का सुझाव किसी ने भी नहीं दिया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

धरती एक **चपटा गोलाभ** है: भूमध्य रेखा पर उसका व्यास ध्रुव से ध्रुव तक के व्यास से लगभग 43 किलोमीटर अधिक है, और कारण है उसका घूमना। न्यूटन ने इसे 1687 में सैद्धान्तिक रूप से सिद्ध किया, और फ़्रांसीसी अभियानों ने 1736 में इसे मैदान में नापा। जिस सटीक आकार को जिओइड कहते हैं वह सबसे अधिक अंडे के आकार के क़रीब है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भाषा ही मामला तय कर देती है। अरबी शब्दकोशों में *दहा* का अर्थ है बिछाना और फैलाना, और इसी जड़ से शुतुरमुर्ग के घोंसले और उसके अंडे के शब्द निकले हैं। जड़ स्वयं **बिछाने और अंडे जैसे आकार** को एक कर देती है। और ख़ास तौर पर इसी क्रिया को चुनना — "फैलाने" और "बढ़ाने" की उन दो साधारण क्रियाओं के बजाय जिन्हें क़ुरआन दूसरी जगहों पर दूसरे अर्थों में इस्तेमाल करता है — एक ही शब्द में दोनों अर्थ उठा लेता है। और कुंजी यह है कि अगली आयत बता देती है कि बिछाना किसलिए था: "उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला" — यानी बसने की तैयारी, न कि चपटा कर देना।

आधुनिक चिकित्सा

53 शहद में लोगों के लिए शिफ़ा है

> उनके पेटों से एक पेय निकलता है जिसके रंग अलग-अलग हैं, जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है।
>
> **सूरह अन-नहल — आयत 69**

कच्चा शहद

जो चिकित्सा ने सिद्ध किया

- जीवाणुओं को मारता है
- घावों और जलनों का इलाज करता है
- बच्चों की खाँसी शान्त करता है
- प्रतिऑक्सीकारक और प्रतिशोथी
- आज अस्पतालों में इस्तेमाल होता है

चिकित्सकीय शहद की पट्टी यूरोप और अमेरिका में आधिकारिक रूप से स्वीकृत है

चिकित्सकीय शहद की पट्टियाँ आज दवाख़ानों में आधिकारिक अनुमति के साथ बिकती हैं

सीधी-सादी बात में

चौदह सौ वर्ष पहले क़ुरआन ने कहा कि शहद में **शिफ़ा** है। आज शहद अस्पतालों में उन घावों और जलनों के इलाज में इस्तेमाल होता है जिन्हें प्रतिजैविक ठीक नहीं कर सके।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शहद एक मीठा और क़ीमती भोजन था, और लोक-अनुभव उसे कुछ फ़ायदों का श्रेय देता था। पर एक ईश्वरीय कथन के रूप में यह कहना कि उसमें **शिफ़ा** है, दूसरी बात है — ख़ास तौर पर जब वह एक कीड़े के पेट से निकलता हो, जिससे बुद्धि किसी लाभ की अपेक्षा ही न करे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

शहद तीन क्रियाविधियों से एक प्राकृतिक प्रतिजैविक है: उसका शर्करा-घनत्व जीवाणुओं से पानी खींच लेता है और उन्हें मार देता है; उसकी अम्लीयता उनके पनपने से रोकती है; और उसमें मौजूद एंज़ाइम ग्लूकोज़ ऑक्सिडेज़ धीरे-धीरे और लगातार **हाइड्रोजन पेरॉक्साइड** बनाता है। आधिकारिक औषधि एजेंसियों ने पुराने घावों के लिए मनुका शहद की पट्टियों को मंज़ूरी दी है, और विश्व स्वास्थ्य संगठन बच्चों की खाँसी शान्त करने के लिए शहद की सिफ़ारिश करता है। फ़राऊनी क़ब्रों में मिला शहद तीन हज़ार वर्ष बाद भी खाने योग्य था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बारीकी की दो बातें लोक-अनुभव से नहीं समझाई जा सकतीं। पहली: "जिसके **रंग** अलग-अलग हैं" — आज यह ज्ञात तथ्य है कि शहद का रंग और उसके औषधीय गुण पौधे के स्रोत के साथ बदलते हैं, और इसीलिए उसका चिकित्सकीय प्रभाव भी भिन्न होता है। दूसरी: "उनके **पेटों** से निकलता है" — शहद वास्तव में **शहद-उदर** में बनता है, जो पाचक उदर से अलग एक भीतरी थैली है, और वहीं एंज़ाइम मिलाए जाते हैं, उसके बाद वह उगला जाता है। पाठ ने सही शारीरिक स्रोत ठीक-ठीक पहचान लिया।

सूरज की गति

54 सूरज दौड़ रहा है — वह ठहरा हुआ नहीं

> और सूरज अपने ठहरने के ठिकाने की ओर दौड़ रहा है। यह उस प्रभुत्वशाली, सर्वज्ञ का निर्धारण है।
>
> **सूरह या-सीन — आयत 38**

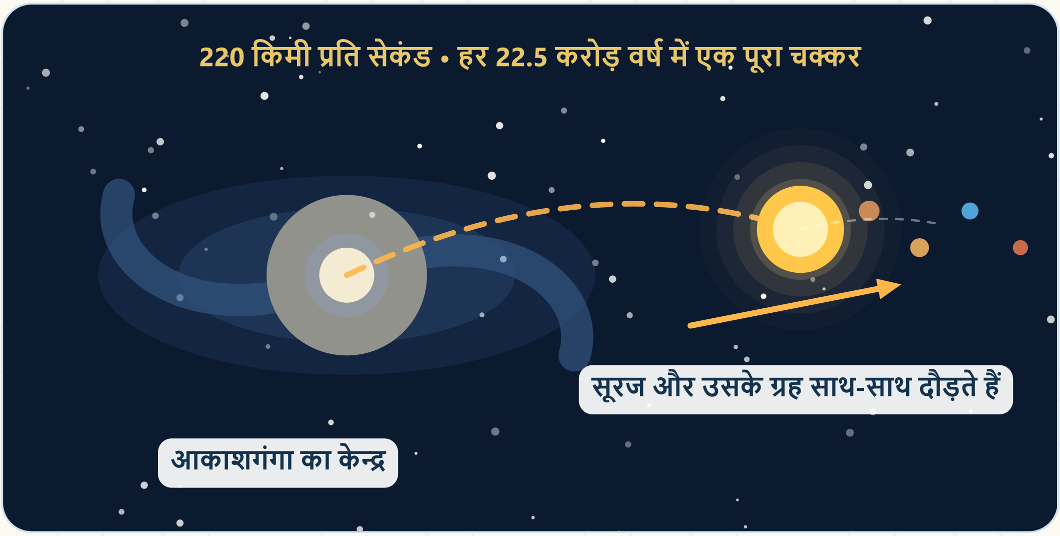

सूरज आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द तैरता है, और अपने सारे ग्रहों को साथ घसीटता है

सीधी-सादी बात में

सूरज खड़ा नहीं है। वह विशाल गति से **दौड़** रहा है, और धरती तथा सारे ग्रहों को अपने साथ घसीटता है — हमारी आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द एक यात्रा पर।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग सूरज को उगते और डूबते देखते थे, और समझते थे कि उसकी गति बस धरती के गिर्द एक चक्कर है। फिर आधुनिक युग आया और उसने कहा: नहीं, घूमती तो धरती है, और **सूरज इस मंडल के केन्द्र में स्थिर है**। सत्रहवीं और अठारहवीं सदी भर यही स्थापित विज्ञान था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सूरज सचमुच चलता है, और तीन प्रमाणित गतियों से: वह लगभग हर 25 दिन में अपनी धुरी पर घूमता है; वह आकाशगंगा के केन्द्र के गिर्द लगभग **220 किलोमीटर प्रति सेकंड** की गति से दौड़ता है, और एक चक्कर 22.5 करोड़ वर्ष में पूरा करता है; और वह आकाश में एक बिन्दु की ओर भी बढ़ रहा है जिसे सौर शीर्ष कहते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस विडम्बना पर ध्यान दीजिए: आयत तब उतरी जब लोग मानते थे कि सूरज उनके गिर्द घूमता है, और उसने कहा कि सूरज दौड़ता है। फिर एक ऐसा युग आया जिसने उसकी हर गति से इनकार किया और कहा "वह ठहरा हुआ है", तो आयत विज्ञान का खंडन करती हुई दिखने लगी। फिर एक और नए विज्ञान ने उसके लिए एक वास्तविक गति सिद्ध की जो **किसी की कल्पना से भी बड़ी** थी। एक ही पाठ जो विज्ञान के दो पूरे पलटावों के आर-पार अटल खड़ा रहा — और यही अपने आप में एक प्रमाण है।

वायुमंडल

55 एक छत जो आपकी रक्षा करती है, और आप उसे देख नहीं सकते

> ❖ और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया, फिर भी वे उसकी निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं। ❖
>
> **सूरह अल-अंबिया — आयत 32**

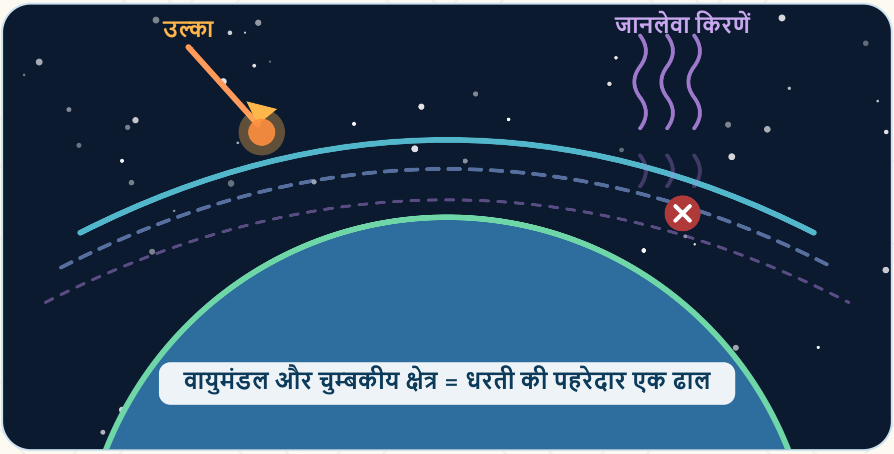

हर दिन हज़ारों उल्काएँ आप तक पहुँचने से पहले जल जाती हैं, जब आप अपने घर में सो रहे होते हैं

सीधी-सादी बात में

आपके सिर के ऊपर एक ऐसी छत है जिसे आप देख नहीं सकते, और वह आपकी रक्षा करती है। हमारी ओर लपकती उल्काएँ पहुँचने से पहले उसी में जल जाती हैं, और वह मार डालने वाली किरणों को रोक देती है। **उसके बिना धरती का हर जीव मर जाता।**

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए "आकाश" या तो ख़ाली शून्य था या एक ठोस गुम्बद जिसमें तारे जड़े हैं। किसी के मन में यह आया ही नहीं कि हमारे ऊपर **एक अदृश्य परत है जो रक्षा का काम करती है**। जलता हुआ टूटता तारा उनकी निगाह में गिरता हुआ तारा था, न कि किसी ढाल में जलती हुई उल्का।

आज विज्ञान क्या कहता है?

वायुमंडल हर दिन अनुमानतः सौ टन अन्तरिक्षीय पदार्थ को पहुँचने से पहले ही जला देता है। ओज़ोन परत जानलेवा पराबैंगनी विकिरण का लगभग 99% सोख लेती है। और धरती का चुम्बकीय क्षेत्र **सौर पवन** को धकेल देता है, जो वरना धरती से उसकी हवा और पानी छीन ले जाती — ठीक वैसे ही जैसे मंगल के साथ हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"छत" और "सुरक्षित" इन दो शब्दों को जोड़ देना ही इसे चमत्कार बनाता है। छत पूर्ण ढँकने का संकेत देती है, और अरबी कर्मवाचक कृदन्त बताता है कि वह **स्वयं भी सुरक्षित है और अपने नीचे वालों की रक्षा भी करती है**। फिर आगे का वाक्य आया: "फिर भी वे उसकी निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं" — यानी इस छत में **निशानियाँ** हैं जिन्हें लोग नज़रअन्दाज़ करेंगे। यह स्पष्ट संकेत है कि उसमें ऐसे अजूबे हैं जो अभी खोजे नहीं गए। और ऐसा ही हुआ: ओज़ोन 1913 तक खोजी नहीं गई थी, और रक्षक चुम्बकीय क्षेत्र 1958 तक।

56

उल्काएँ

वे टूटते तारे जो आकाश की पहरेदारी करते हैं

> और निस्सन्देह हमने निकटतम आकाश को दीपकों से सजाया, और उन्हें शैतानों पर मारने के लिए गोले बनाया।
>
> **सूरह अल-मुल्क — आयत 5**

उल्का तब जलती है जब वह गोली से भी तेज़ वायुमंडल में घुसती है

सीधी-सादी बात में

आयत तारों और चमकते पिंडों को एक साथ दो काम देती है: **आकाश की सजावट**, और **वे गोले जो ऊपर की ओर चोरी से चढ़ने की कोशिश करने वाले को खदेड़ देते हैं**।

उस समय लोग क्या मानते थे?

टूटते तारे अरबों के लिए "गिरते तारे" थे, और दूसरी संस्कृतियों में किसी बादशाह की मृत्यु या किसी बड़ी घटना के संकेत। यह पता न था कि वे **ठोस पिंड हैं जो रगड़ से जलते हैं**। बल्कि आधिकारिक विज्ञान उन्नीसवीं सदी तक इनकार करता रहा कि आकाश से पत्थर गिर सकते हैं, और फ़्रांसीसी अकादमी ऐसा कहने वालों का उपहास करती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

उल्कापिंड चट्टानी और धात्विक पिंड हैं जो दसियों किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से वायुमंडल में घुसते हैं, और उनमें से अधिकतर हवा के दबाव और ताप से पूरी तरह जल जाते हैं। रोज़ाना घुसने वाला द्रव्यमान लगभग **सौ टन** आँका जाता है। उल्कापिंडों का गिरना वैज्ञानिक रूप से 1803 में फ़्रांस की लेग्ल घटना के बाद स्थापित हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत ने आकाशीय पिंडों के दो भिन्न काम अलग किए: स्थिर सजावट, और **चलता हुआ गोला**। जो अरबी शब्द आया है उसका अर्थ विशेष रूप से पत्थरों से मारना है — न रोशनी से, न आग से। आकाश से जलते हुए गिरने वाली चीज़ को फेंका हुआ पत्थर बताना — और वह भी ऐसे समय में जब आधिकारिक विज्ञान सदियों बाद तक भी इनकार करता रहा कि आकाश में पत्थर होते ही हैं — ऐसा वर्णन है जो संयोग नहीं हो सकता।

पुरातत्व

57 ज़ुल-क़रनैन का बाँध — लोहा और पिघला हुआ ताँबा

> मेरे पास लोहे के तख़्ते लाओ — यहाँ तक कि जब उसने दोनों पहाड़ों के बीच बराबर कर दिया तो कहा: धौंको। यहाँ तक कि जब उसने उसे आग बना दिया तो कहा: मेरे पास पिघला हुआ ताँबा लाओ कि मैं उस पर उँडेल दूँ।
>
> **सूरह अल-कहफ़ — आयत 96**

गर्म लोहे पर पिघला ताँबा उँडेलना दरारें भर देता है और जंग से बचाता है

सीधी-सादी बात में

ज़ुल-क़रनैन ने दो पहाड़ों के बीच एक दीवार बनाई: उसने **लोहे के तख़्ते** ठूँसे, फिर आग जलाई यहाँ तक कि वे लाल हो गए, फिर उन पर **पिघला हुआ ताँबा** उँडेल दिया। और यह ठीक-ठीक वही विधि है जिससे एक अत्यन्त कठोर मिश्रधातु बनती है जिसे जंग नहीं लगती।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धातुओं का ज्ञान सरल था: लोहा गर्म करके पीटा जाता, ताँबा साँचों में ढाला जाता। **दो धातुओं को एक ही ढाँचे में जोड़ देने** का विचार किसी निर्माण-तकनीक के रूप में ज्ञात न था, और न यह ज्ञात था कि एक को दूसरे पर तब क्यों उँडेला जाए जब वह गर्म हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

गर्म लोहे पर पिघला ताँबा उँडेलना कुछ वैसा ही है जैसे **ब्रेज़िंग**: तरल ताँबा केशिका क्रिया से टुकड़ों के बीच की दरारों में घुस जाता है, उन्हें कसकर बाँध देता है और हवा बाहर निकाल देता है। परिणाम एक ठोस, जुड़ा हुआ पिंड है जिसमें कोई ख़ाली जगह नहीं। और ताँबे की परत **लोहे को हवा और नमी से अलग कर देती है और इस तरह जंग रोकती है** — यही आज इस्तेमाल होने वाली धातु-परत चढ़ाने का सिद्धान्त है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चरणों का क्रम ही चमत्कार है, और यह ऐसा अभियान्त्रिक क्रम है जिसमें किसी दूसरी तरतीब की गुंजाइश नहीं: 1) **लोहे के तख़्ते** — अरबी शब्द का अर्थ एक बड़ा पिंड है, तो भार उठाने वाला ढाँचा लोहा है। 2) **धौंको** — तापमान बढ़ाने के लिए हवा देना, और भट्ठी में धौंकनी ठीक यही करती है। 3) **यहाँ तक कि उसने उसे आग बना दिया** — लोहा उस लाल ताप तक पहुँचा जिस पर वह जुड़ाव क़बूल करता है। 4) **फिर उस पर पिघला ताँबा उँडेलना**। यदि ताँबा ठंडे लोहे पर उँडेला जाता तो कोई जुड़ाव बनता ही नहीं। पाठ उँडेलने से पहले की ताप-अवस्था का वर्णन करता है — और यही पूरी प्रक्रिया का हृदय है।

58

कक्षाएँ

न सूरज चाँद को जा पकड़ सकता है

> न सूरज के लिए यह सम्भव है कि वह चाँद को जा पकड़े, और न रात दिन से आगे निकल सकती है, बल्कि हर एक अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहा है।
>
> **सूरह या-सीन — आयत 40**

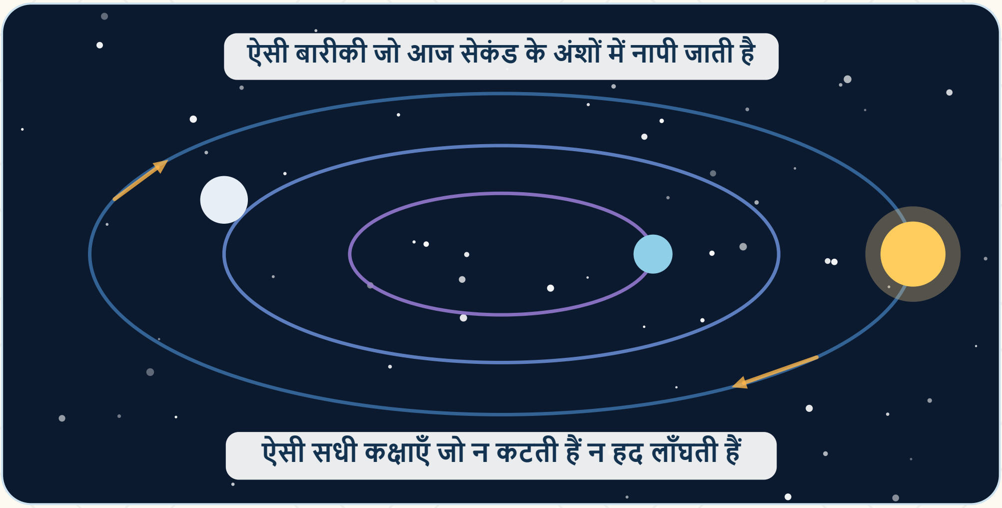

हर पिंड अपने ही रास्ते पर बना रहता है, न उसे पार करता है न किसी दूसरे तक पहुँचता है

सीधी-सादी बात में

आकाशीय पिंड विशाल गति से चलते हैं, फिर भी **उनमें से कोई किसी दूसरे से नहीं टकराता**, और रात न दिन से आगे निकलती है न पीछे रहती है। एक ऐसी व्यवस्था जो पलक झपकने भर को भी नहीं लड़खड़ाती।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आकाशीय पिंडों की गति का, उनकी कक्षाओं का, या उनकी गति के नियमों का कोई ज्ञान न था। ग्रहणों को क्रोध या चेतावनी बताया जाता था, न कि **ऐसी नियत घड़ियाँ जिन्हें सदियों पहले गिना जा सकता है**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आकाशीय पिंडों की कक्षाएँ ऐसी बारीकी से नियंत्रित हैं जो खगोलविदों को चकित करती है। धरती सूरज के गिर्द अपनी कक्षा में 30 किलोमीटर प्रति सेकंड चलती है, और चाँद धरती के गिर्द घूमता है, और कोई टक्कर नहीं होती। व्यवस्था की बारीकी इतनी है कि **आज से एक हज़ार वर्ष बाद के किसी ग्रहण की तिथि सेकंड तक गिनी जा सकती है**। सारा अन्तरिक्ष-नौवहन इसी नियमितता पर खड़ा है: आज छोड़ा गया एक यान सात वर्ष बाद किसी ग्रह से पहले से गिने हुए बिन्दु पर जा मिलता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

"**यह सम्भव ही नहीं**" यही बारीकी का बिन्दु है। वह केवल घटित होने का नहीं, बल्कि **सम्भावना** का इनकार करता है — यानी व्यवस्था स्वयं इसकी इजाज़त नहीं देती, न कि बस संयोग से ऐसा होता नहीं। और **भौतिक नियम** का अर्थ ठीक यही है। फिर विवरण देखिए: उसने सूरज के चाँद तक पहुँचने का इनकार किया — और वे दोनों दो भिन्न कक्षाओं में हैं; और रात के दिन से आगे निकलने का इनकार किया — और ये दोनों धरती के घूमने से निकलते हैं। भिन्न कारणों वाली दो परिघटनाएँ, एक ही नियम के नीचे इकट्ठी: "**हर एक अपनी-अपनी कक्षा में तैर रहा है**" — दोनों का कारण एक ही है: हर पिंड अपने ही रास्ते पर थामा हुआ।

सूक्ष्म सन्तुलन

59 तुम रहमान की रचना में कोई बेतरतीबी नहीं देखोगे

> जिसने सात आकाश परतों में बनाए। तुम रहमान की रचना में कोई बेतरतीबी नहीं देखोगे। तो फिर निगाह दौड़ाओ — क्या तुम्हें कोई दरार दिखती है?
>
> **सूरह अल-मुल्क — आयत 3**

- **गुरुत्वाकर्षण: ज़रा-सा बढ़ जाता तो ब्रह्मांड पिचक जाता**
- **नाभिकीय बल: ज़रा-सा घट जाता तो एक तत्व भी न बनता**
- **ब्रह्मांड का आरम्भिक घनत्व: कल्पना से परे एक सन्तुलन**
- **श्याम-ऊर्जा स्थिरांक: भौतिकी की सबसे बारीक संख्या**

“तो फिर निगाह दौड़ाओ — क्या तुम्हें कोई दरार दिखती है?”

ब्रह्मांड के स्थिरांक ऐसी सीमा पर सधे हैं जो किसी विचलन को सहन नहीं करती

सीधी-सादी बात में

आयत आपको चुनौती देती है कि ब्रह्मांड में निगाह डालिए और उसमें **कोई दोष, दरार या कमी** ढूँढ़िए। फिर दोहराती है: दूसरी बार देखिए। और आज विज्ञान कहता है कि ब्रह्मांड के स्थिरांक ऐसी बारीकी से सधे हैं जिस पर बुद्धि मुश्किल से विश्वास करती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ब्रह्मांड को एक आम, सौन्दर्यपरक निगाह से देखा जाता था। “भौतिक स्थिरांक” की कोई धारणा ही न थी, और न ऐसे ब्रह्मांड की जो संख्याओं पर टिका हो, और उनमें से किसी एक में ज़रा-सा बदलाव सब कुछ गिरा दे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

आधुनिक भौतिकी इसे **सूक्ष्म सन्तुलन** कहती है। यदि गुरुत्वाकर्षण बल का मान ज़रा-से अंश से भिन्न होता, तो या तो तारे बनते ही नहीं या ब्रह्मांड तुरन्त ढह जाता; यदि प्रबल नाभिकीय बल एक छोटे-से अंश से भिन्न होता, तो न कार्बन होता न ऑक्सीजन; और श्याम-ऊर्जा स्थिरांक को **समूची भौतिकी की सबसे बारीकी से सधी हुई संख्या** कहा जाता है। बड़े भौतिकविदों ने इसे स्वीकार किया है — उनमें फ़्रेड हॉयल भी, जिन्होंने कहा कि जो उन्होंने देखा वह ऐसा लगता था मानो “किसी परम बुद्धि ने भौतिकी से छेड़छाड़ की हो”।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत केवल एक कथन नहीं, बल्कि **जाँचने और जाँच दोहराने का स्पष्ट निमंत्रण** है: “तो फिर निगाह दौड़ाओ”, फिर “दो बार और निगाह दौड़ाओ”। यानी वह इस बात पर दाँव लगाती है कि और क़रीब से देखना **उसकी पुष्टि करेगा, उसे पलटेगा नहीं**। और शाब्दिक रूप से यही हुआ: अवलोकन के यंत्र जितने सूक्ष्म होते गए, सन्तुलन उतना ही प्रकट होता गया। “**दरार**” का अरबी शब्द फटन और टूट का है, और “**बेतरतीबी**” का अर्थ है अव्यवस्था और असन्तुलन। तो आयत ब्रह्मांड से दो गुणों का इनकार करती है: अनुपात में दोष और ढाँचे में दरार — और कोई भौतिकविद् जब किसी ब्रह्मांडीय प्रतिरूप को परखता है तो ठीक यही ढूँढ़ता है।

प्रकाश और समय

60 तारों के स्थानों की क़सम — तारों की नहीं

> तो मैं तारों के स्थानों की क़सम खाता हूँ — और निस्सन्देह यह एक बड़ी क़सम है, यदि तुम जानो।
>
> **सूरह अल-वाक़िआ — आयतें 75-76**

तारे का प्रकाश वर्षों चलता है, तो आप उसका पुराना स्थान देखते हैं, वह नहीं जहाँ वह अब है

सीधी-सादी बात में

जब आप रात में किसी तारे को देखते हैं, तो आप तारे को नहीं देख रहे होते! आप **वह प्रकाश देख रहे होते हैं जो उससे वर्षों पहले चला था**, शायद हज़ारों वर्ष पहले। हो सकता है वह तारा बुझकर ख़त्म भी हो चुका हो, और आप उसे अब भी देख रहे हों।

उस समय लोग क्या मानते थे?

किसी के मन में यह आया ही नहीं कि प्रकाश की कोई गति भी होती है। प्रकाश तुरन्त, समय के बाहर, दिखाई देता था। तारा वही था जो आप देखते थे, उसी जगह जहाँ आप उसे देखते थे, और बात ख़त्म।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रकाश की गति लगभग 3,00,000 किलोमीटर प्रति सेकंड है — तेज़ ज़रूर, पर **सीमित**। सूरज के बाद सबसे नज़दीकी तारा 4.2 प्रकाश-वर्ष दूर है, और जो कुछ हम नंगी आँख से देखते हैं उसमें कुछ हज़ारों प्रकाश-वर्ष दूर है। तो आज रात जो आकाश आप देखते हैं वह **पुरानी तस्वीरों का एक अलबम** है, जिसका हर तारा किसी अलग समय का है। ऐसे तारे सचमुच देखे गए हैं जिनके विस्फोट सदियों पहले हुए और जिनका प्रकाश अब भी हम तक पहुँच रहा है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़सम स्वयं तारों की नहीं, बल्कि **उनके स्थानों की** खाई गई — और यह ऐसा निर्धारण है जिसका कोई प्रयोजन ही नहीं जब तक किसी तारे और उसके स्थान के बीच कोई वास्तविक अन्तर न हो। फिर अगली आयत इसे साफ़ कह देती है: "और निस्सन्देह यह एक बड़ी क़सम है, **यदि तुम जानो**" — यानी इस क़सम की महानता किसी ऐसे ज्ञान पर टिकी है जो सुनने वालों के पास न था। एक पाठ जो खुलकर कह रहा है: यहाँ एक भेद है जिसे तुम बाद में जानोगे। और वह जान लिया गया।

61

पारिस्थितिकी

तुम्हीं जैसे समुदाय

और धरती पर चलने वाला कोई जीव नहीं, और न अपने दोनों पंखों से उड़ने वाला कोई पक्षी, मगर वे तुम्हीं जैसे समुदाय हैं।

सूरह अल-अनआम — आयत 38

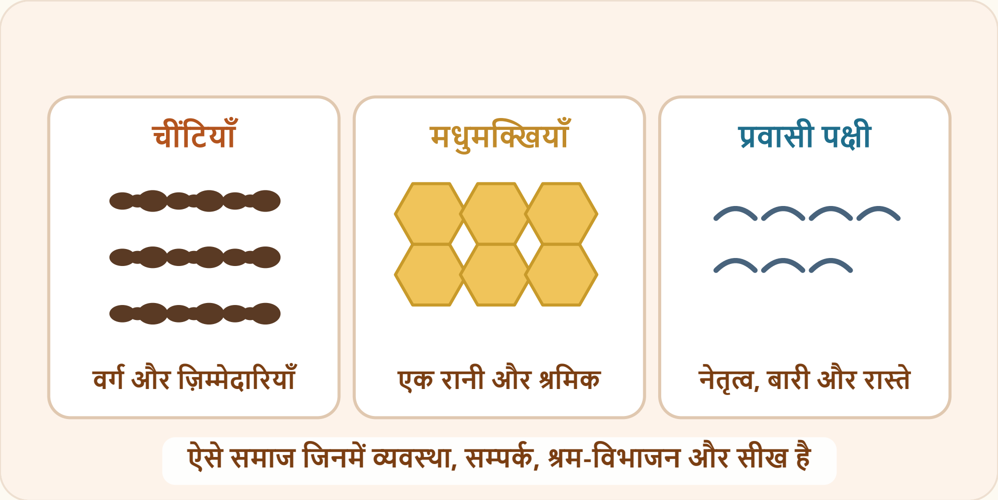

पशु बिखरे हुए व्यक्ति नहीं, बल्कि संगठित समाज हैं

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने पशुओं को **“समुदाय”** कहा — और समुदाय वह समूह है जिसकी कोई व्यवस्था, कोई भाषा और कोई परम्पराएँ हों। और उसने कहा कि वे “तुम्हीं जैसे” हैं। आज विज्ञान सिद्ध करता है कि पशुओं के अत्यन्त संगठित समाज होते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुरानी धारणा में पशु विशुद्ध रूप से सहजवृत्ति वाला था, न कोई संगठन, न सम्पर्क, न सीखना। उसके और मनुष्य के बीच की खाई निरपेक्ष थी। उसे “समुदाय” कहना — वह शब्द जो क़ानूनों और व्यवस्थाओं वाली क़ौमों के लिए इस्तेमाल होता है — विचित्र था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पशु-व्यवहार विज्ञान ने सच्चे समाजों का अस्तित्व सिद्ध किया है: चींटियों और मधुमक्खियों में कठोर श्रम-विभाजन; व्हेलों और डॉल्फ़िनों में जटिल सम्पर्क-भाषाएँ, जिनमें **क्षेत्रीय बोलियाँ** तक हैं; चिम्पांज़ियों में सीखकर पहुँचाई जाने वाली संस्कृतियाँ; पक्षियों में संगठित प्रवास और बारी-बारी से नेतृत्व; और पत्ती काटने वाली चींटियों में तो “कृषि” की व्यवस्था तक, जो भूमिगत बाग़ानों में कवक उगाती हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार दो शब्दों में है। “**समुदाय**”: अरबी में एक संगठित समूह जिसकी कोई साझा चिन्ता हो, केवल झुंड नहीं। और “**तुम्हीं जैसे**”: अपनी अलग व्यवस्थाओं वाले समाज होने में तुम्हारे जैसे — बुद्धि और नैतिक उत्तरदायित्व में नहीं। हाल तक आधिकारिक विज्ञान पशुओं को संस्कृति या भाषा देने से इनकार करता रहा और उसे अवैज्ञानिक मानवीकरण गिनता रहा — फिर प्रमाणों के आगे पीछे हट गया। रहा “अपने **दोनों पंखों से** उड़ने वाला” वाक्यांश, तो वह एक चौंकाने वाला निर्धारण है, जो उसे अलग कर देता है जो बिना पंखों के उड़ता है।

प्राणि विज्ञान

62 सबसे कमज़ोर घर — और मादा मकड़ी

जो लोग अल्लाह के सिवा दूसरों को संरक्षक बनाते हैं उनकी मिसाल उस मकड़ी जैसी है जो एक घर बनाती है। और निस्सन्देह सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का घर है।

सूरह अल-अनकबूत — आयत 41

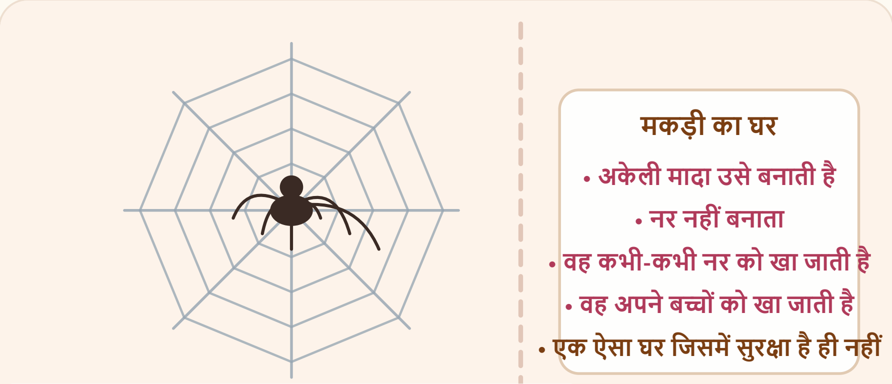

उसका धागा इस्पात से मज़बूत... और उसका घर सबसे कमज़ोर घर

कमज़ोरी धागे में नहीं, बल्कि इस "घर" के भीतर के रिश्तों में है

सीधी-सादी बात में

मकड़ी का घर अकेली **मादा** बनाती है; नर का उसमें कोई हाथ नहीं। और वह सबसे कमज़ोर घर इसलिए नहीं कि धागा कमज़ोर है — बल्कि इसलिए कि वह **ऐसा घर है जिसमें न दया है न सुरक्षा**: मादा अपने साथी और अपने बच्चों तक को खा सकती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मकड़ी हर घर का जाना-पहचाना जीव है, और उसका जाला कमज़ोरी की एक सीधी-सादी तस्वीर। पर जाला कौन बनाता है — नर या मादा — इसका भेद, और जाले के भीतर चलने वाला यह भक्षण, ज्ञात न थे — ये ऐसे विवरण हैं जो केवल सावधान वैज्ञानिक अवलोकन में ही दिखते हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मकड़ी के जाले **विशेष रूप से मादाएँ ही बनाती हैं**; अधिकतर प्रजातियों में नर मकड़ी शिकार का जाला बुनती ही नहीं, बल्कि मादा की तलाश में भटकती है। दर्जनों प्रजातियों में मादा सम्भोग के बाद नर को मार देती है और खा जाती है, और दूसरी प्रजातियों में बच्चे अपनी माँ को खा जाते हैं या वह उन्हें खा जाती है। रहा स्वयं धागा, तो वह ज्ञात सबसे मज़बूत पदार्थों में है: अपने भार के हिसाब से इस्पात से भी मज़बूत।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यदि कमज़ोरी धागे की मज़बूती में होती, तो विज्ञान इस पाठ को झुठला देता, क्योंकि मकड़ी का रेशम प्रकृति की सबसे कठोर चीज़ों में सिद्ध हो चुका है। पर आयत **घर** की बात करती है, धागे की नहीं, और अरबी में घर का अर्थ परिवार, ठिकाना और सुरक्षा है। पूरा सन्दर्भ **एक ऐसे बिगड़े रिश्ते** का है जो अपने थामने वाले के किसी काम नहीं आता। तो वर्णन सामाजिक रूप से सूक्ष्म है, भौतिक रूप से नहीं। और इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि क्रिया स्त्रीलिंग में आई: "**वह** एक घर बनाती है" — क्योंकि बनाती वही है, नर नहीं।

63

सूक्ष्म जीव विज्ञान

एक पंख में रोग है और दूसरे में दवा

यदि तुममें से किसी के पेय में मक्खी गिर जाए तो उसे पूरी डुबो दे फिर निकाल दे, क्योंकि उसके एक पंख में रोग है और दूसरे में दवा।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

जीवाणुभोजी धरती के सबसे अधिक संख्या वाले जीव हैं, और उनका एकमात्र काम जीवाणुओं को मारना है

सीधी-सादी बात में

मक्खियाँ कीटाणु ढोती हैं — यह तो ज्ञात है। पर हदीस कुछ और कहती है: वह **उन कीटाणुओं को मारने वाली चीज़** भी ढोती है। और विज्ञान ने सचमुच ऐसे सूक्ष्मदर्शी जीव खोजे हैं जिनका एकमात्र काम जीवाणुओं का शिकार करना है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जीवाणुओं का कोई ज्ञान ही न था — वे 1676 तक देखे ही नहीं गए थे, ल्यूवेनहोक के सूक्ष्मदर्शी से। तो मक्खियों के ढोए हुए किसी "रोग" की बात करना कीटाणु सिद्धान्त से एक हज़ार वर्ष पहले की बात है। और उसके साथ-साथ **दवा** का होना — इसे समझने के लिए तो कोई ढाँचा ही मौजूद न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

जीवाणुभोजी (बैक्टीरियोफ़ेज): सूक्ष्म विषाणु जो केवल जीवाणुओं को संक्रमित करते और मार डालते हैं, जिन्हें 1915 में ट्वोर्ट और 1917 में देरेल ने खोजा। वे **धरती के चेहरे पर सबसे अधिक संख्या वाले जीव** हैं, और वे वहीं केन्द्रित होते हैं जहाँ जीवाणु भरपूर हों — यानी मक्खियों पर और उनके ठिकानों में। वे सचमुच आम घरेलू मक्खी पर पाए गए हैं। फ़ेज-चिकित्सा आज एक स्थापित चिकित्सकीय विशेषज्ञता है, जो उन मामलों में इस्तेमाल होती है जहाँ प्रतिजैविक असफल हो जाएँ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

हदीस ने केवल दवा का ज़िक्र नहीं किया; उसने **एक व्यावहारिक विधि** बताई: पूरी डुबोना। और महत्व यहीं है — क्योंकि डुबोने का कोई अर्थ ही नहीं जब तक जीवाणु-रोधी तत्व को असर करने के लिए तरल में छोड़ना ज़रूरी न हो। फिर **दो पंखों** के बीच का भेद: एक हानि लिए हुए और दूसरा उपाय। यह ऐसा विभाजन नहीं जो शब्द गढ़ने वाले के मन में आए; अपेक्षित शब्द तो यही थे कि "मक्खी में रोग भी है और दवा भी"। हर एक को एक विशेष पंख से जोड़ देना एक परखा जा सकने वाला निर्धारण है — और विज्ञान आकर उसकी पुष्टि करता है।

64

धरती की पपड़ी

वह धरती, जो दरारों वाली है

क़सम है उस आकाश की जो लौटाता है, और उस धरती की जो फटती है।

सूरह अत-तारिक़ — आयतें 11-12

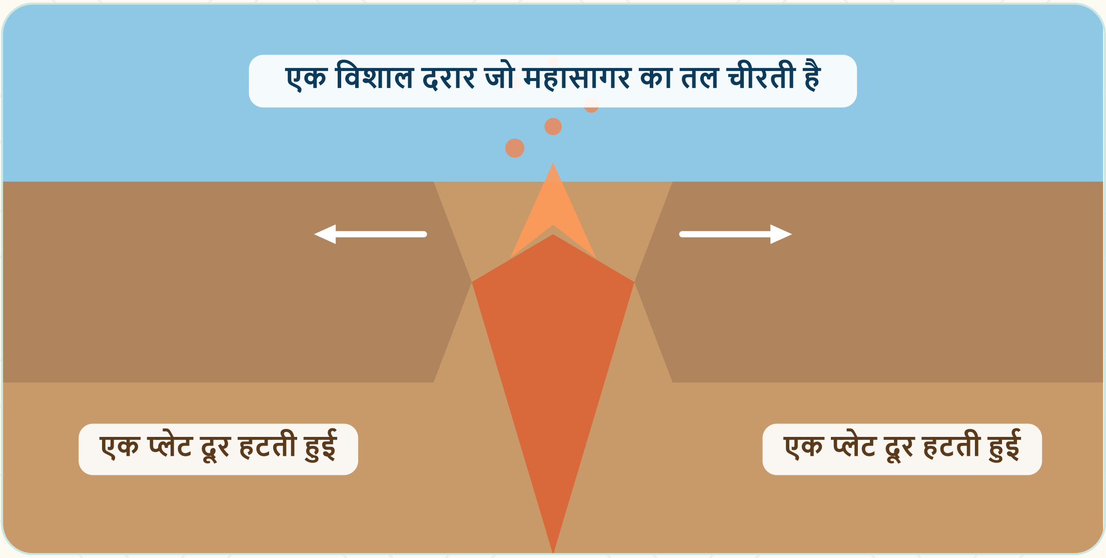

महासागरों के नीचे समूची धरती को लपेटती दरारों की एक श्रृंखला, 65,000 किलोमीटर लम्बी

सीधी-सादी बात में

धरती कोई ठोस, अटूट गोला नहीं है। उसकी पपड़ी **फटी हुई** है — उसमें विशाल दरारें हैं जो समूचे ग्रह के गिर्द लिपटी हैं, और जिनमें से गहराइयों का पिघला पत्थर ऊपर उठता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धरती को एक अकेला ठोस, जुड़ा हुआ पिंड समझा जाता था। समूची धरती को "दरारों वाली" — यानी फटी हुई — कहने का उस समय किसी के अनुभव में कोई अर्थ ही न था; जो दरारें दिखती थीं वे सूखी ज़मीन के चिटकने या घाटियों की तलहटी से अधिक कुछ न थीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इसे **मध्य-सागरीय कटक** कहते हैं: लगभग 65,000 किलोमीटर लम्बी ज्वालामुखी दरारों की एक श्रृंखला, जो समूचे ग्रह के गिर्द टेनिस गेंद की सिलाई की तरह घूमती है। उसमें से पिघला पदार्थ ऊपर उठता है और नई पपड़ी बनाता है। यह 1950 के दशक तक खोजी नहीं गई थी, और सोनार यंत्रों से खोजी गई।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ क़सम धरती का वर्णन **एक समग्र, अन्तर्निहित गुण** से करती है: "वह धरती जो फटती है" — जैसे किसी ऐसी जगह को "पेड़ों वाली" कहा जाता है जिसका स्वभाव ही पेड़ उगाना हो। वह किसी आकस्मिक दरार की बात नहीं करती, बल्कि दरार को स्वयं ग्रह का एक गुण बना देती है। और भूवैज्ञानिक तथ्य ठीक यही है: धरती एक ऐसा ग्रह है **जिसकी पपड़ी स्वभाव से ही टूटी हुई है**, और भूकम्पों, ज्वालामुखियों तथा महाद्वीपों की गति का मूल यही है।

समुद्रतल के ज्वालामुखी

65 वह सुलगाया हुआ समुद्र — पानी के नीचे की आग

> क़सम है उस पर्वत की, और एक लिखी हुई किताब की ... और उस सुलगाए हुए समुद्र की।
>
> **सूरह अत-तूर — आयतें 1-6**

धरती की 80% से अधिक ज्वालामुखी सक्रियता समुद्रों की सतह के नीचे होती है

सीधी-सादी बात में

समुद्र के नीचे आग जल रही है! महासागरों के तल पर ज्वालामुखी और छिद्र हैं जो चार सौ डिग्री का पानी उगलते हैं। तो समुद्र **सुलगाया हुआ** है — नीचे से आग दिया हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पानी और आग ऐसे विपरीत हैं जो मिल ही नहीं सकते — यह हर मनुष्य के लिए स्वतःसिद्ध है। समुद्र तो ठंडक और बुझाने का ही प्रतीक है। समुद्र को "सुलगाया हुआ" कहना सुनने वालों को एक ऐसी अस्पष्ट अभिव्यक्ति लगती थी जिसका वास्तविकता में कोई समकक्ष ही न हो।

आज विज्ञान क्या कहता है?

महासागरों के नीचे एक विशाल ज्वालामुखी शृंखला दौड़ती है, और धरती का 80% से अधिक ज्वालामुखी उद्गार पानी के नीचे होता है। 1977 में **तापजलीय छिद्र** खोजे गए, जो 400 डिग्री से ऊपर का पानी उगलते हैं जो तीव्र दबाव के कारण उबलता नहीं। और इन आगों के चारों ओर एक पूरा पारितंत्र है जो सूरज की रोशनी पर बिलकुल निर्भर नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अरबी क्रिया का अर्थ है **भट्ठी को धौंकना और उसे आग से भर देना** — और इसी जड़ से आया है "और जब समुद्र भड़का दिए जाएँगे"। वर्णन सुलगाने के बारे में स्पष्ट है, भरने या बहने के बारे में नहीं। और सुलगाए हुए समुद्र की क़सम तूर पर्वत की क़सम और बैतुल-मामूर की क़सम के बीच आई है — यानी वास्तविक, मौजूद चीज़ों के बीच। तो वह एक उपस्थित सच्चाई की क़सम खा रही है, जिसे मनुष्य ने 1,350 वर्ष बाद उघाड़ा।

एक पूरी हुई भविष्यवाणी

66 निस्सन्देह हम मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिए तुम्हें काफ़ी हैं

> निस्सन्देह हम मज़ाक़ उड़ाने वालों के मुक़ाबले में तुम्हें काफ़ी हैं — वे जो अल्लाह के साथ कोई और पूज्य ठहराते हैं। तो वे शीघ्र ही जान लेंगे।
>
> **सूरह अल-हिज्र — आयतें 95-96**

मक्का में मज़ाक़ के सरग़ना एक के बाद एक थोड़े ही समय में मर मिटे

सीधी-सादी बात में

मक्का में कुछ जाने-माने लोग थे जो नबी ﷺ का मज़ाक़ उड़ाने में सबसे आगे थे और उन्हें सताते थे। फिर एक आयत आई जिसने कहा: **हम उनके मुक़ाबले में तुम्हें काफ़ी हैं**। उसके थोड़े ही समय बाद वे सब मर मिटे, हर एक किसी अलग कारण से।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये क़ुरैश के सरदारों में से थे, हैसियत और दौलत वाले, अपनी शक्ति और प्रभाव के चरम पर। और नबी ﷺ तथा उनके साथी अपनी सबसे कमज़ोर हालत में थे: घिरे हुए और सताए हुए, न कोई सेना न कोई पनाह। उनकी हानि रोकने का कोई मानवीय साधन ही न था, उन्हें मिटा देने की तो बात ही दूर।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सीरत और इतिहास की किताबें — जिनमें सबसे पुरानी इब्न हिशाम की रिवायत में इब्न इसहाक़ की सीरत है — दर्ज करती हैं कि मज़ाक़ के सरग़ना पाँच थे, और वे सब हिजरत से पहले या उसके आस-पास थोड़े ही समय के भीतर मर मिटे, और वह भी ऐसे भिन्न-भिन्न कारणों से जिनमें कोई समानता नहीं: बीमारी, महामारी, एक दुर्घटना, एक चुभा हुआ काँटा, एक घाव जिसमें सड़न पड़ गई। उनमें से कोई भी उसके बाद इस दावत का विरोध करने बचा नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

पाठ में **एक गारंटी** है, केवल कोई दुआ या आशा नहीं। और गारंटी एक ऐसा वचन है जो टूट सकता है, और टूटते ही देने वाले को उसके विरोधियों के सामने तुरन्त नंगा कर देता है। यदि उनमें से एक भी वर्षों तक सताता और मज़ाक़ उड़ाता जीवित रह जाता, तो आयत उनके पक्ष में नहीं, उनके विरुद्ध एक दलील बन जाती। और इससे अधिक महत्वपूर्ण: यह ऐसा वादा है जो **नगर के सबसे कमज़ोर की ओर से सबसे ताक़तवर लोगों के विरुद्ध** किया गया — और यह नमूना पूरे क़ुरआन में दोहराया जाता है: "यह जत्था शीघ्र ही हार जाएगा और पीठ फेरकर भागेगा" बद्र से वर्षों पहले मक्का में उतरा, और नबी ﷺ ने उसे बद्र के दिन पढ़ा, और वैसा ही हुआ।

67 आकाश यूँ लपेटा जाएगा जैसे काग़ज़ लपेटा जाता है

> जिस दिन हम आकाश को यूँ लपेट देंगे जैसे लिखे हुए काग़ज़ों का पुलिन्दा लपेटा जाता है। जैसे हमने पहली रचना शुरू की थी, वैसे ही उसे दोहराएँगे।
>
> **सूरह अल-अंबिया — आयत 104**

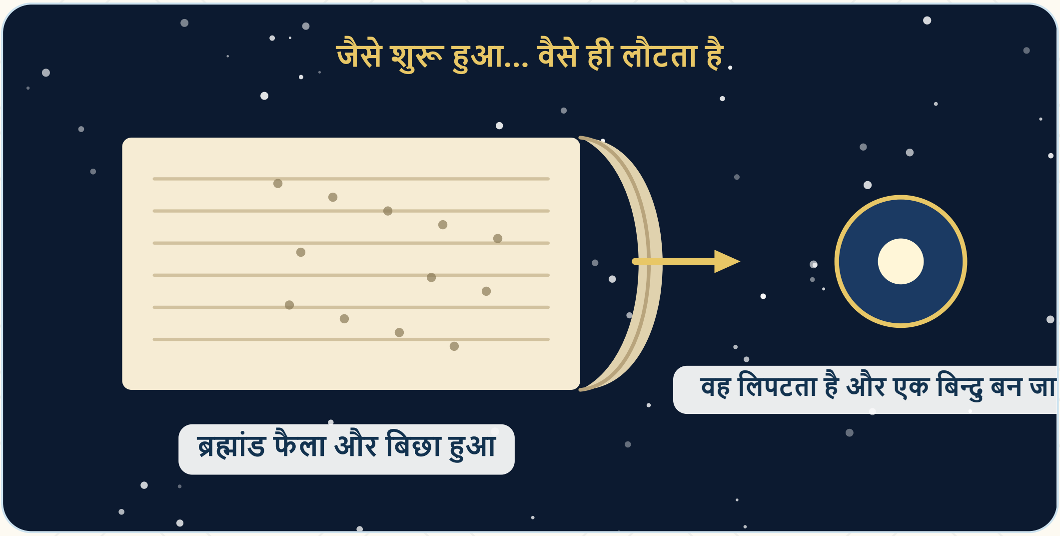

ब्रह्मांड एक बिन्दु से फैला... और एक बिन्दु में ही लिपट जाएगा

सीधी-सादी बात में

आयत कहती है कि ब्रह्मांड का अन्त एक **लिपटना** होगा — एक सिकुड़ना और लपेटा जाना, जैसे आप काग़ज़ की चादर लपेटते हैं। फिर वह एक चौंकाने वाली बात कहती है: यह अन्त ठीक **शुरुआत जैसा** होगा।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क्षितिज पर ऐसा कोई प्रश्न ही न था कि "ब्रह्मांड का अन्त कैसे होता है?", क्योंकि लोगों के मन में ब्रह्मांड अनादि और अनन्त था, न कोई शुरुआत न कोई अन्त। और अन्त के रूप को शुरुआत के रूप से जोड़ देने के लिए तो कोई ढाँचा ही मौजूद न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सैद्धान्तिक भौतिकी में ब्रह्मांड के अन्त के सबसे प्रसिद्ध परिदृश्यों में **महासंकुचन** है: गुरुत्वाकर्षण फैलाव पर हावी हो जाता है, और ब्रह्मांड अपने ही ऊपर सिकुड़ता जाता है जब तक अपनी मूल अवस्था — अत्यधिक घनत्व के एक बिन्दु — पर न लौट आए। यानी **अन्त शुरुआत का दर्पण-प्रतिबिम्ब है**।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार यहाँ आयत के दूसरे आधे भाग में है: "जैसे हमने पहली रचना शुरू की थी, वैसे ही उसे दोहराएँगे।" यह वाक्य एक नियम रख देता है: **अन्त का रूप = शुरुआत का रूप**। और ऐसा करके वह हमें परोक्ष रूप से बता देता है कि ब्रह्मांड अपनी शुरुआत में **लिपटा हुआ** था — एक बिन्दु में सिकुड़ा हुआ — और महाविस्फोट प्रतिरूप ठीक यही कहता है। एक ही आयत ने शुरुआत और अन्त दोनों एक साथ दे दिए, और वह भी ऐसे समय में जब किसी के मन में ब्रह्मांड की न कोई शुरुआत थी न कोई अन्त।

68

पल्सर

वह तारा जो खटखटाता है और छेदता है

❖ क़सम है आकाश की और रात में आने वाले की — और तुम्हें क्या मालूम कि रात में आने वाला क्या है? — वह छेदने वाला तारा। ❖

सूरह अत-तारिक़ — आयतें 1-3

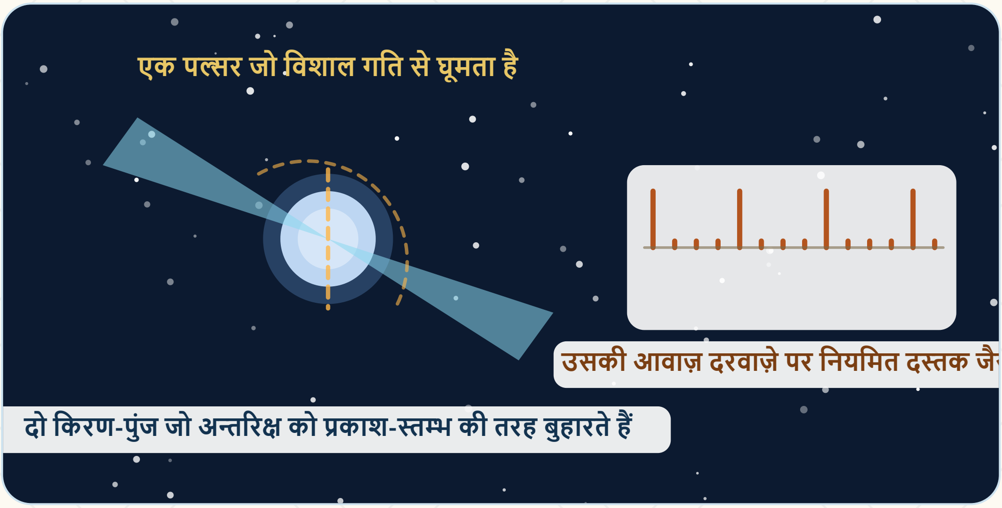

पल्सर नियमित स्पन्दन भेजता है, जैसे हथौड़े की चोटें जो कभी चूकतीं नहीं

सीधी-सादी बात में

कुछ तारे ऐसे संकेत भेजते हैं **जैसे दरवाज़े पर नियमित दस्तक**: खट... खट... खट... और वह भी मनुष्य की बनाई सबसे बारीक घड़ी से भी अधिक बारीकी के साथ। और क़ुरआन ने ऐसे तारे को "तारिक़" कहा — यानी वह जो खटखटाता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए तारा प्रकाश का एक चुप, निश्चल बिन्दु था। न उसकी कोई ध्वनि थी, न स्पन्दन, न भेदन। खटखटाने के शब्द को — जो एक दोहराई जाने वाली, आवाज़ करती चोट है — आकाश के किसी तारे से जोड़ देना उस युग के किसी सुनने वाले के लिए निरर्थक बात थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1967 में खगोलविद जॉसलिन बेल ने अन्तरिक्ष से ऐसे रेडियो संकेत पकड़े जो चौंकाने वाली नियमितता से दोहराए जा रहे थे — इतने कि दल ने पहले उन्हें बुद्धिमान प्राणियों के सन्देश समझा और उनका नाम LGM-1 रखा। वे **पल्सर** निकले: फटे हुए तारों के अवशेष, जो हर सेकंड दसियों बल्कि सैकड़ों बार घूमते हैं और दो किरण-पुंज छोड़ते हैं जो अन्तरिक्ष को प्रकाश-स्तम्भ की तरह बुहारते हैं। जब उनके संकेत ध्वनि में बदले गए तो वे ठीक-ठीक **एक नियमित खटखटाहट** थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दोनों शब्द मिलकर कोई सन्देह नहीं छोड़ते: "तारिक़" = वह जो दोहराई जाने वाली खटखटाहट की ध्वनि पैदा करे, और "छेदने वाला" = वह जो भेदकर आर-पार निकल जाए। और पल्सर शाब्दिक रूप से दोनों वर्णनों को एक कर देता है: उसके संकेत एक नियमित खटखटाहट हैं, और वे हज़ारों प्रकाश-वर्ष छेदते हैं और आकाशगंगा की धूल के आर-पार हम तक पहुँचते हैं। बल्कि स्वयं क़सम के बाद एक चुनौती-भरा प्रश्न आया: "और तुम्हें क्या मालूम कि रात में आने वाला क्या है?" — यानी यह ऐसी चीज़ है **जिसे जानने का तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं**। और ऐसा ही रहा, 1967 तक।

69 वह आकाश जो बुने हुए रास्तों वाला है

क़सम है उस आकाश की जो बुने हुए रास्तों वाला है।

सूरह अज़-ज़ारियात — आयत 7

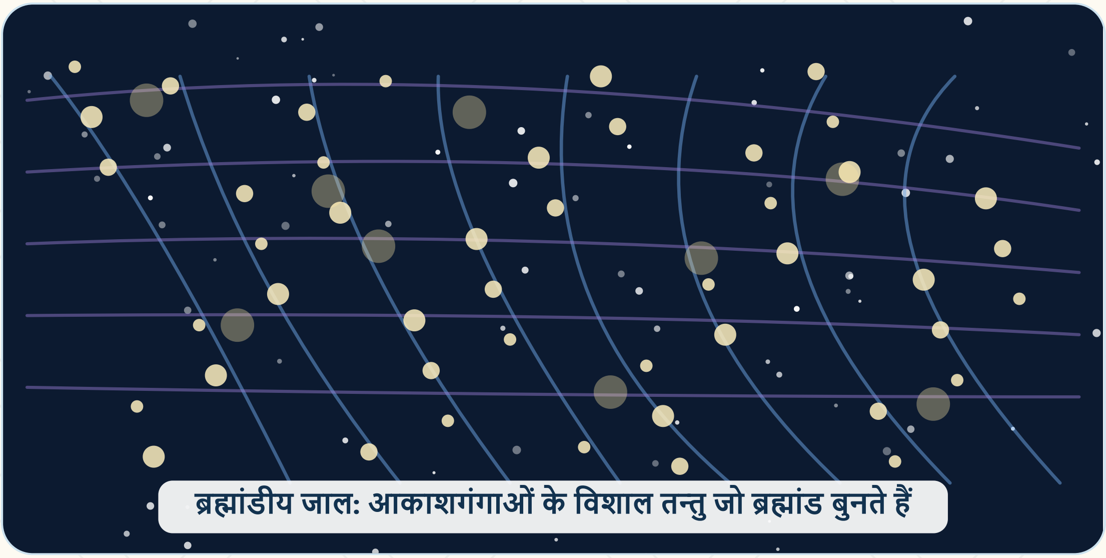

ब्रह्मांड का महान मानचित्र: बिखरी आकाशगंगाएँ नहीं, बल्कि तन्तुओं और गाँठों का बुना हुआ वस्त्र

सीधी-सादी बात में

यदि आप समूचे ब्रह्मांड को बहुत दूर से देखें, तो आपको बिखरे हुए तारे नहीं दिखेंगे। आपको **बुने हुए कपड़े, या धागों के जाल** जैसा कुछ दिखेगा: आकाशगंगाओं के लम्बे तन्तु और उनके बीच विशाल काले शून्य। और यहाँ आया अरबी शब्द **ऐसी कसी हुई बुनाई जिसमें रास्ते दौड़ते हों** का अर्थ देता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोगों के लिए आकाश एक चिकना गुम्बद था जिसमें प्रकाश के बिन्दु जड़े हों, न कोई बनावट, न कोई रूप, न कोई तरतीब। यह विचार कि ब्रह्मांड का कोई समग्र "आकार" भी होता है — यह तो मेज़ पर था ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पिछले दशकों में वेधशालाओं ने लाखों आकाशगंगाओं के त्रिविम मानचित्र बनाए (SDSS परियोजना और 2dF सर्वेक्षण), और परिणाम चौंकाने वाला था: आकाशगंगाएँ यूँ ही बेतरतीब नहीं बँटी हैं, बल्कि **ब्रह्मांडीय जाल** के रूप में सजी हैं — आकाशगंगाओं के विशाल तन्तु और दीवारें, जो विराट ख़ाली शून्यों को घेरे हुए हैं। और जो चित्र बनता है वह चौंका देने वाली हद तक बुने हुए वस्त्र से मिलता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यहाँ आया अरबी बहुवचन शब्दकोशों में किसी कसकर बुनी हुई चीज़ में गुँथे हुए रास्तों का अर्थ देता है, जैसे पानी की लहरें या रेत की सिलवटें। और आज इस्तेमाल होने वाला वैज्ञानिक शब्द ठीक यही है: **फ़िलामेंट्स (तन्तु)**। किसी अरबी शब्द का किसी आधुनिक वैज्ञानिक शब्द से इतने दुर्लभ और विशिष्ट अर्थ में, चौदह सदी बाद, मेल खा जाना — ऐसा संयोग से नहीं होता।

कृष्ण विवर

70 छिप जाने वाले, दौड़ने वाले, बुहार ले जाने वाले

तो मैं क़सम खाता हूँ उन छिप जाने वाले तारों की — जो दौड़ते हैं और बुहार ले जाते हैं।

सूरह अत-तकवीर — आयतें 15-16

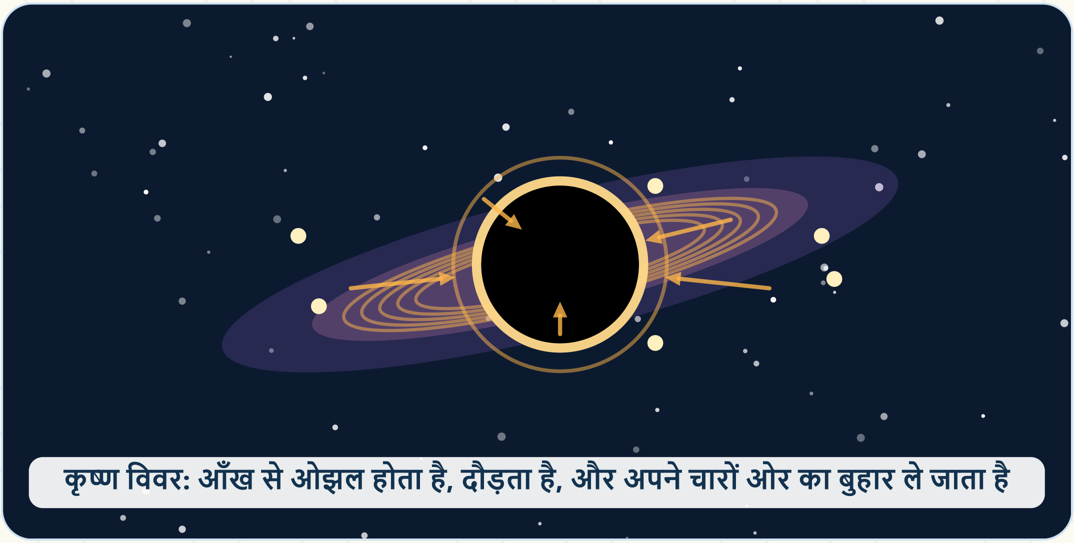

कृष्ण विवर अपने चारों ओर की गैस और तारों को किसी ब्रह्मांडीय झाड़ू की तरह निगल जाता है

सीधी-सादी बात में

अन्तरिक्ष में ऐसे पिंड हैं जिनमें तीन गुण हैं: वे **ओझल** हो जाते हैं और देखे नहीं जा सकते, वे विशाल गति से **दौड़ते** हैं, और वे अपने चारों ओर की चीज़ों को **बुहारकर** निगल जाते हैं। और अल्लाह यहाँ ठीक इन्हीं तीन गुणों की क़सम खा रहा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

दुनिया में कहीं भी किसी **अदृश्य** आकाशीय पिंड की कोई धारणा न थी। पिंड या तो दिखता था और इसलिए मौजूद था, या नहीं दिखता था और इसलिए मौजूद ही नहीं था। यह कि आकाश में कोई विराट चीज़ हो जिसे कोई आँख कभी न देखे, और जो अपने चारों ओर की चीज़ें निगल जाए — यह किसी ने कल्पना ही नहीं की।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कृष्ण विवर: इतने विशाल घनत्व वाले पिंड कि प्रकाश तक उनसे बच नहीं निकलता, इसलिए वे स्वभाव से ही **पूरी तरह अदृश्य** हैं। वे अपनी आकाशगंगाओं के भीतर घूमते और चलते हैं, और गैस, धूल तथा तारों को अपनी ओर खींचकर निगल जाते हैं। पहले कृष्ण विवर का सीधा चित्र 2019 में लिया गया (आकाशगंगा M87 में), और उनके अस्तित्व को सिद्ध करने वाले काम को 2020 में नोबेल पुरस्कार मिला।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीनों शब्द चौंकाने वाली हद तक सूक्ष्म हैं: पहली जड़ का अर्थ है **ओझल होना और सिकुड़ना**; दूसरी का अर्थ है **दौड़ना, गति में होना**; तीसरी का अर्थ है **चारों ओर की चीज़ें समेटकर निगल जाना** (इसी से अरबी में झाड़ू का शब्द बना है, और उस माँद का भी जिसमें हिरण ओझल हो जाता है)। दो आयतों में तीन गुण, और वे सब एक ही ऐसी चीज़ पर लागू होते हैं जो बीसवीं सदी तक ज्ञात ही नहीं थी। और ध्यान रहे कि क़ुरआन में क़सम किसी महान चीज़ के सिवा कभी नहीं खाई जाती।

71 धरती अपने बोझ बाहर निकाल देती है

जब धरती अपने भूकम्प से हिला दी जाएगी, और धरती अपने बोझ बाहर निकाल देगी।

सूरह अज़-ज़लज़लह — आयतें 1-2

भूकम्प और प्लेटों की गति ने ही धातुओं और तेल को हमारी पहुँच तक उठाया

सीधी-सादी बात में

आज हम जो सोना, धातुएँ और तेल निकालते हैं वे सब धरती के भीतर गहराई में दबे हुए थे। जिस चीज़ ने उन्हें सतह के पास उठाया वह लाखों वर्षों की **भूकम्प और धरती की हलचल** है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भूकम्प विशुद्ध आपदा था: ढहना, धँसना और मौत। किसी ने उसे किसी लाभ से या किसी भलाई के बाहर आने से नहीं जोड़ा। और "उसके बोझ" शब्द का उसके भीतर के ख़ज़ानों के अर्थ में सुनने वालों के लिए कोई स्पष्ट मतलब न था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

दुनिया की अधिकतर आर्थिक खदानें **विवर्तनिक प्लेटों की सीमाओं** पर और भूकम्पीय तथा ज्वालामुखीय सक्रियता के क्षेत्रों में पड़ती हैं। प्लेटों की गति ही धातु-समृद्ध चट्टान को गहराइयों से ऊपर पपड़ी में धकेलती है, और गर्म तरल ही सोने और ताँबे को शिराओं में केन्द्रित करते हैं। इस सक्रियता के बिना धरती के सारे ख़ज़ाने सदा के लिए हमारी पहुँच से बाहर रह जाते।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

आयत दो ऐसी घटनाओं को जोड़ती है जिन्हें साधारण बुद्धि नहीं जोड़ती: हिलना → बोझों का बाहर निकलना। और खनन-विज्ञान ठीक यही सिद्ध करता है। और "बोझ" शब्द चौंकाने वाली हद तक सूक्ष्म है: क़ीमती धातुएँ — सोना, प्लैटिनम, यूरेनियम — **तत्वों में सबसे घने** हैं, और अपने स्वभाव से ही धरती के केन्द्र की ओर धँसती हैं, इसलिए वे तभी ऊपर आती हैं जब कोई शक्ति उन्हें ऊपर धकेले। उन्हें ठीक उसी भौतिक गुण से पुकारा गया जो उन्हें अलग करता है।

विषाणु विज्ञान

72 एक मच्छर, और जो उससे आगे है

> निस्सन्देह अल्लाह इस बात से नहीं शरमाता कि कोई मिसाल दे — एक मच्छर की, या उससे आगे जो कुछ है उसकी।
>
> **सूरह अल-बक़रह — आयत 26**

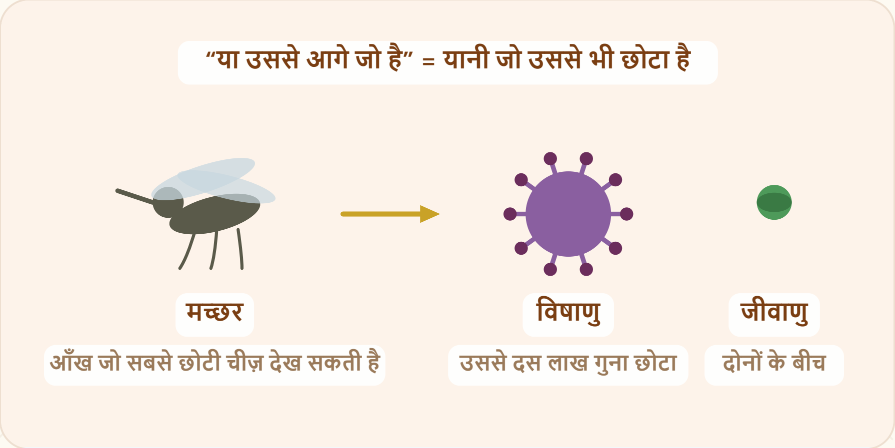

जीवाणुओं और विषाणुओं के आगे नापा जाए तो मच्छर एक दैत्य है

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने मिसाल के तौर पर वह सबसे छोटी चीज़ ली जिसे लोग देख सकते हैं — मच्छर — और फिर कहा: **"या उससे आगे जो कुछ है"**। और अरबी में "आगे" शब्द का अर्थ **छोटेपन में और आगे बढ़ जाना** भी हो सकता है: यानी और जो उससे भी छोटा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मच्छर सम्भव छोटेपन की आख़िरी हद था: वह सबसे छोटा जीव जिसे आँख देख सके और जिसके अंग वह अलग-अलग पहचान सके। उससे छोटा जीवन कल्पना से बाहर था, क्योंकि जो देखा न जा सके उसका अस्तित्व जाना ही नहीं जा सकता। और यही हाल सूक्ष्मदर्शी के आविष्कार तक बना रहा।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मच्छर अपेक्षाकृत एक विशाल जीव है: लगभग 6 मिलीमीटर लम्बा। अकेले उसके शरीर में **लाखों जीवाणु** बसते हैं, और उस पर ऐसे विषाणु हैं जो जीवाणुओं से सैकड़ों गुना छोटे हैं। और एक अकेले मच्छर की बनावट अत्यन्त जटिल पाई गई है: सैकड़ों लेंसों वाली एक संयुक्त आँख, एक सूँड़ जिसमें छेदने, चूसने और रक्त-स्कन्दनरोधी पदार्थ भरने के छह अलग-अलग औज़ार हैं, और वे पंख जो हर सेकंड 600 बार फड़फड़ाते हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सन्दर्भ ही मामला तय कर देता है। आयत इस सिलसिले में आई है कि अल्लाह **छोटी चीज़ों** से मिसाल देने में नहीं शरमाता, और यह उनका जवाब है जिन्होंने मक्खी और मकड़ी के ज़िक्र का मज़ाक़ उड़ाया था। तो सन्दर्भ से मेल खाता पठन यही है: और न उससे भी **छोटेपन में आगे** जो कुछ है उससे। और यह प्रयोग शुद्ध अरबी है, जैसे कहा जाता है "यह आदमी अज्ञान में उससे भी आगे है"। तो पाठ परोक्ष रूप से उन जीवों के अस्तित्व की पुष्टि करता है जो उस सबसे छोटी चीज़ से भी छोटे हैं जिसे आँख देख सकती है — और वह भी ऐसे समय में जब मच्छर ही छोटेपन के मानव-ज्ञान की आख़िरी हद था।

भूविज्ञान

73 लूत की क़ौम — उसका ऊपरी हिस्सा नीचे कर दिया गया

> तो जब हमारा हुक्म आ पहुँचा, हमने उसके ऊपरी हिस्से को उसका निचला हिस्सा कर दिया,
> और उस पर तह-पर-तह पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए।
>
> सूरह हूद — आयत 82

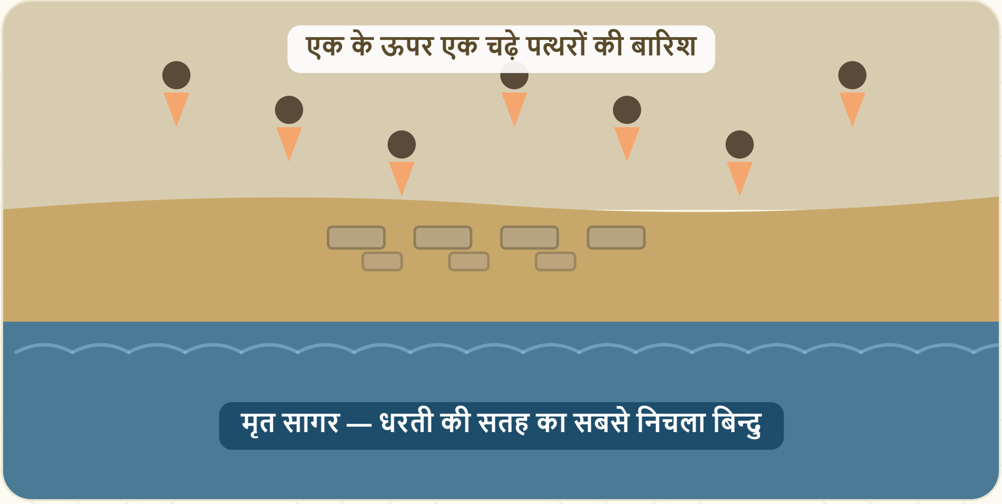

एक ऐसा क्षेत्र जो धँसा और उलट गया, फिर अत्यन्त खारे पानी में डूब गया

सीधी-सादी बात में

आयत कहती है कि लूत की क़ौम का नगर **उलट-पलट दिया गया**, और फिर उस पर एक के ऊपर एक कसे हुए पत्थर गिरे। और भूविज्ञान बताता है कि ख़ास तौर पर उसी क्षेत्र में ऐसा कैसे होता है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

धँसने और उलट जाने को विशुद्ध रूप से अदृश्य दंड समझा जाता था, जिसकी कोई प्राकृतिक क्रियाविधि न हो। यह पता न था कि यह क्षेत्र एक विशाल भूवैज्ञानिक भ्रंश पर बसा है, और न यह कि उसके नीचे गैसें, डामर और गन्धक भरे हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मृत सागर का क्षेत्र **मृत सागर रूपान्तर भ्रंश** पर पड़ता है — जो दुनिया के सबसे सक्रिय भूकम्पीय भ्रंशों में है — और वह इस ग्रह की सूखी ज़मीन का सबसे निचला टुकड़ा है। यह इलाक़ा प्राकृतिक डामर, गन्धक और ज्वलनशील गैसों से समृद्ध है। शोधकर्ताओं ने सुझाया है कि किसी प्रचंड भूकम्प ने **मिट्टी का द्रवीकरण और धँसाव** तथा उसकी परतों का उलट जाना पैदा किया, और साथ ही जलता हुआ पदार्थ उछला जो उसी क्षेत्र पर वापस गिरा। जॉर्डन के तल्ल अल-हम्माम में अचानक विनाश की एक परत मिली जिसमें विशाल तापमान पर पिघला हुआ काँच था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

तीन शब्द पूरा वर्णन उठाए हुए हैं। "**हमने उसके ऊपरी हिस्से को उसका निचला हिस्सा कर दिया**": परतों का पूर्ण ऊर्ध्वाधर उलटाव, केवल ढा देना नहीं — और धँसाव तथा उलटाव का भूवैज्ञानिक वर्णन यही है। "**पकी हुई मिट्टी के पत्थर**": एक ऐसा शब्द जो पत्थर और कड़ी हुई मिट्टी को जोड़ देता है। और "**तह-पर-तह**": एक के ऊपर एक परतों में कसे हुए — उस क्षेत्र की परतदार अवसादी चट्टान का एक सटीक वर्णन। पाठ एक सुसंगत प्राकृतिक क्रियाविधि का वर्णन करता है, कोई धुँधली कल्पना-चित्र नहीं।

पुरातत्व

74 इरम, स्तम्भों वाली — वह दबी हुई नगरी

क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या किया — इरम, स्तम्भों वाली, जिसके जैसी कोई नगरी देशों में कभी बनाई ही नहीं गई थी?

सूरह अल-फ़ज्र — आयतें 6-8

हज़ारों वर्ष बाद रेत के टीलों के नीचे से स्तम्भ और एक क़िला निकल आए

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने **स्तम्भों** वाली एक महान नगरी का ज़िक्र किया जिसके जैसी कभी बनी ही नहीं थी, और कहा कि वह मिट गई। लोग उसे किंवदन्ती गिनते रहे... यहाँ तक कि उपग्रह रडार ने रेत के नीचे से उसके अवशेष उघाड़ दिए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रुबुअ ख़ाली में अन्तहीन रेत के सिवा कुछ न था। पश्चिमी इतिहासकार "आद" और "इरम" को अरबों की किंवदन्तियों में गिनते थे, क्योंकि उनका न कोई निशान था न दूसरे स्रोतों में कोई ज़िक्र। और रेगिस्तान अपनी सतह से कोई भेद दिखाई नहीं देने देता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1992 में निकोलस क्लैप के नेतृत्व में एक दल ने नासा के अन्तरिक्ष यान के रडार-चित्र इस्तेमाल किए, और रेत के नीचे **प्राचीन क़ाफ़िला-मार्ग दिखाई दिए जो एक ही बिन्दु पर आ मिलते थे** — ओमान के ज़ुफ़ार प्रान्त के **शिस्र** में। खुदाई से एक अष्टकोणीय क़िला निकला जिसमें **ऊँची मीनारें** थीं, और एक ऐसी नगरी के अवशेष जो अपने नीचे के चूना-पत्थर के गड्ढे में धँस गई थी। दुनिया के अख़बारों ने इसकी घोषणा की: "उबार: रेतों का अटलांटिस"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआनी वर्णन ने उस नगरी को एक विशेष गुण दिया: "**स्तम्भों वाली**" — यानी खम्भे या ऊँची मीनारें। यह किसी भी नगरी का कोई आम गुण नहीं है; अरब की बस्तियाँ मिट्टी के घरों और तम्बुओं की थीं। फिर उसने जोड़ा: "**जिसके जैसी कोई नगरी देशों में कभी बनाई ही नहीं गई थी**" — यानी उसकी स्थापत्य-अनन्यता। और मीनारें सचमुच निकल आईं। और सबसे महत्वपूर्ण: क़ुरआन ने उसकी बात **वास्तविक इतिहास** के रूप में की, किंवदन्ती के रूप में नहीं, और वह भी ऐसे समय में जब किसी के पास उसका कोई प्रमाण न था — और यह चौदह सदियों तक उस पर एक आरोप बना रहा, जब तक रडार न आया।

मिस्रविद्या

75 हामान — एक नाम जो पत्थर से निकला

❖ और फ़िरऔन ने कहा: ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊँची मीनार बना, शायद मैं रास्तों तक पहुँच जाऊँ। ❖

सूरह ग़ाफ़िर — आयत 36

नाम उस चित्रलिपि में लिखा है जो 1822 से पहले पढ़ी ही नहीं गई

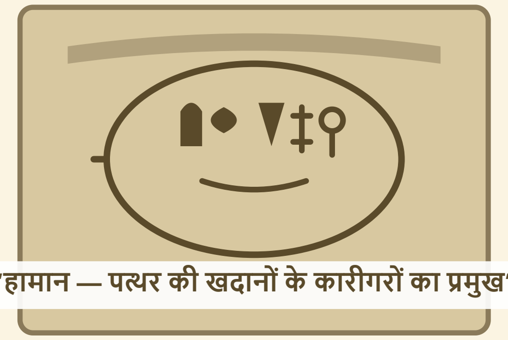

"हामान — पत्थर की खदानों के कारीगरों का प्रमुख"

एक प्राचीन मिस्री शिलालेख — वियना का हॉफ़ संग्रहालय

हामान का नाम और निर्माण में उसकी भूमिका लिए हुए एक चित्रलिपि कार्तूश

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने **हामान** नाम के एक व्यक्ति का ज़िक्र किया जो फ़िरऔन के साथ **निर्माण** का काम करता था। एक हज़ार वर्ष से भी अधिक बाद विद्वानों ने चित्रलिपि पढ़नी सीखी और यही नाम पाया — और उसका पद भी: पत्थर के कारीगरों का प्रमुख।

उस समय लोग क्या मानते थे?

चित्रलिपि भाषा चौथी सदी ईस्वी के आस-पास पूरी तरह मर गई, और धरती पर ऐसा कोई न बचा जो उसे पढ़ सके। प्राचीन मिस्र के अधिकारियों के नाम पूर्ण अँधेरे में चले गए। आलोचकों ने क़ुरआन पर गड्डमड्ड करने का आरोप लगाया और कहा कि हामान एस्तेर की पुस्तक की किसी बाबुली कहानी से उधार लिया गया नाम है, और मिस्र में उसका ज़िक्र एक ऐतिहासिक भूल है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

1822 में शांपोलिओं ने रोज़ेटा शिला की मदद से चित्रलिपि पढ़ ली। वियना के हॉफ़ संग्रहालय द्वारा प्रकाशित प्राचीन मिस्री नामों की सूची में **हामान** नाम एक उत्कीर्ण पट्टिका पर आता है, और उसके साथ यह उपाधि जुड़ी है: **"पत्थर की खदानों के कारीगरों का प्रमुख"**। यानी वह व्यक्ति एक वास्तविक मिस्री था, और उसका पद विशेष रूप से पत्थर के निर्माण से जुड़ा था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

सोचिए कि पाठ गढ़ने वाला किस गड्ढे में गिर सकता था। एक ऐसी सभ्यता के किसी गौण व्यक्ति का अजीब-सा नाम जिसकी भाषा मर चुकी थी, जो क़ुरआन में दस बार आया है और हर बार फ़िरऔन तथा मिस्र के साथ जुड़ा हुआ। और फिर उसी से, तमाम कामों में से, **एक मीनार बनाने** को कहा जाता है — और शिलालेख के अनुसार उस व्यक्ति का असली पेशा यही था। किसी जालसाज़ का एक भुला दिए गए नाम और उसके काम, दोनों पर एक साथ निशाना बैठा देना — और वह भी ऐसी भाषा में जिसे धरती पर कोई पढ़ ही न सकता था — कोई उचित सम्भावना नहीं। सदियों तक क़ुरआन पर लगा आरोप उसी के पक्ष में एक गवाही बन गया।